राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

मई - 2024

मूल्य ₹ 50/-

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

कीस मानवतावादी एवार्ड :2021
विश्वविख्यात उद्योगपति
रतन टाटा को...

॥ अक्षय तृतीया ॥
२१ दिवसीय चंदनयात्रा...

LOK SABHA ELECTIONS 2024

जल है।
तो कल है।
पृथ्वी के सतह पर दो-तिहई
जल है, लेकिन 0.002% ही
ताजा जल है पृथ्वी पर।
ताजा जल
अपशिष्ट
ना करें

Save Water !

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

•वर्ष : 9 •अंक: 02 •मुंबई •मई -2024

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला,
संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर,शैफाली,

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

मैं नकली हूँ लेकिन तुम बेअकल हो : उद्धव ठाकरे	05
'अरे पट्ठया, तू आमदार कैसा होता, वही देखता है.., अजित पवार...	06
महिलाओं की सीजेरियन डिलिवरी और निजी अस्पतालों की मुनाफाखोरी	08
मायावती भाजपा का खेल बिगाड़ रही...	12
यूपी में भाजपा और सपा की अग्नि परीक्षा	14
अक्षय तृतीया को युगादि तृतीया भी कहते हैं...	16
देश-दुनिया	18
पकवान	20
राशिफल	24
श्रीकृष्ण की कर्मभूमि...	26
सिनेमा	28
कीस मानवतावादी एवार्ड :२०२१ विश्वविख्यात उद्योगपति रतन टाटा को...	30
ओडिशा हलचल	32
विविधा	34
गहरी जड़ें	40
बेनाम रिश्ता (कथा सागर)	44
बैंगन की खेती...	56

सुविचारः

संकोच युवाओं के लिए एक आभूषण है, लेकिन बड़ी उम्र के लोगों के लिए धिक्कार.

संपादकीय

लोकसभा चुनाव २०२४

लोकसभा चुनाव २०२४ में सभी राजनैतिक दलों ने मतदान के लि ए अपनी सारी ताकत झोंक दी है। वर्तमान राजनैतिक परिदृष्य में सभी दलों के स्टार प्रचारक अपनी विचारधारा के प्रचार में जुटे हैं। २०२४ लोकसभा चुनावों में सबसे अधिक स्टार प्रचारक भारतीय जनता पार्टी के पास हैं जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं, 'अबकी बार ४०० पार के नारे' के साथ संपूर्ण भारत में आक्रामक प्रचार में जुटे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के बाद जो स्टार प्रचारक सबसे अधिक चर्चा में है वह हैं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ न केवल उत्तर प्रदेश में ताबड़तोड़ रैलियां कर रहे हैं अपितु दूसरे राज्यों में भी उसी तरह प्रचार कर रहे हैं। अब तक २४ दिनों में वो सात राज्यो में २५ रैलियां व दो रोड शो कर चुके हैं। योगी जी की मांग सबसे अधिक उन सीटों व क्षेत्रों में है जहां राजपूत व क्षत्रिय मतदाता अधिक हैं तथा जहां ध्रुवीकरण की संभावना अधिक है वह उन स्थानों पर भी रैलियां कर रहे हे जो हिंसा से प्रभावित रहे हैं। दूसरे राज्यों में योगी जी की लोकप्रियता बुलडोजर बाबा के रूप में भी हो रही है।

योगी जी अब तक पश्चिम बंगाल, राजस्थान, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ जम्मू-कश्मीर और बिहार में रैलियां कर चुके हैं। बंगाल में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चार रैलियां की हैं जो मुस्लिम बहुल और हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों में हुई है। योगी जी ने आसनसोल ल में भी रैली की जहां भाजपा दो बार जीत चुकी है। बंगाल एक ऐसा राज्य है जहां के कटटरपंथी मौलाना मुख्मयंत्री योगी जी को देख लेने की धमकी तक दे चुके हैं किंतु वह बंगाल जाकर और अधिक आक्रामक होकर हिंदुत्व का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। वह अपनी जनसभा में बंगाल में रामनवमी पर हुई हिंसा की याद दिलाते हुए कहते है कि 'अगर कोई यूपी में रामनवमी के अवसर पर दंगा करता है तो उसे उल्टा लटकाकर ठीक कर दिया जाता है'। उन्होंने बंगाल में योगी जी ने साफ सन्देश दिया कि मोदी जी की तीसरी बार सरकार आने पर रामनवमी और वैशाखी के दंगाइयों और सन्देशखाली के जिम्मेदार गुंडो को सजा दिल ाने का काम करेंगे।

छत्तीसगढ़ में योगी जी ने तीन रैलियां की हैं जिसमें दो सीटें कांग्रेस व एक भाजपा की रही है। मुख्यमंत्री योगी ने उत्तराखंड की ५ लोकसभा सीटों के लिए ४ रैलियां की और उसमें उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश हो या उत्तराखंड या देश को कोई भी कोना जो कानून नहीं मानेगा उसका राम नाम सत्य ही होगा। कुछ लोगों को लगता था कि अपराध करेंगे तो जेल चले जाएंगे लेकिन जेल जाने से पहले ही हम जहन्नुम में पहुंचा देते हैं। राजस्थान में भी उन्होंने चार रैलियां व २ रोड शो किये जिनमें भारी भीड़ आयी। राजस्थान में उन्होंने देश की सुरक्षा का मुददा जोर शोर से उठाया और कहा कि कांग्रेस देश की सुरक्षा व आस्था के साथ खिलवाड़ कर रही है। योगी का कहना है कि आज देश में कहीं पर पटाखा भी फटता है तो सबसे पहले पाकिस्तान सफाई देता है कि हमारा उसमें कोई हाथ नहीं है क्योंकि उसे पता है कि उसका क्या परिणाम होगा क्योकि यह बदला हुआ भारत है। राजस्थान में योगी ने राजपूत ,जाट व मीणा समाज के बाहुल्य क्षेत्रों तथा जहां पर हिंदू-मुस्लिम ध्रुवीकरण भी आसानी से हो जाता है वहां पर रैलियां कर समां बांधा है। इसी प्रकार महाराष्ट्र में भी वह ६ रैलियां कर चुके हैं। अभी तक बिहार में केवल दो रैलियां ही हो पाई है किंतु वहां पर अभी उनकी और रैलियां प्रस्तावित हैं।

उत्तर प्रदेश की रैलियों में योगी जी आक्रामकता के साथ सपा, बसपा व कांग्रेस पर हमलावर हो रहे है। वह कांग्रेस को उसके घोषणापत्र के छिपे हुए हिंदू विरोधी एजेंडे के आधार पर बेनकाब कर रहे हैं। योगी जी स्पष्ट रूप से हमला करते हुए कह रहे हैं कि अगर कांग्रेस व इंडी गठबंधन के लोग सत्ता में वापस आये तो यह लोग देश में शरिया ल ागू कर देंगे और हमारे गोवंश को कसाइयो के हाथों में दे देंगे। योगी जी अपनी हर जनसभा में जनता को याद दिला रहे हैं कि कांग्रेस के कारण ही अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण लटका रहा। कांग्रेस ने ही भगवान राम को कोर्ट में काल्पनिक बताया था। संपत्ति के विभाजन, मंगल सूत्र और विरासत टैक्स का मुद्दा भी वे अपनी रैलि यों में उठा रहे हैं। योगी जी बेटियों की सुरक्षा व कानून व्यवस्था पर कोई समझौता नहीं करने वाले हैं और वह बार-बार कहते हैं कि अगर कोई बहिन-बेटियो की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करेगा तो उसका राम नाम सत्य ही होगा। योगी जी कह रहे हैं कि अयोध्या में प्रभु श्रीराम का काम हो गया अब मथुरा की गलियां भी श्रीकृष्ण की बांसुरी सुनने के लिए बैचेन हो रही हैं। अब वह काम भी जल्द ही पूरा हो जाएगा। योगी जी का कहना है कि कांग्रेस पहले तो केवल दिशाहीन थी किंतु अब तो नेतृत्वविहीन भी हो चुकी है। योगी जी कहते हैं कि कांग्रेस को वोट देने से कोई बड़ा पाप नहीं हो सकता।

दूसरे राज्यों में जाने पर योगी जी का भव्य स्वागत किया जाता है। इसमें कोई दो राय नही कि उत्तर प्रदेश में अयोध्या में दिव्य, भव्य एवं नव्य राम मंदिर बन जाने के बाद उनकी लोकपियता में भारी वृद्धि हुई है तथा उत्तर प्रदेश में धार्मिक पर्यटन का व्यापक विस्तार व विकास हो रहा है। अभी लखनऊ में आयोजित आईपीएल टूर्नामेट के मुकाबले के लिए पधारे क्रिकेट खिलाड़ी पीटरसन से लखनऊ एयरपोर्ट की तारीफ करते हुए योगी जी की प्रशंसा की और उसे सोशल मीडिया पर साझा करते हुए लिखा कि उत्तर प्रदेश में अविश्वसनीय विकास व अच्छा काम हो रहा है। योगी जी के नेतृत्व में कानून का राज है, अपराधियों का मनोबल गिरा हुआ है और विकास के लिए निवेश का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। ■

मैं नकली हूँ लेकिन तुम बेअकल हो : उद्धव ठाकरे

लोकसभा चुनाव के तीन चरणों के मतदान के बाद सियासी दलों का प्रचार अभियान तेज हो गया है। विभिन्न दलों के नेता एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे हैं। इसी कड़ी में शिवसेना (यूबीटी) नेता उद्धव ठाकरे ने गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर पलटवार किया और उनके 'बालासाहेब का नकली संतान' वाले बयान की आलोचना की। ठाकरे ने कहा कि वह अपने माता-पिता का अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे।

उद्धव ठाकरे ने जवाब दिया, ' तेलंगाना में प्रधानमंत्री मोदी की सभा हुई। उन्होंने मुझपर टिप्पणी की। तेलंगाना की सभा में बोलते समय उन्होंने मेरा उल्लेख 'बाळासाहेब का नकली पुत्र' किया। मोदीजी, मैं नकली हूँ लेकिन तुम बेअकल हो। यह मेरा अपमान नहीं है, यह मेरे पिताजी बाळासाहेब का और मेरी माँ का अपमान है। मोदीजी के पास कभी आई और माँ के संस्कार नहीं हो सकते। लेकिन मेरे ऊपर हो गए हैं। मैं संस्कृत घर में पला हूँ।' '...तब तुम्हें शर्म नहीं आई?'

'तुमने नोटबंदी के समय अपनी माँ को लाइन में खड़ा किया था। ९० साल की माऊली का इस्तेमाल तुमने अपने स्वार्थ के लिए किया था। तब मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। क्योंकि 'मातृदेव भवः' और 'पितृदेव भवः' यह हमारा हिंदुत्व है। इसलिए तुम ज्यादा बोल ना ना, बाळासाहेब कहने से पहले हिंदुहृदयसम्राट कहना सिखो। नहीं तो मैं तुम्हें सिखाना पड़ेगा। तुम्हें हिंदुहृदयसम्राट कहना पसंद ना आये तो वह महाराष्ट्र की जनता तुम्हें सिखाएगी', ऐसा भी उन्होंने कहा। प्रधानमंत्री मोदी आज मुझे और मेरी शिवसेना को नकली कह रहे हैं। लेकिन, इस ठाकरे परिवार ने महाराष्ट्र की सेवा की है। २०१४ और २०१९ में हम भाजपा के साथ थे। उस समय उन्होंने हमारे साथ वार किया। तब हमने उनका साथ छोड़ा, तो वह हमें नकली कह रहे हैं। बाळासाहेब के पुत्र को नकली कह रहे हैं। अगर २००१ में बाळासाहेब ने मोदी को नहीं बचाया होता, तो अटलबिहारी वाजपेयी ने उन्हें केवल खुदाई में टाका होता,' ऐसी भी टिप्पणी उन्होंने की।

उद्धव अहमदनगर के श्रीरामपुर में अपनी पार्टी के शिरडी लोकसभा सीट से उम्मीदवार भाऊसाहेब वाकचौरे के लिए आयोजित रैली को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री एक तरफ ऐसे बयान देंगे। फिर १७ मई को मुंबई के दौरे के दौरान दिवंगत शिवसेना संस्थापक के शिवाजी पार्क स्मारक पर सिर झुकाएंगे।

'तुमने नोटबंदी के समय अपनी माँ को लाइन में खड़ा किया था। ९० साल की माऊली का इस्तेमाल तुमने अपने स्वार्थ के लिए किया था। तब मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। क्योंकि 'मातृदेव भवः' और 'पितृदेव भवः' यह हमारा हिंदुत्व है।

उन्होंने कहा, तेलंगान में एक रैली में प्रधानमंत्री ने कहा कि वह बालासाहेब के नकली संतान के बारे में पूछना चाहते हैं। मोदी जी को मुझसे लड़ना चाहिए, लेकिन अगर आप मेरे माता-पिता का अपमान करेंगे तो मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा। ठाकरे ने कहा कि प्रधानमंत्री को २०१४ और २०१९ के लोकसभा चुनावों में नामांकन के दौरान उनके हस्ताक्षर लेने में कोई समस्या नहीं हुई, लेकिन अब वह उनकी पार्टी को निशाना बना रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने आंध्र प्रदेश के राजमपेट में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा था, 'मैं जरा बाला साहेब ठाकरे के नकली शिवसेना के जो उनके संतान हैं..जरा बालासाहेब को याद करो... मैं उनकी नकली संतानों को पूछना चाहता हूं...मैं उनके बुजुर्ग नेता से भी पूछना चाहते हूं,जिन्होंने कहा कि पश्चिम भारत के लोग अरबी लगते हैं, क्या महाराष्ट्र के लोगों को ये भाषा मंजूर है क्या। कांग्रेस को लगता है कि उत्तर भारत के लोग गोरों जैसे लगते हैं, क्या आप यह बात स्वीकार कर सकते हैं क्या। सत्ता के लिए देश का बंटवारा करने वाली कांग्रेस अब भारतीय पर नस्ल वादी टिप्पणी करने पर उतर आई है। क्या हो गया है कांग्रेस को।'

'अरे पट्ट्या, तू आमदार कैसा होता, वही देखता है.., अजित पवार ने खुले आवाज में चुनौती!

राष्ट्रवादी काँग्रेस के नेता और उपमुख्यमंत्री अजित पवार इस विधान के माध्यम से हमेशा ही चर्चा में रहते हैं। कभी-कभी वे अपनी विशेष शैली में किसी को जवाब देते हैं। लेकिन कभी-कभी वे अपने भाषण में कठिनता से जवाब देते हैं। अब लोकसभा चुनाव का प्रचार शुरू हो चुका है। इस पर्वतीय क्षेत्र में अजित पवार की शिरूर लोकसभा क्षेत्र के मतदार संघ में एक सभा हुई। इस सभा में अजित पवार ने अपने भाई अशोक पवार को खुले आवाज में चुनौती दी, 'अरे पट्ट्या, तू आमदार कैसा होता, वही देखता है, मंत्री होता क्या?' ऐसे खास अपनी शैली में अजित पवार ने चुनौती दी। उन्होंने ये कहा, 'दिलीप वळसे पाटील का शपथ ग्रहण हुआ तो उनके (अशोक पवार के) साथ चक्कर पड़ गया।

इससे मालूम हुआ कि, दादाजी ने दिलीप वळसे पाटील को मंत्रिमंडल में शामिल करने के लिए मना कर दिया। दादाजी कभी-कभी जिल्हे में जाते थे लेकिन हमारे काम होते थे। उनकी दाहिनी और बाईं हाथ में कौन आमदार बैठते थे, इसके बारे में ये (अशोक पवार) ने कहा। फिर उन्होंने वहां गए (शरद पवार गट में)। उन्होंने पवार साहेब से कहा कि, आगे बारी मंत्री की है। अब आगे बारी मंत्री बनने के लिए उन्होंने कारखाने की चरणवाट लगाई है और मंत्री बनने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। 'अरे पट्ट्या, तू आमदार कैसा होता, वही देखता है, मंत्री होता क्या?' अजित पवार ने एक बार मन में लिया तो मैं आमदार बनाने की कोशिश नहीं करूंगा। अब मैं भी चुनौती देता हूं, तुम आमदार कैसे होते हो, यह देखो। मैं लोगों को बताऊंगा कि उनकी असली औकात क्या है?' ऐसी खुले आवाज में चुनौती देते हुए उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने अपने भाई अशोक पवार को दी।

'बारामती में पुलिस की बंदोबस्त में पैसों की बरसात', रोहित पवार ने शेयर किया VIDEO, रात १२ बजे तक बैंक भी चले?

बारामती लोकसभा क्षेत्र में मतदान के पूर्व संध्या में मतदाताओं के बीच पैसों की वाटफूली हुई है। शरद पवार गट के आमदार और नेताओं ने इस आरोप को लगाया है कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अजित पवार गट ने मतदाताओं को पैसे दिए हैं। इसके बारे में शरद पवार गट के बारामती के शहराध्यक्ष संदीप गुजर और युवा अध्यक्ष सत्यव्रत काळे ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज की है। इसके अलावा, इस प्रकरण में कर्जात-जामखेड़ आमदार रोहित पवार ने भी अजित पवार गट पर आरोप लगाया है। रोहित पवार ने कुछ वीडियो साझा किए हैं। बारामती में पुलिस की बंदोबस्त में पैसों की वाटफूली हो रही है, यह कहते हुए रोहित पवार ने एक्स माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफ़ॉर्म पर चार वीडियो साझा किए हैं। इसके अलावा, बारामती में रात १२ बजे भी बैंक काम कर रहे हैं, इस तरह का एक वीडियो भी रोहित पवार ने साझा किया है।रोहित पवार द्वारा साझा की गई वीडियो में राष्ट्रवादी पार्टी के अजित पवार गट और शरद पवार गट के कार्यकर्ताओं के बीच सचेत होने की स्थिति दिखाई जा रही है। वहाँ पुलिस भी मौजूद है। एक वीडियो में रखी गई पैसे भी दिखाई जा रही हैं। यह वीडियो साझा करते हुए रोहित पवार ने कहा है कि, बारामती में मतदान संघ के पुलिस बंदोबस्त में पैसों की बरसात... इसी संदर्भ में भोर तालुका के कुछ वीडियो साझा किए गए हैं...

मराठा-कुणबी विवाद के कारण भिवंडी में भाजपा चिंतित

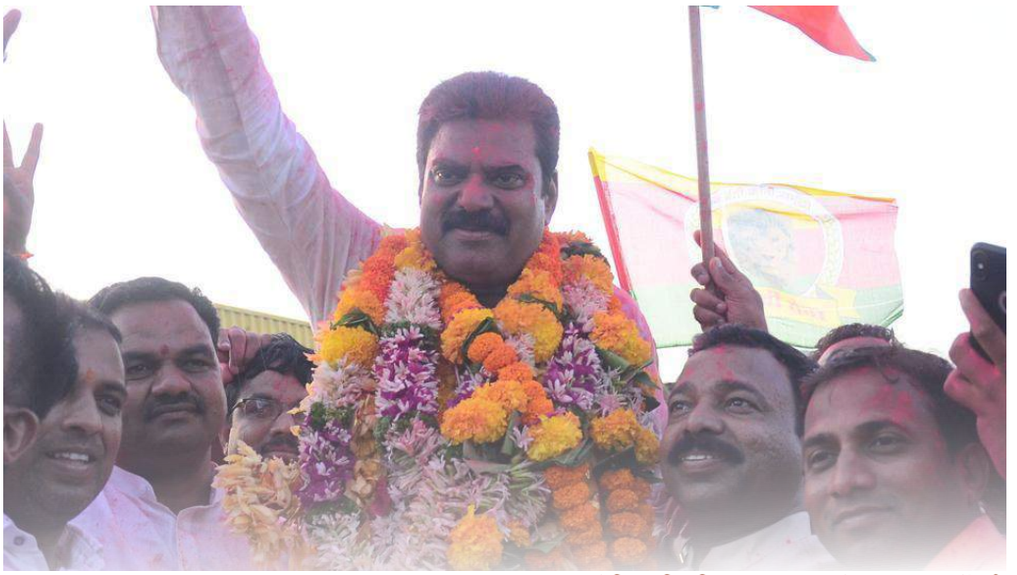

ठाणेः मराठा समाज को अन्य आरक्षित वर्गों से आरक्षण देने के मुद्दे में कुणबी नोंदी की चर्चा के साथ-साथ ठाणे और पालघर जिलों में बहुसंख्यक कुणबी समाज में तेजी से वृद्धि का परिदृश्य नजर आया है। मनोज जरांगे की उत्कृष्ट प्रचार योजना के कारण भिवंडी, शहापूर, और मुरबाड़ इलाकों में लाखों कुणबी समुदाय ने उनका समर्थन किया है। लोकसभा चुनावों के प्रचार-प्रसार के दौरान कुणबी समुदाय की यह आक्रोशित स्थिति अब भाजपा के गठबंधन में भी चिंता का विषय बन गई है।

भिवंडी लोकसभा क्षेत्र के लिए भाजपा के केंद्रीय राज्यमंत्री कपील पाटील सातवें बार चुनाव लड़ रहे हैं। कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस की विरोधी टक्कर के बावजूद, यह सीट निश्चित रूप से गर्मी में बनी हुई है। भाजपा ने महाराष्ट्र में पहली बार कपील पाटील का नाम भिवंडी से किया। इसके फलस्वरूप, मतदाता समूह में बड़ी नाराजगी होने के बावजूद, उन्हें काम करने का मौका मिला।

मुरबाड़ के भाजपा विधायक किसन कठोरे और पाटील के बीच विशेष रूप से भेदभाव नहीं है। पांच साल पहले हुई लोकसभा चुनाव में कठोरे ने पाटील के जीत के लिए कड़ी लड़ाई दी थी। उन्होंने मुरबाड़ मतदाता समूह में पाटील को ६० हजार से अधिक मतों से हराया था। लेकिन कठोरे कोई भी मौका नहीं छोड़ रहे हैं कि पाटील को पांच साल में दिलाया हुआ दर्द दिखाएं। इसके कारण, कठोरे के समर्थकों में पाटील के खिलाफ क्रोध बढ़ रहा है। इस विवाद में अगरी-कुणबी संघर्ष भी दिखाई देता है। अगरी समाज में पाटील ने कठोरों को उचित वाग्दान नहीं दिया है, तो इसमें गुप्त नाराजगी भी दिख रही है। उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कठोरों के साथ समझौता किया है और वर्तमान में उन्हें पाटील की प्रचार में सक्रिय रूप से शामिल किया गया है। पाटील को समर्थन देने के लिए कठोरे ने एक पत्र भी जारी किया है। इसलिए, क्या कुणबी समाज की नाराजगी को दूर करने के लिए पाटील को मिलेगा, इस बारे मतदाता समूह में विभिन्न मतप्रवाह हैं।

भाजपा ने Sanjay Raut की 'दफना' देने वाली टिप्पणी के खिलाफ निर्वाचन आयोग व पुलिस को लिखा पत्र

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बृहस्पतिवार को निर्वाचन आयोग और मुंबई पुलिस को पत्र लिखकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मुगल बादशाह औरंगजेब की तरह महाराष्ट्र में 'दफनाने' की कथित टिप्पणी के लिए शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

भाजपा की महाराष्ट्र इकाई ने आरोप लगाया कि ऐसी टिप्पणियां प्रधानमंत्री के जीवन के लिए 'सीधा खतरा' है। भाजपा ने निर्वाचन आयोग को लिखे पत्र में कहा, '' राउत ने अहमदनगर में आयोजित जनसभा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को महाराष्ट्र में दफनाने की धमकी दी थी। उन्होंने मोदी और औरंगजेब के बीच समानता दिखाने की भी कोशिश की। ऐसी टिप्पणियां संभावित रूप से सांप्रदायिक वैमनस्य को जन्म देती हैं और चुनाव प्रचार की शांतिपूर्ण प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।'' सत्तारूढ़ पार्टी ने शिकायत की, ''उनकी टिप्पणी सीधे तौर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जान के लिए खतरा है। निर्वाचन आयोग के अधिकारियों को राउत के खिल ाफ उचित कार्रवाई करनी चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि भविष्य में ऐसी टिप्पणियां दोहराई नहीं जाएं।

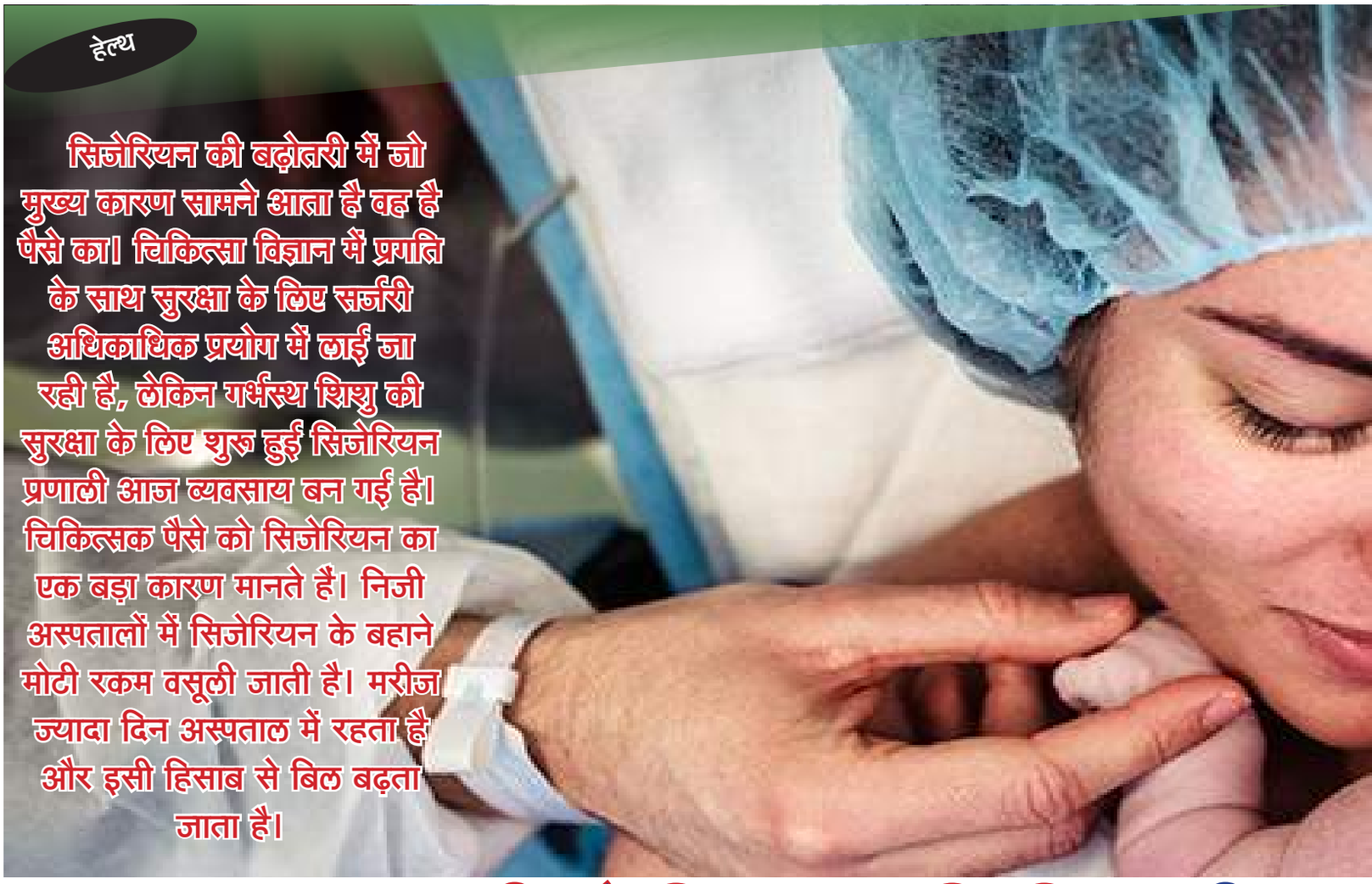

सिजेरियन की बढ़ोतरी में जो मुख्य कारण सामने आता है वह है पैसे का। चिकित्सा विज्ञान में प्रगति के साथ सुरक्षा के लिए सर्जरी अधिकाधिक प्रयोग में लाई जा रही है, लेकिन गर्भस्थ शिशु की सुरक्षा के लिए शुरू हुई सिजेरियन प्रणाली आज व्यवसाय बन गई है। चिकित्सक पैसे को सिजेरियन का एक बड़ा कारण मानते हैं। निजी अस्पतालों में सिजेरियन के बहाने मोटी रकम वसूली जाती है। मरीज ज्यादा दिन अस्पताल में रहता है और इसी हिसाब से बिल बढ़ता जाता है।

महिलाओं की सीजेरियन डिलिवरी और निजी अस्पतालों की मुनाफाखोरी

कहते हैं महिला जब बच्चे को जन्म देती है तो यह उसका भी दूसरा जन्म होता है। जहां विदेशों में डिलीवरी का बहुत महंगा बीमा होता है वहीं भारत में इसको लेकर बने निमयों का पालना तक नहीं होता। कई बार पेनलैस डिलीवरी के लिए महिलाएं नॉर्मल डिलीवरी की बजाए सिजेरियन का ऑप्शन चुनती हैं। कभी-कभी तो बड़े घरों में मुहूर्त के लिए सिजेरियन को चुना जाता है। साल २०१० में डब्लयूएचओ की एक रिर्पट में कहा गया कि देश में पांच में से एक डिलीवरी सिजेरियन ऑपरेशन के जरिए की जाती है। ज्यादातर ऑपरेशन अस्पताल द्वारा पैसे कमाने के लिए किए जाते हैं। साल २००७-०८ में नौ एशियाई देशों में किए गए सर्वे में पाया गया कि सिजेरियन में २७ फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। भारत के शहरी क्षेत्रों की महिलाओं में सिजेरियन डिलीवरी होने का खतरा दो दशकों पहले से आज तीन गुणा ज्यादा है। अगर महिला निजी चिकित्सक की देखभाल में हैं तो यह खतरा और भी ज्यादा है। पिछले बीस वर्षों में सिजेरियन डिलीवरी में तीन से पांच गुणा की वृद्धि का अनुमान लगाते हैं। महिला के गर्भाशय को चीरकर बच्चे का जन्म कराने को सिजेरियन डिलीवरी या सिजेरियन सैक्शन कहते हैं। गर्भावस्था के आखिरी माह में प्रसव के पूर्व गर्भस्थ शिशु को अगर किसी कारण खतरा उत्पन्न हो जाता है, तो सर्जन पेट चीरकर बच्चे का जन्म करा देते हैं।

अमेरिका में सिजेरियन पर किए गए एक शोध के अनुसार इस विधि से जन्मे बच्चे संघर्ष में अक्षम और निरीह होते हैं। प्राकृतिक जन्म के दौरान होने वाली प्रक्रियाओं के फलस्वरूप बच्चे के शरीर में केटाकोलीमिन नाम के अन्तः स्रावी रसों के स्राव से बच्चे के फेफड़े की कार्यक्षमता, हृदय और मस्तिष्क के रक्त प्रवाह में जो व्यापक परिवर्तन होते हैं, वे नवजात को जन्मोपरान्त सम्भावी विपदाओं से जूझने के योग्य बनाते हैं। सिजेरियन डिलीवरी में प्रतिरोधात्मक शक्ति का एक ओर जहां अभाव हो जाता है वहीं यह एक

बड़ा ऑपरेशन होने के कारण महिलाओं को व्यर्थ का रक्त स्राव और संक्रमण जैसी पीड़ा भुगतनी पड़ती है।

फेफड़ों के वायुकोषों में व्याप्त तरल पदार्थ बनना बन्द हो जाता है और इसमें स्थित पदार्थ अवशोषित हो जाता है, फलतः वायुकोष जन्म लेने पर खाली मिलते हैं। साथ ही फेफड़ों का लचीलापन बढ़ जाता है और वायु लेने वाले मार्ग खुल जाते हैं।

हृदय और मस्तिष्क की रक्तवाहिनी नलियां विशेष रूप से चौड़ी हो जाती हैं और शरीर के शेष सभी भाग की नलियां संकुचित हो जाती हैं। इसके फलस्वरूप शरीर के अन्य भागों की अपेक्षा हृदय और मस्तिष्क में रक्त वितरण की मात्रा बढ़ जाती है ताकि इन नाजुक भागों पर ऑक्सीजन की कमी का असर न पड़े। शिशु की हृदयगति धीमी पड़ जाती है ताकि उसके स्वयं के कार्य के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता भी कम हो जाए। फलस्वरूप नवजात शिशु के फेफड़े जब तक कार्य करना शुरू न करें, तब तक ऑक्सीजन की कमी के दौरान हृदय को कोई क्षति नहीं होती।

शिशु के शरीर में संचित ऊर्जा के सभ स्रोतों से रूपान्तर होकर ग्लूकोस और फेटी एसिड्स रक्त में इकट्ठे हो जाते हैं ताकि विपदा के समय ईंधन और समुचित भण्डार सहज ही उपलब्ध हो। जिन बच्चों को गर्भ के दौरान उत्पन्न खतरों से बचाने के लिये ऑपरेशन किया गया, अगर उन्हीं से बचने की क्षमता ऑपरेशन से जन्म लेने के कारण कम हो जाए, तो ऑपरेशन का प्रयोजन ही काफी हद तक विफल हो गया।

संतोकबा दुर्लभजी अस्पताल के वरिष्ठ शल्य चिकित्सक तथा राजस्थान वोलंट्र हैल्थ आर्गेनाइजेशन के सलाहकार डॉ. एसजी काबरा के अनुसार अगर सिजेरियन कराने के हालात उत्पन्न होते हैं तो इसका निष्कर्ष इस जांच दल का ही हो, लेकिन ऐसा नहीं होता। सिजेरियन का निर्णय एक ही चिकित्सक का होता है जो कई कारणों से सही नहीं हो सकता।

सीजेरियन निम्नलिखित कारणों से करवाना पड़ सकता है...

आप सीजेरियन करवाना चाहती थीं, मगर ऑपरेशन से पहले ही आपकी प्रसव पीड़ा शुरु हो गई। इस मामले में डॉक्टर देखेंगी कि आप और आपके शिशु को कोई खतरा तो नहीं है। अगर सब ठीक हुआ, तो आपका सीजेरियन ऑपरेशन प्रसव पीड़ा शुरु होने के कुछ घंटों में ही किया जा सकता है।

गर्भावस्था या प्रसव के दौरान ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसमें आपकी और शिशु की जान को खतरा हो सकता है। ऐसे में आप दोनों की सुरक्षा के लिए शिशु का जल्दी से जल्दी जन्म लेना जरुरी होता है।

आपको प्रसव पीड़ा होना बंद हो गई है, या फिर यह काफी धीरे हो गई है। ऐसा निम्न कारणों से हो सकता हैः

आपका जनन मार्ग असामान्य रूप से काफी संकरा है या फिर आपका शिशु काफी बड़ा है।

गर्भ में शिशु की स्थिति सही नहीं है।

आपके संकुचन इतने मजबूत और तेज नहीं हैं कि वे ग्रीवा को खोल सकें।

इन सभी परिस्थितियों में प्राकृतिक प्रसव (योनि के जरिये प्रसव) संभव नहीं हो पाता और यह आपके शिशु की जिंदगी को खतरे में डाल सकता है।

इन सबके अलावा, अगर प्रसव के दौरान निम्नांकित कोई स्थिति उत्पन्न हो जाए, तो भी अनियोजित आपातकाल सीजेरियन करना जरुरी हो सकता है, जैसे किः

प्रसूती चिमटी या वैन्टूस या फिर दोनों की ही सहायता से प्राकृतिक प्रसव कराने के प्रयास विफल हो गए हों।

आपके शिशु के दिल की धड़कन अनियमित हो गई है। इसका मतलब है कि शायद शिशु प्राकृतिक प्रसव को सहन न कर पाए।

शिशु के जन्म से पहले ही गर्भनाल ग्रीवा से बाहर आ गई है। इस स्थिति में बाहर निकली हुई नाल का प्रसव के दौरान दबने का खतरा रहता है, जिससे शिशु तक ऑक्सीजन की सप्लाई अवरुद्ध हो सकती है।

आपकी अपरा गर्भाशय दीवार से अलग हो गई है।

आपका काफी अधिक रक्त बह चुका है, दिल की धड़कन भी काफी तेज चल रही है या फिर रक्तचाप काफी बढ़ गया है।

सीजेरियन के दौरान क्या होता है?

एक बार जब आपका निचला शरीर पूरी तरह सुन्न हो जाता है, तो डॉक्टर आपकी पुरोनितम्ब अस्थि (प्यूबिक बोन) से थोड़ा ऊपर त्वचा में दो उंगलियों की चौड़ाई जितना आड़ा चीरा लगाते हैं। इस तरह के चीरे को बिकिनी कट कहा जाता है। कई बार डॉक्टर सीधा या खड़ा चीरा लगाते हैं, जो कि पुरोनितम्ब अस्थि के ऊपर से दो उंगलियों की चौड़ाई से बढ़ता हुआ नाभि के नीचे एक इंच तक हो जाता है। हालांकि, इस तरह का चीरा अब डॉक्टर कम ही लगाते हैं। आजकल, बिकिनी कट ज्यादा पसंद किए जाते हैं, क्योंकि ये ज्यादा अच्छे तरीके से ठीक हो पाते हैं।

ऊत्तकों और मांसपेशियों की सतहों को खोला जाता है, ताकि गर्भाशय तक पहुंचा जा सके। आपके पेट की मांसपेशियों को काटने की बजाय अलग कर दिया जाता है। गर्भाशय के निचले हिस्से को देखने के लिए आपको मूत्राशय को थोड़ा नीचे की तरफ खिसका दिया जाता है।

इसके बाद आपकी डॉक्टर एक दूसरा चीरा गर्भाशय के निचले भाग में लगाती हैं। यह चीरा सामान्यतः छोटा होता है। कैंची या उंगलियों के सहारे से डॉक्टर इस चीरे को थोड़ा बड़ा करेंगी। तेज चीरा लगाने की तुलना में इस तरह रक्तस्त्राव कम होता है।

आजकल गर्भाशय के केवल निचले हिस्से को खोला जाता है। इसी वजह से इस ऑपरेशन को कई बार लोअर सेगमेंट सीजेरियन सेक्शन (एल एससीएस) भी कहा जाता है।

झिल्लियों के थैले को खोला जाता है और आपको अचानक तेजी से तरल पदार्थ बहने की आवाज सुनाई दे सकती है। इसके बाद शिशु को निकाला जाता है। आप यह महसूस कर पाएंगी कि नर्स या डॉक्टर की सहायक आपके पेट को दबा रहीं हैं, ताकि शिशु का जन्म हो सके। अगर, आपका शिशु ब्रीच स्थिति में है, यानि की उसके नितंब या पैर नीचे की ओर हैं, तो पहले उसका नितंब बाहर आएगा।

शिशु को बाहर निकालने में केवल कुछ ही मिनट लगते हैं।

आपके नवजात को तुरंत शिशु रोग विशेषज्ञ या प्रशिक्षित व अनुभवी सहायक के द्वारा जांचा जाएगा। इसके बाद आपके लाडले शिशु का चेहरा आपको दिखाया जाएगा। ■

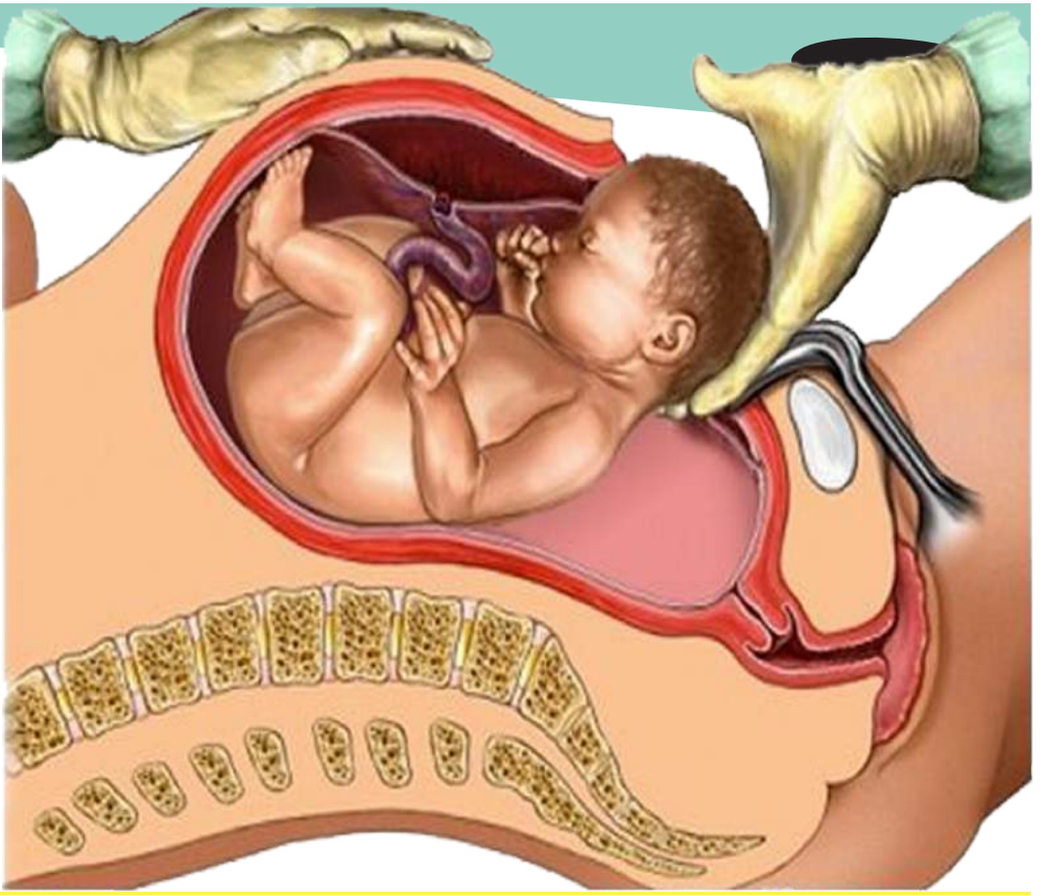

सिजेरियन प्रसव के बाद जरूरी देखभाल एवं सावधानियाँ

अधिक मेहनत वाले कार्य या व्यायाम जैसे, साइकिलिंग, जॉगिंग, वेट लिफ्टिंग और एरोबिक एक्सरसाइज आदि, कम से कम ६ हफ़्तों तक न करें।

जब तक चीरे के स्थान पर पर्याप्त मजबूती न आ जाये तब तक हल्के-हल्के व्यायाम- जैसे चलना या धीरे-धीरे शरीर को झुकना, आदि करें और सहन शक्ति के अनुसार कठिन और मेहनत वाले व्यायाम अपनाएं

जब तक डॉक्टर आपको फिट न कहे तब तक ४-५ किलोग्राम से अधिक वजन की चीजें न उठाए।

प्रसव के बाद लगभग दो हफ्तों तक वैजाइनल स्राव होता रहता है। इसके लिए टैम्पान्स **(cotton ball)** के स्थान पर पैड्स का प्रयोग करें। टैम्पान्स से संक्रमण का खतरा होता है क्योंकि इस स्राव में रक्त, गर्भनाल के अवशेष एवं बैक्टीरिया भी हो सकते हैं।

हँसते, छींकते और खाँसते अथवा गहरी साँस लेते समय चीरे वाले स्थान पर तकिया लगाकर हल्का सा दबा लें। यदि तकिया उपलब्ध न हो तो हाथ का ही सहारा दें।

पेट के निचले हिस्से में हाथ का सहारा देने से दर्द में आराम मिलता है।

चीरे वाले स्थान को साफ रखें और पट्टी खुलने के बाद दिन में तीन बार एंटीसेप्टिक लोशन से साफ करें।

स्नान या सफाई के बाद चीरे के स्थान को साफ कपड़े से दबाकर सुखा लें।

जब तक चीरे वाले स्थान पर ठीक से मजबूती न आ जाये तब तक शारीरिक सम्बन्ध न बनाएं। चीरे वाले स्थान को खुजलाएं नहीं। जहां तक हो सके इस दौरान यात्रा करने से बचें, यदि करना ही पड़े तो ध्यान रखें ज्यादा झटके न लगें और कोई तकिया आदि वस्तु से चीरे के स्थान को हल्का सा दबाये रखें।

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे की रिपोर्ट के मुताबिक-

-देश के प्राइवेट अस्पतालों में सिजेरियन ऑपरेशन के जरिये शिशुओं की डिलीवरी करवाने की दर सरकारी अस्पतालों के मुकाबले दोगुनी है।

-विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्लयूएचओ के मुताबिक सिजेरियन ऑपरेशन के जरिये शिशु जन्म की दर १० से १५ फीसदी से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

-लेकिन नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे में खुलासा हुआ है कि त्रिपुरा के प्राइवेट अस्पतालों में ७३.७ फीसदी बच्चों के जन्म सिजेरियन ऑपरेशन से होते हैं

जबकि सरकारी अस्पतालों में ये दर १८.१ फीसदी है।

-तेलंगाना के प्राइवेट अस्पतालों में करीब ७५ फीसदी ((७४.९)) बच्चे सिजेरियन ऑपरेशन से पैदा होते हैं और सरकारी अस्पतालों में ४०.६ फीसदी बच्चों का जन्म सिजेरियन ऑपरेशन से होता है।

-इस मामले में पश्चिम बंगाल के प्राइवेट अस्पताल भी पीछे नहीं हैं जहां ७०.९ फीसदी बच्चों की डिलीवरी में सिजेरियन ऑपरेशन किया जाता है जबकि सरकारी अस्पतालों में १८.८ फीसदी बच्चों का जन्म ही सिजेरियन ऑपरेशन से होता है।

ये आंकड़े भले ही तीन राज्यों के हों लेकिन ये आंकड़े प्राइवेट अस्पतालों की मुनाफाखोरी वाली सोच को दर्शाते हैं। यहां आपको बता दें कि प्राइवेट अस्पतालों में एक नॉर्मल डिलिवरी में औसतन ३० हजार रुपये का खर्च होता है। जबकि सिज़ेरियन ऑपरेशन का खर्च औसतन ६० हजार रुपये हो सकता है। ये खर्च अलग-अलग मामलों के हिसाब से और ज़्यादा भी हो सकता है।

–साभार : जी न्यूज

मायावती भाजपा का खेल बिगाड़ रही...

यह बात भी सही है कि अगर २३ लोकसभा सीटों पर बसपा के उम्मीदवारों से कांग्रेस और सपा को नुकसान हो रहा है, तो वहीं कुछ जगहों पर इसका लाभ भी उन्हें मिल रहा है, क्योंकि कुछ सीटों पर बसपा के दलित और ब्राह्मण उम्मीदवार भाजपा के वोट बैंक में सेंध मार रहे हैं। मायावती ने २००७ के फार्मूले पर चलते हुए मुस्लिम-दलित और ब्राह्मण का कॉम्बिनेशन बनाने की कोशिश की है। इस कॉम्बिनेशन से वह अपने बूते सरकार बनाने में कामयाब हो गई थी। मायावती ने अगर २३ मुसलमानों को टिकट दिया है, तो १५ ब्राह्मण, ८ क्षत्रिय और चार यादव भी मैदान में उतारे हैं, उन्होंने चार महिला उम्मीदवार भी चुनाव मैदान में उतारी हैं।

भाजपा अगर उत्तर प्रदेश में बढ़ी है तो उसका सबसे बड़ा कारण है कि समाजवादी पार्टी का ओबीसी और बसपा का दलित वोट उसके पास आया है। लेकिन यह भी यूपी की सच्चाई है कि जब जब बसपा की सीटें घटती हैं, तो भाजपा की सीटें बढ़ती हैं। इस बार फिर वही होता दिख रहा है कि बसपा की सीटें घटेंगी, तो भाजपा की बढ़ेंगी। १९९८ में जब उत्तर प्रदेश का बंटवारा नहीं हुआ तो ८५ लोकसभा सीटों में से बसपा को चार सीटें मिलीं, तो भाजपा को ५७ (एनडीए को ५९) सीटें मिलीं थी। उत्तर प्रदेश की ५९ सीटों के बूते ही केंद्र में वाजपेयी सरकार बनी।

२०१९ में बसपा और सपा ने मिल कर चुनाव लड़ा, भाजपा विरोधी वोटों का बंटवारा नहीं हुआ, तो बसपा को १० सीटें मिलीं। और भाजपा ९ सीटें घटकर ६२ पर पहुंच गई। मतलब साफ़ है, बसपा का ग्राफ ऊपर जाता है, तो भाजपा को नुकसान होता है। इस समय बसपा का ग्राफ गिरा हुआ है। २०१९ में उसे कम सीटें लड़ने पर भी १९ प्रतिशत वोट मिला था, लेकिन २०२२ के विधानसभा चुनाव में जब उसने अकेले चुनाव लड़ा तो उसे एक भी सीट नहीं मिली और वोट भी १९ प्रतिशत से घटकर १३ प्रतिशत रह गया। जिस बसपा को २००७ के विधानसभा चुनाव में ३० प्रतिशत वोट और ४०० में से २०६ विधानसभा सीटें और २००९ के लोकसभा चुनाव में २७ प्रतिशत वोट और २० सीटें मिलीं थी, उस बसपा को २०२२ में विधानसभा की एक भी सीट नहीं मिली और वोट भी सिर्फ १३ प्रतिशत रह गया। इतनी बड़ी गिरावट के बावजूद मायावती ने किसी के साथ गठबंधन नहीं किया। लोकसभा चुनाव शुरू होने से पहले एक समय कांग्रेस दुविधा में थी कि वह सपा से गठबंधन करे या बसपा से। शुरू में दोनों कांग्रेस से गठबंधन नहीं करना चाहते थे, लेकिन कांग्रेस दोनों से करना चाहती थी।

नीतीश कुमार ने अखिलेश यादव को इंडी गठबंधन में शामिल होने के लिए मनाया था। कांग्रेस उसके बाद भी दुविधा में थी, इसलिए अखिलेश से सीट शेयरिंग नहीं हो पा रही थी। लेकिन जब मायावती तैयार ही नहीं हुई तो कांग्रेस और सपा में सीट शेयरिंग हो गई। मायावती के अकेले लड़ने का मतलब यह माना गया कि उन्हें खुद तो कुछ मिलना नहीं, लेकिन वह कांग्रेस सपा का मुस्लिम वोट काट कर भाजपा को फायदा पहुंचाएगी। कांग्रेस और सपा इस बार बसपा को वोट कटुआ पार्टी कह रहे हैं। जैसी आशंका थी, वैसे ही मायावती ने अभी तक जिन ७८ उम्मीदवारों का एलान किया है, उनमें से २३ मुस्लिम हैं। जबकि कांग्रेस ने १७ में से सिर्फ दो मुसलमान उम्मीदवार उतारे हैं और समाजवादी पार्टी ने सिर्फ चार मुसलमानों को टिकट दिया है। उत्तर प्रदेश में मुसलमानों की आबादी १९ प्रतिशत है, और लोकसभा की १६ सीटों पर मुसलमानों की अहम भूमिका है। आबादी के हिसाब से १५ सीटों पर मुसलमानों का दावा बनता है, लेकिन मायावती ने उनकी आबादी के अनुपात से डेढ़ गुना यानि २३ उम्मीदवार उतार कर कांग्रेस - सपा का खेल बिगाड़ने का पूरा इंतजाम कर दिया है। मायावती ने खासकर अखिश यादव और उनके परिवार को निशाने पर लिया है, उनका टार्गेट यह है कि अखिलेश यादव के परिवार से कोई भी लोकसभा न पहुंच पाए।

२०१९ के लोकसभा चुनाव में मायावती ने मुलायम सिंह और अखिलेश यादव की सीटों पर भी प्रचार किया था। आजमगढ़ सीट पर अखिलेश यादव जीत गए थे, लेकिन विधानसभा चुनाव जीतने के बाद जब उन्होंने अपनी लोकसभा सीट खाली की तो उपचुनाव में अखिलेश यादव के भाई धर्मेन्द्र यादव भाजपा के दिनेश लाल यादव निरहुआ से ८००० वोटों से हार गए, क्योंकि मायावती ने मुस्लिम वोट काटने के लिए गुड्डू जमाली को खड़ा कर दिया था। इस बार मायावती ने अखिलेश यादव के परिवार के हर सदस्य के खिलाफ गुड्डू जमाली वाला फार्मूला ही अपनाया है। अखिलेश यादव कन्नौज से चुनाव लड़ रहे हैं, तो मायावती ने कन्नौज में उनके सामने इमरान बिन जफर को चुनाव मैदान में उतार दिया है। कन्नौज वैसे भी अखिलेश यादव के लिए आसान सीट नहीं, पिछली बार उनकी पत्नी डिंपल यादव भाजपा से हार गई थी। २०२२ के विधानसभा चुनावों में कनौज की ५ विधानसभा सीटों में से चार भाजपा जीती है, यहां तक कि कई बड़े यादव नेता भी भाजपा के साथ जुड़े हैं। इसी तरह आजमगढ़ में अखिलेश यादव के भाई धर्मेन्द्र यादव के सामने मशहूद आलम को, बदायूं में अखिलेश के भाई आदित्य यादव के खिलाफ मुस्लिम खान को और फिरोजाबाद में अखिलेश यादव के भाई अक्षय यादव के सामने बशीर खान को चुनाव मैदान में उतार दिया है। लेकिन मैनपुरी में डिंपल यादव के सामने एक यादव शिव प्रसाद यादव को उतारा है। यह बात भी सही है कि अगर २३ लोकसभा सीटों पर बसपा के उम्मीदवारों से कांग्रेस और सपा को नुकसान हो रहा है, तो वहीं कुछ जगहों पर इसका लाभ भी उन्हें मिल रहा है, क्योंकि कुछ सीटों पर बसपा के दलित और ब्राह्मण उम्मीदवार भाजपा के वोट बैंक में सेंध मार रहे हैं। मायावती ने २००७ के फार्मूले पर चलते हुए मुस्लिम-दलित और ब्राह्मण का कॉम्बिनेशन बनाने की कोशिश की है। इस कॉम्बिनेशन से वह अपने बूते सरकार बनाने में कामयाब हो गई थी। मायावती ने अगर २३ मुसलमानों को टिकट दिया है, तो १५ ब्राह्मण, ८ क्षत्रिय और चार यादव भी मैदान में उतारे हैं, उन्होंने चार महिला उम्मीदवार भी चुनाव मैदान में उतारी हैं।

यूपी में भाजपा और सपा की अग्नि परीक्षा

पिछले दो लोकसभा चुनावों और विधानसभाचुनावों में सपा कुछ खास नहीं कर पाई है। जमीन से जुड़े नेता होने के कारण ही मुलायम को धरती पुत्र कहा जाता रहा है। वह पार्टी को यादवों की पार्टी बनाने के साथ ही पिछड़े वर्ग की पार्टी भी बनाए रख सके। यह इसलिए संभव हो सका कि पिछड़ेवर्ग के नेताओं से उनका सामंजस्य बेहतर रहा। इटावा,मैनपुरी, कन्नौजमें यादव बहुल सीट पर मजबूत एमवाई समीकरण के कारण वह हमेशा मैदान में बाजी मारते रहे। यादव के आलवा दूसरी प्रभावशालीपिछड़ी जातियों पर पकड़ से वह हमेशा आगे रहे। अखिलेश की राजनीति में कभी कभी ऐसा लगता है कि पार्टी के कोर वोटर्स यादव और मुसलमान भी कहीं उनका साथ न छोड़ दें।

उत्तर प्रदेश से बड़ी आस लगाए बैठी भारतीय जनता पार्टी के सामने तीसरे चरण के चुनाव में सबसे बड़ी चुनौती समाजवादी चक्रव्यूह को तोड़ते हुए २०१९ में जीती हुई सीटों को बचाए रखने की है। तीसरे चरण में यादव बहुल जिन १० लोकसभा सीटों पर ७मई को मतदान होना है, वहां २०१९ में भाजपा ने आठ सीटें जीती थी। पहले के दो चरणों में १६सीटों पर हुए मतदान में रालोद का साथ मिला जबकि तीसरे चरण के इन क्षेत्रों में भाजपा का कोई सहयोगी दल नहीं है। लोकसभा चुनाव २०२४ संसदीय क्षेत्र । प्रत्याशी । चुनाव तिथियां हालांकि सबसे बड़े यादव महासभा को अपनेपाले में कर भाजपा यादव वोटो में सेंध लगाने का लगातार प्रयास करती रही है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहनयादव उत्तर प्रदेश के पिछड़ों को पार्टी के पक्ष में करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे , दूसरी तरफ सपा संस्थापक मुलायम सिंह यादव की अनुपस्थिति में पहला लोकसभा चुनाव लड़रहे पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव खुद चुनाव मैदान में उतरकर समाजवादी पार्टी की खोई हुई प्रतिष्ठा को पाने के लिए पूरी ताकत के साथ जुटे हुए हैं। सपा के लिए यह चुनावकरो या मरो जैसा बन चुका है।

भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश की ८०सीटों में से ७५ सीटें जीतने का लक्ष्य रखा है। २०१४में भाजपा को ७१सीटें मिली थी, लेकिन २०१९ में सीटों की संख्या घटकर ६२ रह गई थी। दिल्ली की गद्दी पर तीसरी बार काबिज होने के लिए भाजपा ने उत्तर प्रदेश और बिहार पर अच्छी खासी मेहनतकी है और पुराने एनडीए के सहयोगियों को एक बार फिर से जोड़ा है। Lok Sabha Election 2024: पश्चिम बंगाल में हिंसा के बीच अब तक सबसे अधिक मतदान उत्तर प्रदेश में परचम लहराने के लिए भाजपा ने अपना दल, ओमप्रकाश राजभर,संजय निषाद की पार्टी से गठबंधन किया है, वहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाट मतदाताओं को पाले में करनेके लिए रालोद को वापस एनडीए में लाई है। तीसरे चरण मेंप्रदेश की जिन दस लोकसभा सीटों पर मतदान होना है। उनमें संभल, हाथरस, आगरा, फतेहपुर सीकरी, फिरोजाबाद, मैनपुरी, एटा, बदायूं, आंवला और बरेली शामिल हैं। इनमें भाजपा ने २०१४ में १० में से ७ सीटें जीती जबकि २०१९ में उत्तर प्रदेश के बाकी क्षेत्रों से भाजपा की सीटें कम हुई। लेकिन यादव बहुल इन क्षेत्रों में भाजपा ने अपनी साख मजबूत करतेहुए १० में से ८ सीटें जीतने में कामयाबी हासिल की थी समाजवादी पार्टी केवल दोसीटों संभल और मैनपुरी तक सिमट कर रह गई थी। संभल सीट पर २०१४में भाजपा

को जीत मिली थी लेकिनमैनपुरी सीट १९९६ से ही समाजवादी पार्टी के पास है।

तीसरे चरण वाले क्षेत्र में ओबीसीका बोलबाला है, इनमें यादव, लोध, काछी, शाक्य, मुराव समुदाय के लोग शामिल हैं। इसके अलावा यहां मुस्लिम मतदाता भी बड़ी संख्या में दखल रखते हैं। एटा,फिरोजाबाद, मैनपुरी, बदायूंऔर संभल जैसी लोकसभा सीटों पर यादव मतदाता निर्णायक स्थिति में है। यहां मुस्लिम वोट मिलने पर सपा उम्मीदवार मजबूत स्थिति में आ जाते हैं। संभल,बरेली, आंवला, बदायूं, फिरोजाबाद की सीट पर भी मुसलमान मतदाता अच्छी खासी पकड़ बनाए हुए हैं। एटा में लोध मतदाता निर्णायक हैं, जबकि काछी, शाक्य और मुरई समुदाय का एटा,बदायूं और मैनपुरी में प्रभाव है समाजवादी पार्टी पहली बार लोकसभा चुनावों में बिना मुलायम सिंह के चुनाव मैदान में है। शायद इसलिए भी अखिलेश यादव के लिए यह कड़ी परीक्षा है। सपा के गठन के बाद से अब तक जितने भी चुनाव हुए, उसमें मुलायम की बड़ी भूमिका रहती थी। यूपी में विपक्षी गठबंधनको अखिलेश लीड कर रहे हैं।

पिछले दो लोकसभा चुनावों और विधानसभाचुनावों में सपा कुछ खास नहीं कर पाई है। जमीन से जुड़े नेता होने के कारण ही मुलायम को धरती पुत्र कहा जाता रहा है। वह पार्टी को यादवों की पार्टी बनाने के साथ ही पिछड़े वर्ग की पार्टी भी बनाए रख सके। यह इसलिए संभव हो सका कि पिछड़ेवर्ग के नेताओं से उनका सामंजस्य बेहतर रहा। इटावा,मैनपुरी, कन्नौजमें यादव बहुल सीट पर मजबूत एमवाई समीकरण के कारण वह हमेशा मैदान में बाजी मारते रहे।

यादव के आलवा दूसरी प्रभावशालीपिछड़ी जातियों पर पकड़ से वह हमेशा आगे रहे। अखिलेश की राजनीति में कभी कभी ऐसा लगता है कि पार्टी के कोर वोटर्स यादव और मुसलमान भी कहीं उनका साथ न छोड़ दें। आज अखिलेश केसाथ आजम खान कितना हैं, ये भी समझ में नहीं आता। ओमप्रकाश राजभर,संजय निषाद,जयंत चौधरी,दारा सिंह चौहान,केशव देव मौर्य आदि साथ छोड़ चुकेहैं। अपना दल कमेरावादी से भी उनका संबंध खराब हो चुकाहै। समाजवादीपार्टी के लिए सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि इस बार बहुजन समाज पार्टी उसके साथ नहीं है। पिछली बार जब सपा ने बसपा और रालोद के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था तो इन दस में से दो सीटें जीतने में कामयाब हुई थी। हालांकि इस बार कांग्रेस के साथ समझौता हुआ है लेकिन बहुजन समाज पार्टी के मैदान में उतर

आने के बादलगभग सभी सीटों पर त्रिकोणीय मुकाबला हो गया है। सपा ने इस बार परिवार के बाहर के यादवों को टिकट नहीं दिया है। यादव सपा के मुख्य समर्थक माने जाते हैं लेकिन केवल परिवारजनों को ही टिकट दिए जाने के कारण यादवों में भी रोष है। भाजपाऔर बसपा इस मसले को जोर-जोर से प्रचारित कर रहे हैं। मालूम हो कि सपा ने केवल पांच प्रत्याशी यादव बिरादरी के उतारे हैंजिनमें कन्नौज सीट पर खुद अखिलेश यादव, मैनपुरी से उनकी पत्नी डिंपल यादव,आजमगढ़ से चचेरे भाई धर्मेंद्र यादव,बदायूं से शिवपाल यादव के बेटे आदित्ययादव और फिरोजाबाद सीट से रामगोपाल यादव के बेटे अक्षययादव चुनाव लड़ रहे हैं। इस मसले की गंभीरता को भांपतेहुए इसका फायदा उठाने की गरज से मायावती ने अपनी पार्टीकी ओर से चार प्रत्याशी यादव बिरादरी के दिए हैं। यह एक नयासमीकरण है जो गुल खिला सकता है।

मौके की नजाकत को देखतेहुए भारतीय जनता पार्टी की कोशिश है कि अखिलेश यादव कोज्यादा से ज्यादा उनके परिवार से जुड़ी सीटों में ही उलझाकर रखा जाए ताकि वह अन्य सीटों के लिए समय ना निकल सके। एक दिन बाद तीसरे चरण का चुनाव प्रचार थम जाएगा। भारतीय जनतापार्टी और उसके बड़े नेता जहां चौथे चरण के चुनाव प्रचार मेंजोर-शोर से लगे हैं वहीं अखिलेश यादवअभी भी तीसरे चरण में ही फंसे हैं। इस बीच भारतीय जनता पार्टीने ५ मई को प्रधानमंत्री की सभा इटावा में रखी है। भाजपा के रणनीतिकारोंका मानना है कि इस एक सभा से कई सीटों का काम सध जाएगा। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में उत्तर प्रदेश की योगीसरकार तथा उसके सात मंत्रियों की प्रतिष्ठा भी दांव पर लगीहै। यह चुनाव इन मंत्रियों के साथ-साथ योगी सरकार में प्रतिष्ठा और जन विश्वास की कसौटी को भी परखने वाले हैं। भाजपा में भी अंदर खाने रण मची हुईहै। कई सीटों पर भाजपा दो फाड़ है।

आगरा जिले की फतेहपुरसीकरी लोकसभा सीट पर भाजपा के ही विधायक चौधरी बाबूलाल भाजपा प्रत्याशी राजकुमार चाहर के विरोध में खड़े हैं। राजकुमार चाहर के विरोध में उन्होंने अपने बेटे रामेश्वरचौधरी को निर्दलीय के रूप में मैदान में उतार दिया है। इसकी गंभीरता को देखते हुए भाजपा के चाणक्य अमित शाह लगातार कई बार बड़े नेताओं के साथ बैठकें कर चुके हैं। बहरहाल सभी की निगाहें ब्रज और रुहेलखंड क्षेत्र की इन १०सीटों पर है, क्योंकि यहां जो बुनियाद रखी जाएगी इसका असर खास कर पिछड़ी जातियों के बीच अगले चरण में स्पष्टरूप से दिखाई देगा। कोर वोटर के लिहाज से यह क्षेत्र समाजवादीपार्टी का अपना इलाका है। मुलायम सिंह की अगुवाई में मुस्लिम और यादव बहुल इन सीटों पर ही काबिज होकर समाजवादीपार्टी ने अपना राजनीतिक झंडा बुलंद किया था। पिछले दो बारसे मुंह की खा रही समाजवादी पार्टी अगर अबकी बार जीतनेसे चूक जाती है तो उसे हमेशा के लिए अपनी जमीन खोने का डरहोना स्वाभाविक है।

साभार : hindi.oneindia.com

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

अक्षय तृतीया को युगादि तृतीया भी कहते हैं...

वर्ष : २०२४ की अक्षयतृतीया १० मई, शुक्रवार को है। वैदिक पंचांग के अनुसार (ज्योतिष-तत्त्वांक, वैदिक विज्ञान केन्द्र,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,उत्तरप्रदेश के अनुसार) तथा श्रीमंदिर प्रशासन पुरी के मादलापंजी के अनुसार वैशाख मास शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि पवित्रतम तिथि है। उसी दिन भगवान परशुराम की पावन जयंती है। अक्षय तृतीया को युगादि तृतीया भी कहते हैं। अक्षय तृतीया से ही त्रैतायुग तथा सत्युग का शुभारंभ हुआ था। इसे युगादि तृतीया भी कहा जाता है। अक्षय तृतीया के दिन से ही भगवान बदरीनाथजी का कपाट उनके दर्शन के लिए खोल दिया जाता है। कहते हैं कि शांतिदूत भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर को अक्षय तृतीया महात्म्य की कथा सुनाई थी। भारत के अन्यतम धाम श्री जगन्नाथधाम पुरी में अक्षय तृतीया के मनाये जाने की सुदीर्घ तथा अत्यंत गौरवशील परम्परा अनादिकाल से रही है। यह भगवान जगन्नाथ के प्रति ओडिया लोक आस्था-विश्वास का महापर्व है। स्कंद पुराण के वैष्णव खण्ड के वैशाख महात्म्य में यह बताया गया है कि जो वैष्णव भक्त अक्षय तृतीया के सूर्योदयकाल में प्रातः पवित्र स्नान कर भगवान विष्णु की विधिवत पूजा करता है। उनकी कथा सुनता है वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

प्रतिवर्ष अक्षयतृतीया के पवित्र दिवस पर पुरी धाम में भगवान जगन्नाथ की विश्वप्रसिद्ध रथयात्रा के लिए नये रथों के निर्माण का कार्य आरंभ होता है। जगन्नाथ भगवान की विजयप्रतिमा श्री मदनमोहन आदि की २१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा पुरी के चंदन तालाब में अलौकिक रुप में अनुष्ठित होती है। ओड़िशा जैसे कृषिप्रधान प्रदेश के किसान अक्षय तृतीया के दिन से ही अपने-अपने खेतों में जुताई-बोआई का पवित्र कार्य आरंभ करते हैं। सच कहा जाय तो ओडिशा के घर-घर में अक्षयतृतीया का सामाजिक,धार्मिक,सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक महत्त्व देखने को मिल ता है क्योंकि ओड़िशा की संस्कृति वास्तव में श्री जगन्नाथ संस्कृति ही है जहां के जन-मन के प्राण भगवान जगन्नाथ है। इसीलिए ओड़िशा के प्रत्येक सनातनी के इष्टदेव, गृहदेव, ग्राम्यदेव तथा राज्य देव भगवान जगन्नाथ ही हैं।

अक्षयतृतीया के दिन भगवान श्री जगन्नाथ कथा श्रवण एवं दान-पुण्य का अति विशिष्ट महत्त्व माना जाताहै। अक्षयतृतीया के पावन दिवस के दिन ही अनन्य श्रीकृष्ण भक्त सुदामा नामक अति गरीब ब्राह्मण मित्र नंगे पांव चलकर द्वारकाधीश से मिलने द्वारका गया था। सुदामा को बिना कुछ मांगे ही द्वारकाधीश श्रीकृष्ण ने द्वारकाधीश जैसा उसे अलौकिक सुख प्रदान कर दिया था।

अक्षय तृतीया के दिन से ही ओडिशा में मौसम में बदलाव (वर्षा का आगमन) आरंभ हो जाता है। अक्षय तृतीया ओडिशा में मानव-प्रकृति के अटूट संबंधों को पावन संदेश है। अक्षयतृतीया से ही ओडिशा में नये पारिवारिक तथा सामाजिक रिश्तों-संबंधों (उपनयन संस्कार और शादी-विवाह आदि) का श्रीगणेश होता है। नवनिर्मित गृहों में, दुकानों में तथा मॉल आदि में प्रवेश की पावन तिथि भी अक्षयतृतीया ही होती है। अक्षयतृतीया के दिन ओडिशा में महोदधिस्नानकर अक्षयतृतीया व्रतपालनकर दान-पुण्य का विशेष

महत्त्व है।

स्कंदपुराण के वैष्णव खण्ड के वैशाख महात्म्य में अक्षयतृतीया-पवित्र स्नान तथा पूजन आदि का विस्तृत उल्लेख है। अक्षयतृतीया के दिन भगवान श्री जगन्नाथ कथा श्रवण एवं दान-पुण्य का अति विशिष्ट महत्त्व माना जाताहै। अक्षयतृतीया के पावन दिवस के दिन ही अनन्य श्रीकृष्ण भक्त सुदामा नामक अति गरीब ब्राह्मण मित्र नंगे पांव चलकर द्वारकाधीश से मिलने द्वारका गया था। सुदामा को बिना कुछ मांगे ही द्वारकाधीश श्रीकृष्ण ने द्वारकाधीश जैसा उसे अलौकिक सुख प्रदान कर दिया था। अक्षयतृतीया के दिन पुरी धाम में श्रीजगन्नाथ को चने की दाल के भोग निवेदित करने की सुदीर्घ परम्परा रही है। ओडिशा में अपने पूर्वजों की आत्मा की चिर शांति हेतु अक्षयतृतीया के दिन फल, फूल आदि का दान प्रत्येक सनातनी खुले दिल से करते पाये जाते हैं। कहते हैं कि वैशाख माह की पवित्र तिथियों में शुक्ल पक्ष की द्वादशी समस्त पापराशि का विनाश करती है। शुक्ल द्वादशी को जो अन्न को दान करता है उसके एक-एक दाने में कोटि-कोटि ब्राह्मणों के भोजन कराने का पुण्य प्राप्त होता है। शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि के दिन जो भक्त भगवान विष्णु की प्रसन्नता के लिए जागरण करता है वह जीवनमुक्त हो जाता है।

जो भक्त वैशाख की द्वादशी तिथि को तुलसी के कोमल दलों से भगवान विष्णु की पूजा करता है , वह अपने पूरे कुल का उद्धारकर बैकुण्ठ लोक को प्राप्त करता है। जो भक्त त्रयोदशी तिथि को दूध-दही, शक्कर, घी और शुद्ध मधु आदि से पंचामृत से श्रीहरि की पूजा करता है तथा जो श्रीहरि को पंतामृत से पवित्र स्नान कराता है , वह अपने सम्पूर्ण कुल का उद्धार करके विष्णु लोक को प्राप्त करता है। जो भक्त अक्षय तृतीया के दिन सायंकाल श्रीहरि को शर्बत निवेदित करता है वह अपने पुराने पापों से शीघ्र मुक्त हो जाता है।

वैशाख शुक्ल द्वादशी को जो भक्त कुछ पुण्य करता है वह अक्षय फल देनेवाला होता है। अति प्राचीन काल की बात है। अक्षय तृतीया के दिन महोदय नामक एक गरीब ब्राह्मण गंगास्नान कर किसी आचार्य से अक्षय तृतीया महात्म्य की कथा सुनी। उसने ब्राह्मण को दान में सत्तू, नमक, चावल, गुड आदि का दान किया। वह तत्काल श्रीहरि कृपा से कुधावती नगर का राजा बन गया और अपने राज्य में सभी को अक्षय तृतीया व्रत पालन करने की घोषणा कर दी। कहते हैं कि तभी से कुधावती नगर में अक्षय तृतीया व्रत निष्ठापूर्वक करने की परम्परा आरंभ हो गई। मानव-प्रकृति की आत्मीय घनिष्ठता का महापर्व है ओडिशा की अक्षयतृतीया जिसे इस वर्ष १० मई को प्रत्यक्ष रुप से देखा जा सकता है।

पुरी धाम में सबकुछ जगन्नाथ जी को महारुप में निवेदित होता है। जैसेःमहाप्रसाद, महादान और महादीप आदि। ओडिशा की आध्यात्मिक नगरी पुरी में प्रतिवर्ष अक्षय तृतीया के दिन से ही भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए नये रथों के निर्माण का कार्य पुरी के गजपति महाराजा तथा जगन्नाथ जी के प्रथमसेवक कहे जानेवाले गजपति के राजमहल (श्रीनाहर) के सामने बडदाण्ड पर पूरी जगन्नाथ संस्कृति विधि-विधान से साथ आरंभ होता है। रथों के निर्माण में कम से कम ४२ दिन का समय अवश्य लगता है। अक्षय तृतीया के दिन से ही जगन्नाथ भगवान की विजय प्रतिमा श्री मदनमोहन आदि की २१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा पुरी के चंदन तालाब में आरंभ होती है। कृषिप्रधान प्रदेश ओडिशा के किसान अक्षय तृतीया के दिन से ही अपने-अपने खेतों में जुताई-बोआई का पवित्र कार्य आरंभ करते हैं जिसका शुभारंभ ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक स्वयं करते हैं। ओडिशा के घर-घर में अक्षय तृतीया का पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा लौकिक महत्त्व देखने को मिलता है।

अक्षय तृतीया के दिन से ही ओडिशा में मौसम में बदलाव (वर्षा का आगमन) आरंभ होता है। अक्षय तृतीया ओडिशा में मानव-प्रकृति के अटूट संबंधों को बताती है। अक्षय तृतीया से ही ओडिशा मे नये पारिवारिक तथा सामाजिक रिश्तों (उपनयन संस्कार और शादी-विवाह आदि) का श्रीगणेश होता है। नवनिर्मित गृहों में प्रवेश की पावन तिथि भी ओडिशा में अक्षय तृतीया ही होती है। वैसे तो अक्षयतृतीया को युगादि तृतीया भी कहते हैं। इसे भगवान परशुराम जयंती के रुप में भी मनाया जाता है। अक्षय तृतीया से ही त्रैतायुग तथा सत्युग का आरंभ हुआ था। अक्षय तृतीया से ही भगवान बदरीनाथजी का कपाट उनके दर्शन के लिए खोल दिया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर को अक्षय तृतीया महात्म्य की कथा सुनाई थी। अक्षय तृतीया के दिन ओडिशा में महोदधिस्नानकर अक्षयतृतीया व्रतपालनकर दान-पुण्य का विशेष महत्त्व है। अक्षयतृतीया-पवित्र स्नान तथा पूजन आदि का पुरी में विशेष महत्त्व है। अक्षय तृतीया के दिन भगवान श्री जगन्नाथ कथा श्रवण एवं दान-पुण्य का अति विशिष्ट महत्त्व माना जाता है।

अक्षय तृतीया के दिन पुरी धाम में श्रीजगन्नाथ को चने की दाल का भोग निवेदित किया जाता है। ओडिशा में अपने पूर्वजों की आत्मा की चिर शांति हेतु अक्षय तृतीया के दिन फल, फूल आदि का दान प्रत्येक सनातनी खुले दिल से करते हैं।कहते हैं कि अक्षयतृतीया के दिन जो भक्त भगवान विष्णु की पूजा करता है,वह अपने पूरे कुल का उद्धारकर बैकुण्ठ लोक को प्राप्त करता है। जो भक्त दूध-दही,शक्कर,घी और शुद्ध मधु आदि से पंचामृत से श्रीहरि की पूजा करता है, उन्हें पंचामृत से पवित्र स्नान कराता है,वह अपने सम्पूर्ण कुल का उद्धार करके विष्णु लोक को प्राप्त करता है। जो भक्त अक्षयतृतीया के दिन सायंकाल श्रीहरि को शर्बत निवेदित करता है वह अपने पुराने पापों से शीघ्र मुक्त हो जाता है। उस दिन जो भक्त कुछ पुण्य करता है वह अक्षय फल देनेवाला होता है।

पुरी में अक्षयतृतीया के दिन से ही भगवान जगन्नाथजी की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए प्रतिवर्ष तीन नये रथों का निर्माण होता है जो श्रीमंदिर के समस्त रीति-नीति के तहत वैशाख मास की अक्षय तृतीया से आरंभ होता है। रथ-निर्माण की अत्यंत गौरवशाली सुदीर्घ परम्परा है। इस कार्य को वंशानुगत क्रम से सुनिश्चित बढईगण ही करते हैं। यह कार्य पूर्णतः शास्त्रसम्मत विधि से संपन्न होता है। रथनिर्माण विशेषज्ञों का यह मानना है कि तीनों रथ, बलभद्रजी का रथ तालध्वज रथ,सुभद्राजी का रथ देवदलन रथ तथा भगवान जगन्नाथ के रथ नंदिघोष रथ का निर्माण पूरी तरह से वैज्ञानिक तरीके से होता है। रथ-निर्माण में कुल लगभग २०५ प्रकार के अलग-अलग सेवायतगण सहयोग करते हैं। प्रतिवर्ष वसंतपंचमी के दिन से रथनिर्माण के लिए काष्ठसंग्रह का पवित्र कार्य आरंभ होता है।

अक्षयतृतीया के दिन ही पुरी के चंदन तालाब में श्री जगन्नाथ जी की विजय प्रतिमा मदनमोहन आदि की २१ दिवसीय बाहरी चंदन यात्रा भी आरंभ होती है जो पूरे २१ दिनों तक चलती है। श्रीमंदिर की समस्त रीति-नीति के तहत जातभोग संपन्न होने के उपरांत अपराह्न बेला में भगवान जगन्नाथ की विजय प्रतिमा मदनमोहन, रामकृष्ण, बलराम, पंच पाण्डव, लोकनाथ, मार्कण्डेय, नीलकण्ठ, कपालमोचन, जम्बेश्वर लक्ष्मी, सरस्वती आदि को अलौकिक शोभायात्रा के मध्य पुरी नगर परिक्रमा कराकर चंदन तालाब लाया जाता है।अक्षय तृतीया के दिन से ही जलप्रिय जगत के नाथ के लिए लगातार २१दिन तक बाहरी चंदनयात्रा का अलौकिक आनंद देश-विदेश के लाखों वैष्वभक्तवहां के चंदन तालाब में प्रतिदिन सायंकाल से मध्यरात्रि तक उठाते हैं।

-अशोक पाण्डेय

देश-दुनिया

स्टिंग ऑपरेशन से गरमाई बंगाल की राजनीति

पश्चिम बंगाल भाजपा के अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने आरोप लगाया है कि संदेशखाली पर जो कथित स्टिंग ऑपरेशन किया गया है, वह संदेशखाल ी की सच्चाई को दबाने का प्रयास है। मजूमदार ने वीडियो जारी करने के समय पर भी सवाल उठाए और आरोप लगाया कि संदेशखाली मामले में मुख्य आरोपी शाहजहां शेख को क्लीन चिट देने के लिए यह वीडियो जारी किया गया है।

मजूमदार ने कहा कि 'यह वीडियो संदेशखाली की सच्चाई दबाने के लिए टीएमसी नेताओं द्वारा ही जारी किया गया है। इस वक्त स्टिंग ऑपरेशन क्यों किया गया, जब चुनाव चल रहे हैं? लेकिन लोगों को बेवकूफ बनाना आसान नहीं है, लोग राजनीतिक रूप से परिपक्व हैं और वे सब समझते हैं कि इस वक्त वीडियो क्यों जारी किया गया है।' उल्लेखनयी है कि शनिवार को टीएमसी ने एक वीडियो जारी किया, जिसमें दावा किया जा रहा है कि वीडियो में भाजपा के मंडल अध्यक्ष हैं, जिन्होंने वीडियो में बताया कि पूरी साजिश के पीछे विपक्षी नेता सुवेंदु अधिकारी का हाथ है। टीएमसी इस वीडियो को जारी कर दावा कर रही है कि संदेशखाली विवाद के पीछे भाजपा की साजिश है। हालांकि मजूमदार ने वीडियो को फर्जी बताया और कहा कि हो सकता है कि एआई तकनीक का इस्तेमाल करके यह वीडियो बनाया गया है।

मजूमदार ने कहा कि 'हमारे नेता गंगाधर कयाल ने कहा है कि वीडियो में जो शख्स है, वो वह नहीं हैं। जैसे ही वीडियो सामने आई, वैसे ही टीएमसी नेता अभिषेक बनर्जी ने कहा कि पार्टी को शाहजहां शेख को बर्खास्त करने से पहले दो बार सोचना चाहिए था। अब इस वीडियो को शाहजहां शेख को क्लीन चिट देने में इस्तेमाल किया जाएगा।' बंगाल की बालुरघाट सीट से सांसद मजूमदार ने कहा कि ६००-७०० लोगों ने संदेशखाली मामले में शिकायत दर्ज कराई थी। ऐसे में एक आदमी के बयान को स्वीकार किया जा रहा है और बाकी लोगों के दावों को नकार दिया गया है।

मजूमदार ने कहा कि सीएम ममता बनर्जी के संदेशखाली न जाने पर भी सवाल उठाए और पूछा कि 'सीएम अब तक संदेशखाली क्यों नहीं गईं? मैं उन्हें चुनौती देता हूं कि वे वहां जाएं तो हम उन्हें दिखाएंगे कि किस तरह से शाहजहां शेख के नेतृत्व में भूखंडों को मछली पालन के तालाबों में बदल दिया गया। केंद्रीय एजेंसियों ने संदेशखाली के एक घर से हथियार भी बरामद किए हैं।'

टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान की यात्रा करेगा भारत?

पाकिस्तान में अगले साल चैंपियंस ट्रॉफी का आयोजन होना है और भारतीय टीम के इस टूर्नामेंट के लिए पड़ोसी देश की यात्रा करने पर संशय है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने इस बारे में बयान दिया है। शुक्ला के अनुसार, अगले साल फरवरी-मार्च में होने वाले इस टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान की यात्रा करने पर फैसला केंद्र सरकार की इजाजत पर निर्भर करेगा। भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से द्विपक्षीय सीरीज नहीं खेली जा रही है और दोनों ही टीमें सिर्फ आईसीसी टूर्नामेंट या एशिया कप जैसे बहुराष्ट्रीय टूर्नामेंट में ही एक दूसरे से खेलती हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच अंतिम बार २०१२-२०१३ में द्विपक्षीय सीरीज खेली गई थी। भारत और पाकिस्तान की टीमें आखिरी बार पिछले साल भारत में खेले गए वनडे विश्व कप के दौरान भिड़ी थी जिसमें भारतीय टीम ने जीत दर्ज की थी। दोनों टीमों के बीच अगले महीने न्यूयॉर्क में टी२० विश्व कप के दौरान ग्रुप चरण का मुकाबला खेला जाएगा।

आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारतीय टीम को पाकिस्तान भेजने से पहले कई कारकों पर चर्चा की जाती है जिसमें राजनयिक और सुरक्षा पहलू भी शामिल है। सुरक्षा मुद्दे और इतिहास को देखते हुए भारत का टूर्नामेंट के लिए पड़ोसी देश की यात्रा करने पर कोई भी फैसला सावधानी से तथा अधिकारियों से चर्चा के बाद ही लिया जाएगा।

'मोदी के हाथ से चुनाव निकल रहा है, १५ अगस्त को शुरू करेंगे हम ये काम', राहुल गांधी ने कर दिया बड़ा वादा

देश में लोकसभा चुनाव के तीन चरणों की वोटिंग हो चुकी है। इस बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने देश के युवाओं के रोजगार को लेकर बड़ा दावा किया है। राहुल ने कहा कि अगर वो सत्ता में आते हैं तो भारत सरकार १५ अगस्त तक विभिन्न सरकारी विभागों में ३० लाख रिक्त पदों को भरने की प्रक्रिया शुरू कर देगी। राहुल गांधी ने नरेंद्र मोदी के झूठे प्रचार से भी लोगों को सावधान रहने की हिदायत दे डाली है। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी के हाथ से चुनाव निकल रहा है। वह दुबारा पीएम नहीं बनेंगे।इसमें उन्होंने कहा, 'देश की शक्ति देश के युवा... नरेंद्र मोदी के हाथ से चुनाव निकल रहा है। वो स्लिप कर रहे हैं। वह हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री नहीं बनेंगे। उन्होंने ने यह फैसला ले लिया है कि अगले ४-५ दिन में आपके ध्यान को भटकाना है। कुछ न कुछ ड्रामा करना है। आपके ध्यान को भटकना नहीं चाहिए। बेरोजगारी सबसे बड़ा मुद्दा है। नरेंद्र मोदी जी ने आपको कहा था कि २ करोड़ युवाओं को रोजगार देंगे। उन्होंने झूठ बोला, नोटबंदी की, गलत जीएसटी लागू किया और सारा का सारा काम अडानी जैसे लोगों के लिए किया है। हम भर्ती भरोसा स्कीम ला रहे हैं। ४ जून को घ्ल्ख्र

गठबंधन की सरकार बनने जा रही है।१५ अगस्त तक भर्ती भरोसा स्कीम में ३० लाख युवाओं को रोजगार देने का काम शुरू हो जाएगा।' आपको बता दें कि राहुल गांधी ने फिर से एक बार अडानी पर टिप्पणी की है। इसे लेकर पीएम मोदी ने उन पर तंज भी कसा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को तेलंगाना में अचानक देश के बड़े उद्योगपति अंबानी-अडानी का मुद्दा छेड़ दिया था।

अमरीका में महिला की १० सप्ताह में दूसरी बार लगी १ मिलियन डॉलर की लॉटरी

अमरीका के मैसाचुसेट्स राज्य में क्रिस्टीन विल्सन नाम की महिला की १० सप्ताह के भीतर दूसरी बार १ मिलियन डॉलर का लॉटरी की लगी है। उसने दोनों बार एकमुश्त भुगतान का विकल्प चुना है। क्रिस्टीन विल्सन को अचानक यह लाभ '१००ँ कैश' १० डॉलर के तत्काल टिकट गेम से मिला है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक विल्सन ने अपनी पिछली जीत में से कुछ राशि का उपयोग एक एसयूवी कार खरीदने के लिए किया था। इस बार वह अपना पुरस्कार बचत में लगाने की योजना बना रही है। विल्सन ने अपना नवीनतम विजेता टिकट मैन्सफील्ड में फैमिली फूड मार्ट से खरीदा था। मार्ट को भी बिक्री करने के लिए मैसाचुसेट्स स्टेट लॉटरी से १०,००० डॉलर का बोनस प्राप्त होगा। विल्सन का पहला १ मिलियन डॉलर का पुरस्कार मैन्सफील्ड में ही डब्स डिस्काउंट लिकर से था।

रिपोर्ट में कहा गया है कि विल्सन की लगातार जीत लॉटरी इतिहास में पहली बार नहीं है। मैसाचुसेट्स निवासी केविन मिलर और केनेथ जे. स्टोक्स ने भी दो बार इसी तरह का जैकपॉट हासिल किया था। यू. के. के एक जोड़े डेविड और कैथलीन लॉन्ग ने जुलाई २०१३ में१.२५ मिलियन डॉलर जीते थे। उन्होंने मार्च २०१५ में एक और १.२५ मिलियन डॉलर जीत कर और एक जगुआर कार खरीदी थी।

हालांकि रिपोर्ट में यह भी जिक्र किया गया है कि कुछ विजेता कर्ज़ में डूब गए हैं या जेल भी भेजे गए हैं। न्यू जर्सी की मूल निवासी एवलिन एडम्स ने भी दो बार १९८५ और १९८६ में लॉटरी जीती, जिससे उन्हें कुल ५.४ मिलियन डॉलर की कमाई हुई। हालांकि दोहरी जीत से एडम्स की जुए की लत पूरी नहीं हुई और उसने अपनी जीत की राशि को जुए में गंवा दिया। २०१६ तक वह दरिद्र थी और एक ट्रेलर पार्क में रह रही थी।

संकट के बीच Air India Express की मदद के लिए आगे आई एयर इंडिया

लगातार फ्लाइट्स के कैंसिल होने के बाद चर्चाओं में आए एयर इंडिया एक्सप्रेस की परेशानी खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। इस बीच टाटा ग्रुप के स्वामित्व वाली एयरलाइन एयर इंडिया (Air India) २० से अधिक रूट्स पर एयरलाइन की मदद के लिए आगे आई है। दरअसल, १०० से ज्यादा केबिन क्रू और पायलटों के अचानक छुट्टी पर चले जाने के कारण एयर इंडिया एक्सप्रेस को अपनी कई उड़ानों को कैंसिल करना पड़ा था। जिस तरह से अचानक कर्मचारियों ने मास सिक लीव ली, उसकी वजह से एयरलाइंस परेशानी में आ गई। दिल्ली में एयर इंडिया एक्सप्रेस की अहम बैठक इससे पहले एयर इंडिया एक्सप्रेस यूनियन और प्रबंधन की बैठक दिल्ली के द्वारका स्थित मुख्य श्रम आयुक्त कार्यालय में हुई, जहां एयर इंडिया एक्सप्रेस प्रबंधन के मुख्य मानव संसाधन अधिकारी (सीएचआरओ) बैठक में भाग ले रहे हैं। बता दें कि कल रात लगभग ३० क्रू सदस्यों की बर्खास्तगी के बाद मुख्य श्रम आयुक्त ने आज एयर इंडिया एक्सप्रेस यूनियन और सीईओ के साथ एक बैठक बुलाई थी।

माफिया मुख्तार अंसारी को जहर देने के आरोपों में नया मोड़

मुख्तार को जेल में जहर देने का मामला ठंडे बस्ते में जाता नजर आ रहा है। पुलिस सूत्रों की मानें तो मुख्तार की विसरा जांच रिपोर्ट आ गई है। जो न्यायिक जांच टीम को भेज दी गई है। बताया जा रहा है कि रिपोर्ट में जहर की पुष्टि नहीं हुई है। बता दें कि २८ मार्च की देर रात जेल में बंद मुख्तार अंसारी की मेडिकल कॉलेज में इलाज के दौरान मौत हो गई थी।

मुख्तार के परिजनों ने उन्हें जेल में जहर देने का आरोप लगाया था। इस पर प्रशासनिक और न्यायिक जांच टीमें गठित की गईं थीं। हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मुख्तार अंसारी की हार्ट अटैक से मौत की पुष्टि हो चुकी है, लेकिन फिर भी विसरा जांच के लिए लखनऊ भेजा गया था। विसरा रिपोर्ट के बाद लगभग यह बात साफ हो गई है कि मुख्तार अंसारी की मौत हार्ट अटैक की वजह से हुई थी।

पुलिस के सूत्रों का कहना है कि विसरा रिपोर्ट लखनऊ से आ गई है और उसे न्यायिक जांच टीम को दे दी गई है। हालांकि जांच टीम का कोई अधिकारी इस पर कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है।

करीब १० दिन पूर्व न्यायिक जांच टीम ने मंडल कारागार के बाद मामले में मेडिकल कॉलेज का भी निरीक्षण किया था। टीम ने कॉलेज प्रबंधन से माफिया के इलाज की बीएचटी रिपोर्ट भी तलब की थी, लेकिन इलाज करने वाले १० से १२ डॉक्टरों से पूछताछ होना अभी बाकी है। मेडिकल कॉलेज के अधिकारियों का कहना है कि न्यायिक टीम जब चाहे इलाज करने वाल ` डॉक्टरों के बयान ले सकती है

माफिया मुख्तार के रहने पर बैरक के अलावा परिसर की सुरक्षा भी कड़ी की गई थी। जांच टीम ने जेल कर्मियों व अधिकारियों से भी पूछताछ की थी। इसके बाद बैरक में लगे जवानों को हटा लिया गया। जेल अधिकारियों के मुताबिक चुनाव के चलते भी फोर्स हटाया गया है। प्रशासन की जांच टीम ने मुख्तार की मौत के मामले में सार्वजनिक नोटिस जारी किया था, जिसमें कहा गया था कि कोई भी व्यक्ति मौत से जुड़ी कोई भी जानकारी अथवा बयान दे सकता है। लेकिन अभी तक कोई नहीं पहुंचा।

पनीर बटर मसाला

सामग्री
पनीर के टुकड़े - २ कप
प्याज - २
टमाटर - ३-४
लहसुन - ३-४ कलियां
काजू - २ टेबलस्पून
तेजपत्ता - १
हरी मिर्च - २
अदरक - १/२ इंच टुकड़ा
कसूरी मेथी - २ टी स्पून
क्रीम/मलाई - २ टेबलस्पून
धनिया पाउडर - १ टेबलस्पून
गरम मसाला - १/२ टी स्पून
मक्खन - २ टेबलस्पून
लाल मिर्च पाउडर - १ टी स्पून
तेल - २ टेबलस्पून
नमक - स्वादानुसार

विधिः पनीर बटर मसाला बनाने के लिए सबसे पहले पनीर लेकर उसके एक-एक इंच के टुकड़े काट लें. इसके बाद प्याज, अदरक और लहसुन को मिक्सर जार में डालकर पीसकर पेस्ट तैयार कर लें. काजू को मिक्सी में डालें और ऊपर से थोड़ा सा पानी डालकर पीस लें. इसके बाद टमाटर को पीसकर प्यूरी तैयार कर लें. अब एक कड़ाही में तेल और मक्खन डालकर दोनों को साथ में मीडियम आंच पर गर्म करें. जब मक्खन पिघल जाए और गर्म हो जाए तो उसमें तेजपत्ता और प्याज का पेस्ट डालकर मिलाएं और तब तक भूनें जब तक कि प्याज का रंह हल्का भूरा न हो जाए. इसके बाद इसमें लंबी कटी हुई हरी मिर्च डाल दें. कुछ सेकंड तक पकाने के बाद इसमें काजू का पेस्ट डालकर मिलाएं और अच्छे से भूनें. इसके बाद इसमें टमाटर की प्यूरी डालें और ग्रेवी को तब तक भूनें जब तक कि ये तेल न छोड़ने लग जाए. ग्रेवी के तेल छोड़ने में ४-५ मिनट का वक्त लगेगा. फिर धनिया पाउडर और गरम मसाला डालकर मिश्रण में अच्छे से मिक्स करें.

जब ग्रेवी के ऊपर तेल दिखाई देने लगे तो पनीर के टुकड़े डालकर चम्मच की मदद से उन्हें ग्रेवी के साथ अच्छी तरह से मिक्स कर दें. इसके बाद कसूरी मेथी लें और उसे हाथों से पीसकर सब्जी में डालकर मिला दें. अब कड़ाही को ढककर सब्जी को तब तक पकाएं जब तक कि ग्रेवी गाढ़ी न हो जाए. ऊपर से ताजी क्रीम डाल दें. टेस्टी पनीर बटर मसाला बनकर तैयार है. इसे पराठा, नान के साथ सर्व करें.

गाजर का अचार

सामग्री
गाजर - १ किलो
हल्दी पाउडर - १ टी स्पून
लाल मिर्च पाउडर - २ टी स्पून
जीरा - २ टी स्पून
सौंफ - २ टी स्पून
मेथी दाना - १ टेबलस्पून
राई - १ टेबलस्पून
अमचूर - १ टी स्पून
सरसों का तेल - ३०० ग्राम (जरूरत के मुताबिक)
नमक - १ कटोरी (स्वादानुसार)

विधिः
गाजर का अचार बनाने के लिए सबसे पहले ताजी गाजर लें और उसे पानी से धोकर उनका छिलका उतार लें. इसके बाद गाजर के पतले और लंबे टुकड़े काट लें. अब कटी हुई गाजर को एक बड़े कटोरे में डाल दें और उसमें हल्दी और स्वादानुसार नमक डालकर अच्छी तरह से चम्मच से मिक्स कर दें. कुछ देर तक इन्हें अच्छी तरह से मिलाएं जिससे गाजर के साथ हल्दी और नमक अच्छी तरह से मिल जाएं. अब एक कड़ाही में राई, जीरा, मेथी दाना और सौंफ डालकर उन्हें धीमी आंच पर ड्राई रोस्ट करें. सभी मसालों को लगभग १ मिनट तक भूनने के बाद गैस बंद कर दें और मसालों को मिक्सी जार में डालकर दरदरा पीस लें. अब तैयार मसाले को गाजर के कटोरे में डालकर चम्मच की मदद से अच्छे से मिला लें.

इसके बाद एक कड़ाही में सरसों का तेल डालकर उसे मीडियम आंच पर गर्म करें. जब तेल अच्छे से गर्म हो जाए तो गैस बंद कर दें और तेल को ठंडा होने दें. जब तेल हल्का गर्म रह जाए तो उसे गाजर के अचार में डालकर अच्छे से मिला दें. इसके बाद अचार को एक कांच की बरनी/जार में डाल दें. अब चम्मच की मदद से अचार को तेल के साथ अच्छे से मिक्स कर दें. इस तरह आपका स्वादिष्ट गाजर का अचार बनकर तैयार हो चुका है

दाल खिचड़ी

सामग्रीः
चावल-१ कप
मूंग दाल- १/२ कप
तूर/अरहर दाल- १/२ कप
हल्दी पाउडर- १ छोटा चम्मच
नमक स्वादअनुसार
जीरा- १ छोटा चम्मच
हींग- १/४ छोटी चम्मच
तेज पत्ता-१, दालचीनी- १ इंच
काली इलायची- १
हरी इलायची- १
लौंग- ३ , काली मिर्च- ४
हरी मिर्च- २ से ३
पिसा हुआ अदरक और लहसुन- १ बड़ा चम्मच
प्याज- ३/४ कप ट
माटर- १/२ कप
हरे मटर- १/२ कप
लाल मिर्च पाउडर-१ छोटा चम्मच
धनिया पाउडर-१/२ छोटा चम्मच
जीरा पाउडर-१/२ छोटा चम्मच
गरम मसाला-१/२ छोटा चम्मच
धनिए के पत्ते

विधिः सबसे पहले सभी सामग्री, दाल और चावल को पानी से अच्छे से धो लें। अब इसके बाद सभी चीजों को सभी चीजों और दो ग्लास पानी के साथ डाल दें। इसके बाद स्वादानुसार नमक, आधा चम्मच हल्दी डालकर मिक्स कर दें। अब कुकर का ढक्कन बंद कर दें और मीडियम फ्लेम पर ५-६ सीटी आने तक पकाएं। इसके बाद आप गैस बंद कर दें और कुकर के प्रेशर को निकाल दें। तब तक आप खिचड़ी का तड़का तैयार कर लें। एक पैन में ४ चम्मच तेल गर्म करें। फिर इसमें जीरा, हींग, तेजपत्ता, २ इंच दाल चीनी, साबुत काली मिर्च, ल ौंग, हरी मिर्च, बड़ी इलायची, साबुत काली मिर्च डाल दें। इसके बाद अदरक लहसुन का पेस्ट, हरी मिर्च डालें।

मिश्रण के पकने पर पैन में करी पत्ता और प्याज डालकर पकाएं। प्याज रंग बदलने के बाद मटर और टमाटर डालकर अच्छे से मिला लें और दो मिनट तक पकाएं। इसके बाद पैन में नमक भी मिला दें और पैन का ढक्कन लगा दें। ५-६ मिनट तक मिश्रण को पकने दें और फिर इसमें मसालों को मिला दें। मसालों को थोड़ा भून लें और इसके बाद इसमें उबली हुई खिचड़ी डालकर चला दें फिर इसमें थोड़ा सा गर्म पानी डाल दें और गैस को धीमें कर दें। ५-६ मिनट तक ढक्कन लगाकर पकने दें। ऊपर से घी डाल दें।

लहसुन चटनी

सामग्रीः

५ लहसुन की कलियां. ७-८ कश्मीरी सूखी लाल मिर्च, १ टी स्पून जीरा, १/४ टी स्पून अजवाइन, १ टी स्पून सरसों के दाने, १ टी स्पून लाल मिर्च पाउडर, ३ टेबल स्पून तेल१/४ कप पानी, स्वादानुसार नमक

विधिः सबसे पहले एक मिक्सर ग्राइंडर में लहसुन की कलियां, कश्मीरी सूखी लाल मिर्च, जीरा, अजवाइन, लाल मिर्च पाउडर, नमक और पानी डालें. एक स्मूथ पेस्ट बनाने के लिए अच्छी तरह ब्लेंड करें.२.अब एक नॉन स्टिक पैन में तेल गर्म करें और उसमें राई डालें. एक बार जब वे चटकने लगें, तो तैयार चटनी को थोड़े से पानी के साथ डालें. अच्छे से मिलाएं और धीमी मीडियम आंच पर तब तक पकने दें जब तक कि चटनी की कच्ची महक न चली जाए. ; इस स्टेज में चटनी का भी थोड़ा तेल निकल जाएगा. लहसून की चटनी सर्व करने के लिए तैयार है!

खजूर की चटनी

सामग्रीः
खजूर - १ कप
किशमिश - २ टेबलस्पून
अदरक पेस्ट - २ टी स्पून
लाल मिर्च पाउडर - १/२ टी स्पून
जीरा पाउडर - १ टी स्पून
काला नमक - ३/४ टी स्पून
गरम मसाला - १/२ टी स्पून
चीनी - १/२ कप (स्वादानुसार)
हींग - १ चुटकी
अमचूर - २ टी स्पून
नमक - स्वादानुसार

विधि : सबसे पहले खजूर के बीज निकाल दें और फिर खजूर के बारीक-बारीक टुकड़े काट लें. इसके बाद एक कड़ाही में आधा कप पानी और चीनी डाल कर चाशनी बनाने के लिए मीडियम आंच पर गैस पर रख दें. इसे तब तक पकाएं जब तक कि चीनी और पानी एकसार न हो जाएं. जब चाशनी तैयार हो जाए तो उसमें कटे हुए खजूर डाल दें और अच्छे से मिक्स कर दें. चाशनी में खजूर मिलाने के बाद इसमें किशमिश, अदरक पेस्ट, लाल मिर्च पाउडर और गरम मसाला डालकर चम्मच की मदद से मिला दें. इन मसालों को मिक्स करने के बाद जीरा पाउडर, काला नमक, हींग सहित अन्य सामग्रियां डालें और आखिर में स्वादानुसार नमक मिलाकर मिक्स करें. अब मीडियम आंच पर चटनी को ३-४ मिनट तक पकने दें. इस दौरान बीच-बीच में चम्मच की मदद से खजूर की चटनी को चलाते रहें. जब चटनी पूरी तरह से पक जाए तो गैस बंद कर दें. स्वाद से भरपूर खजूर की चटनी बनकर तैयार हो चुकी है. इसे खाने के साथ सर्व करें.

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ

पेड़-पौधे मत करो नष्ट,
साँस लेने में होगा कष्ट

मेष :

मेष राशि के जातकों के लिए मई का महीना ढेर सारी खुशियां, सुख-समृद्धि के साथ कुछ चुनौतियां भी लेकर आ रहा है.कार्यक्षेत्र में आपके द्वारा पेश किए जाने वाले प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया जाएगा। सीनियर और जूनियर आपके प्रपोजल की तारीफ करते नजर आएंगे और आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। करियर में जहां आपका ग्राफ उपर उठता हुआ नजर आएगा वहीं कारोबार में आप मनचाहा लाभ अर्जित करने में कामयाब होंगे। इस दौरान आपके धन के भंडार में वृद्धि होगी।

वृषभः

इस माह आप धन लाभ कमाने के लिए शार्टकट या फिर कहें तिकड़म आदि का सहारा ले सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को माह की शुरुआत में अपने कार्यक्षेत्र में अचानक से हुए बड़े बदल ाव के कारण कुछ परेशानी झेलनी पड़ सकती है। इस दौरान अनचाही जगह पर तबादले या फिर अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल जाने के कारण आपका बना-बनाया शेड्यूल बिगड़ सकता है। इस माह वृष राशि के जातकों को बड़ी सूझ-बूझ के साथ अपने सहकर्मियों को मिलाकर काम करने की आवश्यकता रहेगी। माह के तीसरे सप्ताह में आप अपने करियर अथवा कारोबार से जुड़ा कोई बड़ा कदम उठा सकते हैं। हालांकि किसी भी तरह का रिस्क लेते समय आपको अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए अन्यथा आपको बाद में पछतावा करना पड़ सकता है।

मिथुनः

मिथुन राशि के जातकों के लिए मई का महीना तमाम तरह की उपलब्धियां और सफलताओं को समाहित किए हुए है। इस माह आपको जीवन में तरक्की करने के कई अवसर प्राप्त होंगे। आपको घर और बाहर दोनों जगह लोगों का सहयोग और समर्थन मिलता हुआ नजर आएगा। कार्यक्षेत्र में आपके कामकाज की तारीफ होगी। आपके पदोन्नति एवं विभाग में बदलाव की पूरी संभावना है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में जुटे छात्रों का शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। उच्च शिक्षा के लि ए किए जा रहे प्रयास सफल होंगे। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए मई का महीना ठीक-ठीक रहने वाला है।

इस माह कारोबार के सिलसिले में की गई यात्राएं और प्रयास सफल होंगे। माह के मध्य में आपको व्यवसाय में अप्रत्याशित लाभ होने की संभावना है। इस दौरान आप नई योजनाओं से जुड़कर काम कर सकते हैं। माह के उत्तरार्ध में आप किसी बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहेंगे।

कर्कः

कर्क राशि के लिए मई महीने की शुरुआत शुभता और लाभ लिए रहने वाली है। इस दौरान आपके जीवन में अचानक से कुछ चुनौतियों के साथ बड़े अवसर भी सामने आएंगे। माह के प्रारंभ में नौकरीपेशा लोगों को नई संस्थाओं से अच्छे आफर आ सकते हैं। आपकी उन्नति के योग बनेंगे। आपको विभिन्न स्रोतों से धन लाभ की प्राप्ति होगी। सुख-सुविधाओं में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप अपने करियर को नई दिशा देना चाहते हैं तो इसके लिए आपको माह की शुरुआत में आश्वासन तो तमाम जगह से मिलेंगे लेकिन माह के मध्य तक ही आपको असल कामयाबी मिल पाएगी। इस दौरान आपके जीवन से जुड़ी तमाम तरह की समस्याओं का समाधान निकल सकता है। पैतृक संपत्ति की प्राप्ति में अड़चनें दूर होंगी। कोर्ट-कचहरी के मामलों में फैसला आपके हक में आ सकता है। माह के मध्य में आप अपनी आय के स्रोत को बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

सिंह :

सिंह राशि के जातकों के लिए मई का महीना शुभता और सौभाग्य लिए हुए है लेकिन इसे पाने के लिए आपको अपने कर्म की साख को हिलाना पड़ेगा। इस माह आप जितने मनोयोग के साथ किसी भी कार्य को करेंगे आपको उसमें उतनी ही सफलता प्राप्त होगी। माह की शुरुआत में बेरोजगार लोगों को रोजगार की प्राप्ति तो वहीं पहले से नौकरीपेशा लोगों के कामकाज में बदल ाव की संभावना बनेगी। इस दौरान आप अपने करियर-कारोबार में कुछ बड़े प्रयोग करने का रिस्क उठा सकते हैं। ऐसा करने से पहले आपको अपने शुभचिंतकों की सलाह लेना उचित रहेगा। इसके साथ आपको अपने भीतर अहंकार का भाव लाने से बचते हुए वाणी एवं व्यवहार में विनम्रता बनाए रखनी होगी। माह के मध्य में आपको कार्यक्षेत्र में कार्य विशेष के लिए सम्मानित किया जा सकता है।

कन्याः

कन्या राशि के जातक मई माह की शुरुआत में घर-गृहस्थी के कुछ बड़े मसले सुलझाने में व्यस्त रह सकते हैं। इस सिलसिले में आपको लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा भी करनी पड़ सकती है। माह की शुरुआत में आपका मन धर्म-अध्यात्म में ज्यादा लगेगा। इस दौरान आप अचानक से किसी तीर्थ स्थान की यात्रा पर निकल सकते हैं। आपको धार्मिक कार्यों में सहभागिता के अवसर

प्राप्त होंगे। व्यवसाय से जुड़े लोगों को इस दौरान धीमी गति से ही सही लेकिन लाभ की प्राप्ति होगी। बाजार में अपनी साख को बनाए रखने के लिए आपको माह के मध्य में अचानक से अपनी रणनीति में बदलाव करना पड़ सकता है, जिसका फायदा आपको भविष्य में मिल सकता है। यह समय विदेश से जुड़े काम करने वालों के लिए विशेष फायदेमंद रहने वाला है। उन्हें कारोबार में मनचाहा लाभ मिलेगा। माह के उत्तरार्ध में आपको घर-परिवार के सदस्यों के साथ क्वालिटी टाइम बिताने के अवसर प्राप्त होंगे। आपको कुटुंब में बड़ों और छोटों का सहयोग और समर्थन मिलेगा।

तुला :

इस माह तुला राशि वालों को पास के फायदे में दूर का नुकसान करने से बचना होगा। महीने की शुरुआत में आपको करियर-कारोबार आदि को लेकर चुनौती बनी रह सकती है। इस दौरान कार्यक्षेत्र में आपके गुप्त शत्रु सक्रिय रह सकते हैं। तुला राशि के जातकों को मई महीने के पूर्वार्ध में अपने शुभचिंतकों का भी सहयोग और समर्थन कम मिल पाएगा। जिसके चलते उनके भीतर निराशा का भाव बना रहेगा। हालांकि माह के मध्य तक एक बार फिर परिस्थिति बदलेगी और गेंद आपके पाले में आ जाएगी। इस दौरान आप अपनी हिम्मत और मेहनत के बल पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम देते हुए आगे बढ़ेंगे। आप पाएंगे कि जिन मामलों को लेकर आपकी आलोचना हो रही थी अब उसी में सफल परिणाम आने पर लोग आपकी तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। माह के मध्य में करियर-कारोबार के सिल सिले में आपको अपने जन्मस्थान से दूर यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा सुखद और नए संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। यह समय कारोबार की दृष्टि से अनकूल रहने वाला है।

वृश्चिकः

वृश्चिक राशि वाले जातकों को मई महीने में बड़े बदलाव के लिए तैयार रहना होगा। इस माह आपको जीवन में नई रणनीति और बदलाव को अपनाते हुए आगे बढ़ना होगा। खास बात यह कि ये दोनों ही चीजें आपके लिए सकारात्मक और शुभ साबित होंगी। माह की शुरुआत में इष्टमित्र और शुभचिंतक आपके करियर और कारोबार को आगे बढ़ाने में काफी मददगार साबित होंगे। इस दौरान आपका जुड़ाव किसी प्रभावशाली व्यक्ति के साथ हो सकता है। आप नये कारोबार में भी हाथ आजमा सकते हैं। कुल मिलाकर मई महीने की शुरुआत व्यवसाय की दृष्टि से फल दायी रहने वाली है। यदि आपका भूमि-भवन से संबंधित कोई विवाद चल रहा है तो माह के दूसरे हफ्ते तक इसका बातचीत अथवा कोर्ट के निर्णय से समाधान निकल सकता है।

धनुः

धनु राशि के जातकों को मई के महीने में तमाम तरह की परेशानियों और कर्ज आदि से मुक्ति मिल सकती है। यदि आप लंबे समय से रोजी-रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं तो आपको इस माह मनचाहा काम मिल सकता है। हालांकि मिल हुए अवसर को भुनाने के लिए आपको आलस्य छोड़कर समय पर बेहतर तरीके से काम करके दिखाना होगा। नौकरीपेशा लोगों को मई महीने की शुरुआत में खुद को बेहतर साबित करने के लिए अधिक परिश्रम और प्रयास की जरूरत रहेगी। इस दौरान आपको अपने विरोधियों से भी खूब सतर्क रहते हुए दूसरों पर आश्रित रहने से बचना होगा अन्यथा किसी कार्य विशेष को हाथ में लेने के बाद लोगों का सहयोग और समर्थन न मिल पाने पर वह अधूरा रह सकता है। इस माह आपको व्यवसाय में थोड़ा उतार-चढ़ाव देखना पड़ सकता है।माह की शुरुआत में आपको कारोबार में औसत लाभ मिलने की संभावना है। हालांकि यह स्थिति ज्यादा समय तक नहीं रहेगी और माह के मध्य तक आपका कारोबार एक बार फिर से तेजी से आगे बढ़ता हुआ नजर आएगा।

मकरः

इस माह यदि अपने काम को सही समय पर सही तरीके से करने का प्रयास करते हैं तो आपको निश्चित रूप से परिश्रम और प्रयास का पूरा फल मिल सकता है। करियर और कारोबार की दृष्टि से मई का महीना काफी महत्वपूर्ण रहने वाला है। माह की शुरुआत में ही आपको रोजी-रोजगार से जुड़ा कोई शुभ समाचार मिल सकता है। इस दौरान मनचाही जगह पर तबादले या प्रमोशन की मनोकामना पूरी हो सकती है। न सिर्फ नौकरीपेशा लोगों के लिए बल्कि व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भी मई माह की शुरुआत शुभता लिए है। मकर राशि के जातकों को इस माह किसी भी काम को छोटा या बड़ा समझने की बजाय उसे पूरे मनोयोग के साथ करने का प्रयास करना चाहिए। माह के मध्य में आप नई चीजों को सीखने अथवा नए कारोबार की तरफ कदम आगे बढ़ा सकते हैं। ऐसा करते समय आपको स्वजनों का पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगा। इस दौरान आप भूमि-भवन, वाहन आदि पर बड़ी धनराशि खर्च कर सकते हैं।

कुंभः

कुंभ राशि के लिए मई का महीना मिश्रित फल देने वाला रहेगा। करियर-कारोबार की दृष्टि से मई महीने का पूर्वार्ध आपके लिए थोड़ा चुनौती भरा रह सकता है। इस दौरान रोजी-रोजगार के लिए आपको अधिक परिश्रम और प्रयास करना पड़ सकता है। नौकरीपेशा लोगों पर अचानक से अतिरिक्त कार्य का बोझ आ सकता है। इस दौरान मकर राशि के जातकों को अपने काम में ल ापरवाही करने से बचना चाहिए अन्यथा उन्हें अपने सीनियर के गुस्से का शिकार होना पड़ सकता है।

व्यवसाय से जुड़े लोगों को मई महीने के पहले सप्ताह में मनचाहा मुनाफा कमाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। इस दौरान आपको बाजार में अपनी साख बनाए रखने के लि ए अपने कंपटीटर से कड़ा मुकाबला करना पड़ सकता है। इस दौरान आपको अपने कारोबार से जुड़े कागज संबंधी कार्य पूरे करके रखना उचित रहेगा, अन्यथा बेवजह की परेशानियां झेलनी पड़ सकती है।

मीनः

महीने की शुरुआत में आपको अपनी सेहत और संबंध आदि को लेकर बहुत ज्यादा सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। इस दौरान किसी बात को लेकर स्वजनों के साथ मतभेद या बहस हो सकती है। जिससे बचने के लिए आपको अपनी वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता रहेगी। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अपने विरोधियों से खूब सतर्क रहना होगा क्योंकि वे आपके काम में बाधा डालने और आपकी छवि को धूमिल करने के लिए साजिश रच सकते हैं। हालांकि कठिन समय में आपके सीनियर और आपके शुभचिंतक मई महीने के पूर्वार्ध में आपको दूसरे शहर अथवा देश में कारोबार करने का बड़ा अवसर प्राप्त होगा। इस दौरान आपकी आय में अप्रत्याशित वृद्धि के योग बनेंगे। प्रभावशाली लोगों के साथ जुड़ाव होने पर आपके काम तेजी से बनते नजर आएंगे। लाभप्रद योजनाओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा।

श्रीकृष्ण की कर्मभूमि

द्वारका

द्वारका यह भारत के सात प्राचीन शहरों में से एक है, जो द्वारकाधीश मंदिर के लिए प्रसिद्ध है और जहां कृष्ण ने शासन किया था। इसलिए यह हिंदुओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान में से एक है। और भगवान कृष्ण के राज्य की प्राचीन और पौराणिक राजधानी कहा जाता है। द्वारका हिंदुओं के लिए पवित्र तीर्थ स्थान चार धाम और सप्त पुरी में से एक है। कहा जाता हैं की भगवान श्रीकृष्ण ने इस शहर को बसाया यह उनकी कर्मभूमि हैं। माना जाता है कि द्वारका गुजरात की पहली राजधानी थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण मथुरा में अपने मामा कंस को पराजित करने और मारने के बाद यहां बसे थे। मथुरा से चले आए यादव ने यहां अपना राज्य स्थापित किया जब शहर 'कौशल्याली' के नाम से जाना जाता था। इस अवधि के दौरान शहर पुनर्निर्माण किया गया और इसका नाम 'द्वारका' रखा गया।

द्वारका दक्षिण-पश्चिम गुजरात राज्य, पश्चिम-मध्य भारत का प्रसिद्ध नगर है। यह काठियावाड़ प्रायद्वीप के छोटे पश्चिमी विस्तार, ओखामंडल प्रायद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित है। द्वारका कई द्वारों का शहर (संस्कृत में द्वारका या द्वारवती) को जगत् या जिगत के रूप में भी जाना जाता है। द्वारका भगवान कृष्ण की पौराणिक राजधानी थी, जिन्होंने मथुरा से पलायन के बाद इसकी स्थापना की थी। इसकी पवित्रता के कारण यह सात प्रमुख हिंदू तीर्थस्थलों में से एक है, हालांकि इस नगर के मूल मंदिरों को १३७२ में दिल्ली के शासकों ने नष्ट कर दिया था। नगर का अधिकार राजस्व तीर्थयात्रियों से मिलता है; ज्वार-बाजरा, घी, तिलहन और नमक यहां के बंदरगाह से जहाज़ों द्वारा भेजे जाते हैं। वस्तुतः द्वारका दो हैं-

गोमती द्वारका ,बेट द्वारका। गोमती द्वारका धाम है, बेट द्वारका पुरी है। बेट द्वारका के लिए समुद्र मार्ग से जाना पड़ता है। मान्यता है कि द्वारका को श्रीकृष्ण ने बसाया था और मथुरा से यदुवंशियों को लाकर इस संपन्न नगर को उनकी राजधानी बनाया था, किंतु उस वैभव के कोई चिह्न अब नहीं दिखाई देते। कहते हैं, यहाँ जो राज्य स्थापित किया गया उसका राज्यकाल मुख्य भूमि में स्थित द्वारका अर्थात् गोमती द्वारका से चलता था। बेट द्वारका रहने का स्थान था। (यहाँ समुद्र में ज्वार के समय एक तालाब पानी से भर जाता है। उसे गोमती कहते हैं। इसी कारण द्वारका गोमती द्वारका भी कहलाती है)। यह भारत की सात पवित्र पुरियों में से एक है, महानगरी द्वारका के पचास प्रवेश द्वार थे। शायद इन्हीं बहुसंख्यक द्वारों के कारण पुरी का नाम द्वारका या द्वारवती था। पुरी चारों ओर गंभीर सागर से घिरी हुई थी। सुन्दर प्रासादों से भरी हुई द्वारका श्वेत अटारियों से सुशोभित थी। तीक्ष्ण यन्त्र, शतघ्नियां

अनेक यन्त्रजाल और लौहचक्र द्वारका की रक्षा करते थे। द्वारका की लम्बाई बारह योजना तथा चौड़ाई आठ योजन थी तथा उसका उपनिवेश (उपनगर) परिमाण में इसका द्विगुण था। द्वारका के आठ राजमार्ग और सोलह चौराहे थे जिन्हें शुक्राचार्य की नीति के अनुसार बनाया गया था।

द्वारका के भवन मणि, स्वर्ण, वैदूर्य तथा संगमरमर आदि से निर्मित थे। श्रीकृष्ण का राजप्रासाद चार योजन लंबा-चौड़ा था, वह प्रासादों तथा क्रीड़ापर्वतों से संपन्न था। उसे साक्षात् विश्वकर्मा ने बनाया था। श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण के पश्चात् समग्र द्वारका, श्रीकृष्ण का भवन छोड़कर समुद्रसात हो गयी थी जैसा कि विष्णु पुराण के इस उल्लेख से सिद्ध होता है-

द्वारका के पर्यटन स्थलों में जगत् मंदिर; ४८मीटर ऊंचा खूब नक़्काशीदार मीनार वाला पांच मंजिला प्राचीन मंदिर ३२ किमी दूर शंखोद्धार द्वीप में प्रसिद्ध रणछोड़ रायजी मंदिर एवं मत्स्यवतार मंदिर; गोपी झील तथा द्वारिकावन शामिल है। द्वारिका में व्यापक रूप से सीमेंट का काम होता है।

हिन्दुओं के चार धामों में से एक गुजरात की द्वारिकापुरी मोक्ष तीर्थ के रूप में जानी जाती है। पूर्णावतार श्रीकृष्ण के आदेश पर विश्वकर्मा ने इस नगरी का निर्माण किया था। श्रीकृष्ण ने मथुरा से सब यादवों को लाकर द्वारका में बसाया था।

द्वारिकाधीश मंदिर कांकरोली में राजसमन्द झील के किनारे पाल पर स्थित है। मेवाड़ के चार धाम में से एक द्वारिकाधीश मंदिर भी आता है, द्वारिकाधीश काफ़ी समय पूर्व संवत १७२६-२७ में यहाँ ब्रज से कांकरोली पधारे थे। मंदिर सात मंजिला है। भीतर चांदी के सिंहासन पर काले पत्थर की श्रीकृष्ण की चतुर्भुजी मूर्ति है। कहते हैं, यह मूल मूर्ति नहीं है। मूल मूर्ति डाकोर में है। द्वारिकाधीश मंदिर से लगभग २ किमी दूर एकांत में रुक्मिणी का मंदिर है। कहते हैं, दुर्वासा के शाप के कारण उन्हें एकांत में रहना पड़ा। कहा जाता है कि उस समय भारत में बाहर से आए आक्रमणकारियों का सर्वत्र भय व्याप्त था, क्योंकि वे आक्रमणकारी न सिर्फ मंदिरों कि अतुल धन संपदा को लूट लेते थे बल्कि उन भव्य मंदिरों व मूर्तियों को भी तोड़ कर नष्ट कर देते थे। तब मेवाड यहाँ के पराक्रमी व निर्भीक राजाओं के लिये प्रसिद्ध था। सर्वप्रथम प्रभु द्वारिकाधीश को

आसोटिया के समीप देवल मंगरी पर एक छोटे मंदिर में स्थापित किया गया, तत्पश्चात् उन्हें कांकरोली के इस भव्य मंदिर में बड़े उत्साहपूर्वक लाया गया। आज भी द्वारका की महिमा है। यह चार धामों में एक है। सात पुरियों में एक पुरी है। इसकी सुन्दरता बखानी नहीं जाती। समुद्र की बड़ी-बड़ी लहरें उठती है और इसके किनारों को इस तरह धोती है, जैसे इसके पैर पखार रही हों। पहले तो मथुरा ही कृष्ण की राजधानी थी। पर मथुरा उन्होंने छोड़ दी और द्वारका बसाई। द्वारका एक छोटा-सा-कस्बा है। कस्बे के एक हिस्से के चारों ओर चहारदीवारी खिंची है इसके भीतर ही सारे बड़े-बड़े मन्दिर है। द्वारका के दक्षिण में एक लम्बा ताल है। इसे गोमती तालाब कहते है। द्वारका में द्वारकाधीश मंदिर के निकट ही आदि शंकराचार्य द्वारा देश में स्थापित चार मठों में से एक मठ भी है। श्री नागेश्वर ज्योतिर्लिंग गुजरात प्रान्त के द्वारकापुरी से लगभग २५ किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। यह स्थान गोमती द्वारका से बेट द्वारका जाते समय रास्ते में ही पड़ता है। द्वारका से नागेश्वर-मन्दिर के लिए बस,टैक्सी आदि सड़क मार्ग के अच्छे साधन उपलब्ध होते है। रेलमार्ग में राजकोट से जामनगर और जामनगर रेलवे से द्वारका पहुँचा जाता है।

कहा जाता है कृष्ण के भवन के स्थान पर ही रणछोड़ जी का मूल मंदिर है। यह परकोटे के अंदर घिरा हुआ है और सात-मंजिला है। इसके उच्चशिखर पर संभवतः संसार की सबसे विशाल ध्वजा लहराती है। यह ध्वजा पूरे एक थान कपड़े से बनती है। द्वारकापुरी महाभारत के समय तक तीर्थों में परिगणित नहीं थी। जैन सूत्र अंतकृतदशांग में द्वारवती के १२ योजन लंबे, ९ योजन चौड़े विस्तार का उल्लेख है तथा इसे कुबेर द्वारा निर्मित बताया गया है और इसके वैभव और सौंदर्य के कारण इसकी तुलना अल का से की गई है। रैवतक पर्वत को नगर के उत्तरपूर्व में स्थित बताया गया है। पर्वत के शिखर पर नंदन-वन का उल्लेख है। श्रीमद् भागवत में भी द्वारका का महाभारत से मिलता जुलता वर्णन है। इसमें भी द्वारका को १२ योजन के परिमाण का कहा गया है तथा इसे यंत्रों द्वारा सुरक्षित तथा उद्यानों, विस्तीर्ण मार्गों एवं ऊंची अट्टालिकाओं से विभूषित बताया गया है। ■

शाहरूख खान के साथ एक बार फिर से काम करेंगी प्रीति जिंटा!

बॉलीवुड अभिनेत्री प्रीति जिंटा एक फिर से शाहरूख खान के साथ काम करती नजर आ सकती हैं। शाहरूख खान के साथ दिल से, कभी अलविदा ना कहना, कल हो ना हो और वीर जारा जैसी फिल्मों में काम करने के बाद अब प्रीति जिंटा माइंड ब्लोइंग स्क्रिप्ट मिलने पर बॉलीवुड के इस दिग्गज अभिनेता के साथ काम करेंगी। ये बॉलीवुड अभिनेत्री अभी आमिर खान के प्रोडक्शन के बैनर तले बन रही सनी देओल स्टारर फिल्म लाहौर १९४७ में अभिनय कर रही हैं। इसी बीच बॉलीवुड की इस स्टार अभिनेत्री ने एक्स पर अपने फैन्स के के सवालों के जवाब दिए। एक प्रशंसक ने प्रीति जिंटा से पूछा कि मैम आप और शाहरुख कब साथ में फिल्म करेंगे। इस सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि जब भी ऐसी कोई माइंड ब्लोइंग स्क्रिप्ट मिलेगी। जिसे केवल हम दोनों कर सकते हैं तब करेंगे, तब तक इंताजर कीजिए। बॉलीवुड अभिनेत्री प्रीति जिंटा ने शानदार अभिनय के दम पर अपनी विशेष पहचान बनाई है। वह कई सुपरहिट फिल्मों में अपना शानदार अभिनय दिखा चुकी हैं।

रजनीकांत की भी बनेगी बायोपिक!

दक्षिण भारतीय फिल्मों के महानायक रजनीकांत ने भी शानदार अभिनय के दम पर फिल्मी दुनिया में अपनी बादशाहत साबित की है। अब इस अभिनेता की भी बायोपिक आपको देखने को मिल सकती है। इसे बॉलीवुड के जानेमाने फिल्मकार साजिद नाडियाडवाला बना सकते हैं। खबरों के अनुसार, साजिद नाडियाडवाल ा, दिग्गज अभिनेता रजनीकांत की बायोपिक बना सकते हैं। वह रजनीकांत के बहुत बड़े प्रशंसक हैं। बॉलीवुड के जानेमाने फिल्मकार साजिद नाडियाडवाला का मानना है कि रजनीकांत के एक बस कंडक्टर से सुपरस्टार बनने के सफर के बारे में दुनिया को बताना चाहिए। खबरों की मानें तो इस बायोपिक को बनाने के अधिकार खरीदने के लिए साजिद नाडियाडवाला ने रजनीकांत के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर भी कर दिए हैं। वह अभी कहानी की प्रामाणिकता के लिए रजनीकांत और उनके परिवार के साथ लगातार संपर्क साध रहे हैं। बताया जा रहा है कि अभी बायोपिक की स्क्रिप्ट पर काम चल रहा है। इस फिल्म की शूटिंग अगले साल शुरू हो सकती है।

विश्वविख्यात कीस मानवतावादी एवार्ड :२०२१ प्रदान किया गया विश्वविख्यात उद्योगपति रतन टाटा को

मुंबई, २२ अप्रैल २०२४: प्रसिद्ध उद्योगपति और परोपकारी, टाटा समूह के चेयरमैन एमेरिटस रतन टाटा को सोमवार को प्रतिष्ठित कीस मानवतावादी सम्मान २०२१ से सम्मानित किया गया। मुंबई में उनके निजी आवास पर आयोजित किया गया था पुरस्कार समारोह जिसमें उन्हें कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक एवं कंधमाल लोकसभा सांसद महान शिक्षाविद प्रो.अच्युत सामंत द्वारा सम्मानित किया गया। यह सामाजिक विकास और अनुकरणीय कॉर्पोरेट नेतृत्व के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की एक महत्वपूर्ण मान्यता है। इस समारोह में टाटा समूह के अध्यक्ष एन.चंद्रशेखरन और तीन बार के ग्रैमी पुरस्कार विजेता रिकी केज सहित अन्य लोग उपस्थित थे। यह पुरस्कार KIIT और KISS के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत द्वारा प्रदान किया गया। स्वास्थ्य कारणों से, टाटा सार्वजनिक उपस्थिति से बच रहे हैं, जिसके कारण उनके घर पर समारोह की निजी व्यवस्था की गई है।

आमतौर पर प्रशंसा स्वीकार करने में संकोच करने वाले रतन टाटा, KISS मानवतावादी सम्मान के महत्व को पहचानते हुए, डॉ. अच्युत सामंत के व्यक्तिगत अनुरोध के बाद इस पुरस्कार को स्वीकार करने के लि ए सहमत हुए। इस पुरस्कार की घोषणा २०२१ में की गई थी, लेकिन तब COVID महामारी के कारण यह पुरस्कार रतन टाटा प्राप्त करने में असमर्थ थे। अपनी स्वीकृति में टाटा ने KISS और इसके संस्थापक डॉ. सामंत के प्रति आभार व्यक्त किया। 'मैं यह सम्मान पाकर बेहद खुश हूं। यह मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण क्षण है', उन्होंने टिप्पणी की। डॉ. सामंत ने कहा, 'रतन टाटा भारत में एक सम्मानित नाम है, और वह वास्तव में एक अच्छे इंसान हैं। आज उन्हें इस पुरस्कार सम्मान से सम्मानित करना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। रतन टाटा के सामाजिक कार्य और नेतृत्व ने मुझे बचपन से ही प्रभावित किया है। मेरे पिता टाटा कंपनी के कर्मचारी थे। तब से, मैं रतन टाटा का सम्मान करता हूं और उन्हें पसंद करता हूं ।

जब मैं सिर्फ चार साल का था, मेरे पिता की एक ट्रेन दुर्घटना में मृत्यु हो गई' उन्होंने कहा। २००८ में डॉ. अच्युत सामंता द्वारा शुरू किया गया, KISS मानवतावादी सम्मान KIIT और KISS का सर्वोच्च सम्मान है जो दुनिया भर में मानवीय कार्यों की भावना को मूर्त रूप देने वाले व्यक्तियों और संगठनों को मान्यता देने के लिए समर्पित है। इस प्रतिष्ठित सम्मान के पिछले प्राप्तकर्ताओं में वैश्विक नेताओं का एक विविध समूह, नोबेल पुरस्कार विजेता और विभिन्न क्षेत्रों के उल्लेखनीय व्यक्ति शामिल हैं, जो इस पुरस्कार की व्यापक अंतरराष्ट्रीय अपील और सम्मान को प्रदर्शित करते हैं। इस अवसर पर KISS के लगभग ४०,००० छात्रों ने रतन टाटा के स्वस्थ, लंबे और रोग मुक्त जीवन की कामना की।

कीस डीम्ड विश्वविद्यालय को मिला एन ए ए सी का 'ए' ग्रेड का दर्जा

भुवनेश्वर, २२ मार्चः कीस डीम्ड-टू-बी-यूनिवर्सिटी को राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा मान्यता के पहले चक्र में 'ए' ग्रेड के रूप में मान्यता दिया गया है। एन ए ए सी द्वारा मान्यता प्राप्त करने के अपने पहले ही प्रयास में यह उपलब्धि हासिल करने वाला कीस विश्वविद्यालय देश का पहला संस्थान है। एन ए ए सी द्वारा 'ए' ग्रेड मान्यता KISS विश्वविद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति समर्पण का प्रमाण है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने २०१७ में कीस को विश्वविद्यालय का दर्जा दिया था। कीस और कीट के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने कहा, यह आदिवासी बच्चों के लिए हमारे पूरी तरह से निःशुल्क, आवासीय विद्यालय के लिए एक शैक्षणिक शिखर का प्रतीक है। यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही

है कि कीस को २०१७ में डीम्ड यूनिवर्सिटी स्टेटस की मान्यता के बाद अपने पहले चक्र में एन ए ए सी 'A' ग्रेड मिला है। उसने कहा, कीस दुनिया का एकमात्र विश्वविद्यालय है जो आदिवासी छात्रों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करता है।

अकादमिक समुदाय ने इस उपलब्धि को हासिल करने पर खुशी और गर्व व्यक्त किया है, इस मान्यता का श्रेय डॉ. सामंत, उनके समर्पण और दृढ़ता को दिया है। यह मान्यता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विश्वविद्याल य की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। समय पर आवेदन और एन ए ए सी द्वारा 'ए' ग्रेड संस्थान के रूप में सफल मान्यता को कीस विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ी उपलब्धि माना जाता है। डॉ. सामंत ने कीस विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, छात्रों और समर्थकों को उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया, जिन्होंने इस सम्मान को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस सफल ता से विश्वविद्यालय से जुड़े छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों और आदिवासी समुदायों में खुशी की लहर दौड़ गई है।

जेवी महिला विश्वविद्यालय ने किया अच्युत सामंत को मानद डॉक्टरेट उपाधि से सम्मानित

भुवनेश्वर। शिक्षाविद् और समाज सुधारक डॉ. अच्युता सामंत को बुधवार को १४ वें दीक्षांत समारोह में जेवी महिला विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा मानद डॉक्टरेट ऑफ साइंस की उपाधि से सम्मानित किया गया है। यह डॉ. सामंत की ५७वीं मानद डॉक्टरेट उपाधि है, जो शिक्षा, सामाजिक सेवा और महिला सशक्तिकरण में उनके महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार करती है।

जबकि डॉ. सामंत ने इस कार्यक्रम में वस्तुतः भाग लिया, उनके प्रतिनिधि ने विश्वविद्यालय की ओर से सम्मान प्राप्त किया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी और पुडुचेरी की पूर्व उपराज्यपाल डॉ. किरण बेदी मुख्य अतिथि थीं। यह पहली बार है कि सामंता को किसी महिला विश्वविद्यालय से ऐसा सम्मान मिला है। विश्वविद्यालय के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए, डॉ. सामंत ने यह पुरस्कार अपनी मां नीलि मारानी, और कीस और कीट की सभी महिला संकायों और महिला प्रशासनिक कर्मचारियों को समर्पित किया।

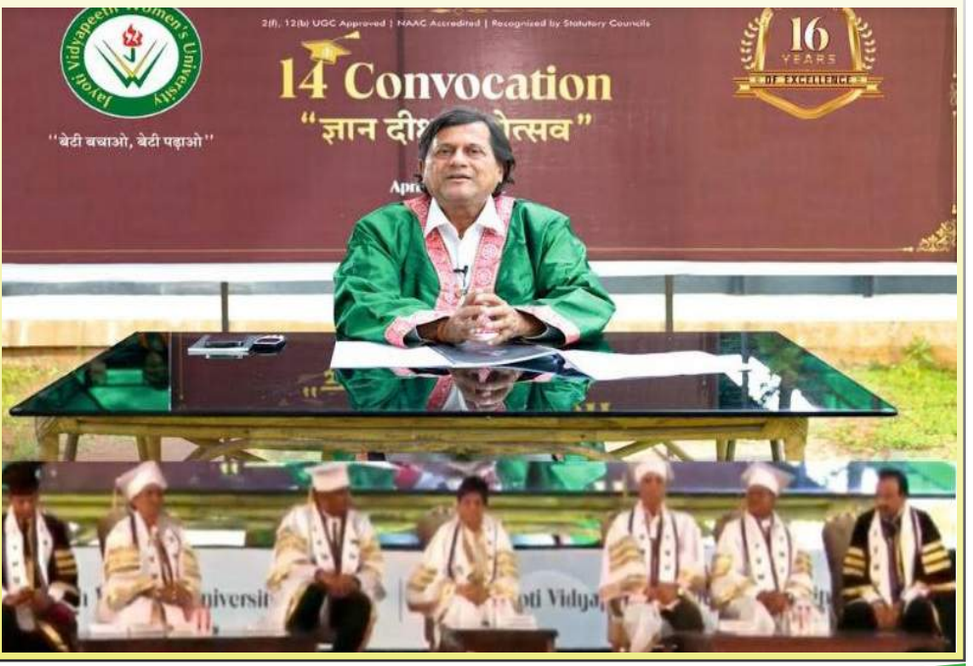

बीजेडी कंधमाल सांसद उम्मीदवार अच्युत सामंत द्वारा दी गई उनकी संपत्ति सूची की घोषणा

भुवनेश्वरः कंधमाल से आगामी लोकसभा चुनाव के लिए बीजेडी उम्मीदवार डॉ. अच्युत सामंत ने अपनी संपत्ति की घोषणा की है। घोषणा के अनुसार उनकी चल और अचल संपत्ति की कीमत कुल १२.४४ लाख रुपये है जिसमें एक सांसद के तौर पर मिलने वाली उनकी सैलरी १० लाख रुपये भी शामिल है। अपने परोपकारी और निस्वार्थ सेवाओं प्रयासों के लिए जाने जाने वाले डॉ. सामंत सात भाइयों के परिवार से हैं। पैतृक संपत्ति में उनका हिस्सा १.२८ लाख रुपये है। इसके अतिरिक्त, उनके पास २०,५०० रुपये की नकदी, १,६०,००० रुपये की जीवन बीमा पॉलिसी और इंडियन बैंक में ४८,००० रुपये का बांड है। यह घोषणा उन्हें ओडिशा में लोकसभा दावेदारों के बीच सबसे मामूली वित्तीय स्थिति वाले उम्मीदवार के रूप में स्थापित करती है।

कीट और कीस जैसे सफल संस्थानों के संस्थापक होने के बावजूद, डॉ. सामंत की संपत्ति इस भौतिकवादी युग में न्यूनतम है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे एक गरीब परिवार से आते हैं और उनका परोपकारी जीवन, विशेषकर शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक समर्पित जीवन है।

निस्वार्थ समाज सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें पिछले तीन दशकों में पूरे ओडिशा के हर घर में एक परिचित और प्रिय जननायक बना दिया है। डॉ. सामंत के जनसेवा तथा लोकसेवा का प्रभाव राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैला हुआ है, जिसका मुख्य कारण उनके द्वारा गरीबी उन्मूलन और सामाजिक उत्थान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शिक्षा के क्षेत्र में उनके अथक प्रयास हैं। २०१९ के लोकसभा चुनाव तक उनके पास कोई उल्लेखनीय चल-अचल संपत्ति नहीं थी और न ही पिछले ५ वर्षों में उन्होंने कोई और संपत्ति जोड़ी है। उनकी चल-अचल संपत्ति न के बराबर है.

भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्राः२०२४ हेतु १० मई,अक्षय तृतीया से पुरी धाम में आरंभ होगा तीन रथ के निर्माण का पवित्र कार्य

ओडिशा प्रदेश भारतवर्ष का एक आध्यात्मिक प्रदेश है जहां के श्री जगन्नाथ पुरी धाम के श्रीमंदिर (लक्ष्मी-मंदिर) में अनादि काल से विराजमान हैं कलियुग के एकमात्र पूर्ण दारुब्रह्म भगवान जगन्नाथ। वे विश्व मानवता के स्वामी हैं अर्थात् जगत के नाथ हैं। वे विश्व शांति,एकता और मैत्री के समस्त देवों के समाहार विग्रह स्वरुप दारुब्रह्म देव हैं। उनकी विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा इस वर्ष आगामी ०७ जुलाई को आषाढ शुक्ल द्वितीया को वहां के श्रीमंदिर के सिंहद्वार ठीक सामने बड़दाण्ड पर भव्यतम रुप में निकलेगी और वह पतितपावनी यात्रा तथा सांस्कृतिक महोत्सव विश्व भाईचारे का संदेश देती हुई लगभग ३ किलोमीटर की दूरी तयकर गुण्डीचा मंदिर में सम्पन्न होगी। भगवान जगन्नाथजी की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए प्रतिवर्ष तीन नये रथों का निर्माण होता है जो श्रीमंदिर के समस्त रीति-नीति के तहत वैशाख मास की अक्षय तृतीया से आरंभ होता है। रथ-निर्माण की अत्यंत गौरवशाली सुदीर्घ परम्परा है। इस कार्य को वंशानुगत क्रम से सुनिश्चित बढईगण ही करते हैं। यह कार्य पूर्णतः शास्त्रसम्मत विधि से संपन्न होता है।

रथ-निर्माण के लिए इसवर्ष,२०२४ में रथ निर्माण के लिए काष्ठ्य संग्रह का पवित्र कार्य विगत १४ फरवरी अर्थात् वसंत पंचमी से आरंभ हुआ।काष्ठसंग्रह दशपल्ला के जंगलों से प्रायः होता है। रथनिर्माण का कार्य पुरी के गजपति महाराजा जो भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक हैं,श्री श्री दिव्यसिंहदेवजी उनके राजमहल श्रीनाहर के ठीक सामने रखखल्ला में प्रतिवर्ष होता है। रथ रथनिर्माण का कार्य वंशपरम्परानुसार भोईसेवायतगण

अर्थात् श्रीमंदिर से जुडे बढईगण ही करते हैं। इनको पारिश्रमिक के रुप में पहले जागीर दी जाती थी लेकिन अब जागीर प्रथा समाप्त होने के बाद उन्हें श्रीमंदिर की ओर से पारिश्रमिक दिया जाता है।रथ-निर्माण में कुल लगभग २०५ प्रकार के अलग-अल ग सेवायतगण सहयोग करते हैं। पौराणिक मान्यता के आधार पर रथ-यात्रा के क्रम में रथ मानव-शरीर का प्रतीक होता है,उसके रथि मानव-आत्मा के प्रतीक,सारथि-मानव-बुद्धि,लगाम मानव-मन तथा रथ के घोडे मानव-इन्द्रीयगण के प्रतीक होते हैं। रथ-निर्माण कार्य में लगभग दो महीने का समय लगता है।

भगवान बलभद्र जी का रथःतालध्वज रथ

यह रथ बलभद्रजी का रथ है जिसे बहलध्वज भी कहते हैं। यह ४४फीट ऊंचा होता है। इसमें १४चक्के लगे होते हैं। इसके निर्माण में कुल ७६३ काष्ठ खण्डों का प्रयोग होता है। इस रथ पर लगे पताकों को नाम उन्नानी है। इस रथ पर ल गे नये परिधान के रुप में लाल-हरा होता है। इसके घोडों का नामःतीव्र,घोर,दीर्घाश्रम और स्वर्णनाभ हैं। घोडों का रंग काल ा होता है। रथ के रस्से का नाम बासुकी होता है।रथ के पार्श्व देव-देवतागण के रुप में गणेश,कार्तिकेय,सर्वमंगला,प्रलंबरी,हल युध,मृत्युंजय,नतंभरा, मुक्तेश्वर तथा शेषदेव हैं। रथ के सारथि हैं मातली तथा रक्षक हैं-वासुदेव।

देवी सुभद्राजी का रथः देवदलन रथ

यह रथ सुभद्राजी का है जो ४३फीट ऊंचा होता है। इसे देवदलन तथा दर्पदलन भी कहा जाता है। इसमें कुल ५९३ काष्ठ खण्डों का प्रयोग होता है। इसपर लगे नये परिधान का रंग लाल-काला होता है। इसमें १२ चक्के होते हैं। रथ के सारथि का नाम अर्जुन है। रक्षक जयदुर्गा हैं। रथ पर लगे पताके का नाम नदंबिका है। रथ के चार घोडे हैं -रुचिका,मोचिका,जीत तथा अपराजिता हैं। घोडों का रंग भूरा है। रथ में उपयोग में आनेवाले रस्से का नाम स्वर्णचूड है। रथ के पार्श्व देव-देवियां हैःचण्डी, चमुण्डी, उग्रतारा, शुलीदुर्गा,वराही,श्यामकाली,मंगल ा और विमला हैं।

भगवान जगन्नाथ का रथः नन्दिघोष रथ

यह रथ भगवान जगन्नाथजी का रथ है जिसकी ऊंचाई ४५फीट होता है। इसमें १६चक्के होते हैं। इसके निर्माण में कुल ८३२ काष्ठ खण्डों का प्रयोग होता है। रथ पर लगे नये परिधानों का रंग लाल-पीला होता है। इसपर लगे पताके का नाम त्रैलोक्यमोहिनी है। इसके सारथि दारुक तथा रक्षक हैं -गरुण। इसके चार घोडे हैःशंख,बलाहक,सुश्वेत तथा हरिदाश्व।इस रथ में लगे रस्से का नामः शंखचूड है। रथ के पार्श्व देव-देवियां हैःवराह, गोवर्धन, कृष्ण,गोपीकृष्ण,नरसिंह, राम, नारायण,त्रिविक्रम,हनुमान तथा रुद्र हैं।

-अशोक पाण्डेय

बड़े सपने ही बुलंदियों को हासिल करने के लिए करते हैं प्रेरित - राज्यपाल

- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर का ६१वें वार्षिक दिवस समारोह को किया संबोधित
- युवाओं को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का महत्व बताया

भूवनेश्वर। ओडिशा के राज्यपाल रघुवर दास ने कहा कि बड़े सपने ही बुलंदियों को हासिल करने के लिए प्रेरित करते हैं और ऊर्जावान युवा ही देश के विकास के इंजन होते हैं। उनका विकास बचपन से ही शुरू होना चाहिए। इसलिए बच्चों की शिक्षा, उन्हें मिलने वाला सही माहौल, काफी हद तक यह तय करता है कि व्यक्ति भविष्य में क्या बनेगा? कैसा बनेगा? उसका व्यक्तित्व कैसा होगा? उन्होंने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (नेप) के महत्व को बताते हुए युवाओं से कहा कि नए भारत की नई आकांक्षाओं, नए अवसरों की पूर्ति का माध्यम है नई शिक्षा नीति। नेप हमारे नए युग की शिक्षा ५-ई जैसे- एंगेज, एक्सप्लोर, एक्सपिरिएंस, एक्सप्रेस और एक्सल पर ध्यान केंद्रित करने पर बहुत जोर देती है। आज क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर के ६१वें वार्षिक समारोह में राज्यपाल ने युवाओं को संबोधित करते हुए ये बातें कहीं। उन्होंने कहा कि यह खुशी की बात है कि यह संस्थान ने स्कूल शिक्षा के साथ-साथ टीचर्स एडुकेशन के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित संस्थान के रूप में अपने आपको स्थापित किया है।

आज क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भूवनेश्वर में ६१वें वार्षिक समारोह का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। समारोह में ओडिशा के राज्यपाल रघुवर दास मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समरोह का शुभारभ मुख्य अतिथि, संस्थान के प्राचार्य प्रोफ़ेसर प्रकाश चंद्र अग्रवाल एवं विद्यार्थी परिषद सलाहकार प्रो. रीतांजलि दाश द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। प्रोफ़ेसर प्रकाश चंद्र अग्रवाल द्वारा मुख्य अतिथि को स्मृतिचिह्न देकर उनका एवं अन्य सभी अतिथियों, मीडिया कर्मियों व संस्थान के अधिकारियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर प्रोफ़ेसर रीतांजलि दाश द्वारा संस्थान के शैक्षणिक सत्र २०२३-२४ की शैक्षणिक और पाठ्येतर विषयों से संबंधित गतिविधियों की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा इस अवसर पर विद्यार्थियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए मुख्य अतिथि व प्राचार्य द्वारा ट्रॉफी और प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। इस समारोह में मनोरम सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। समरोह का समापन राष्टीय गान के साथ - साथ विद्यार्थी परिषद उप-सलहकार डा रश्मिरेखा सेठी द्वारा समस्त आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापन कर किया गया।

अनन्य जगन्नाथ भक्त अशोक पाण्डेय ने भुवनेश्वर राजभवन जाकर अपने शिष्टाचार मुलाकात में ओड़िशा के मान्यवर राज्यपाल श्री रघुवर दास जी को अपनी रचना नव कलेवर और रथयात्रा तथा दिव्य वैदिक संदेश सादर भेंट की.

खांसी में ऐसे करें संतरे का इस्तेमाल

सर्दियों के मौसम सर्दी की खांसी एक ऐसी समस्या है, जो बड़े से लेकर बच्चों तक को परेशान करती है. सर्दी से गले की खराश, छाती में जलन और दर्द, गले में दर्द, कफ समेत कई ऐसी समस्या होती है जिससे सेहत को काफी नुकसान होता है. कई बार अधिक सर्दी होने से कारण चिड़चिड़ापन, बैचेनी जैसी समस्या भी हो सकती है.

ऐसे करें संतरे का इस्तेमाल

- एक कटोरी में थोड़ा सा पानी और नमक लेकर इसे अच्छे से मिलाएं.
- अब इस पानी में एक संतरे को लगभग आधे घंटे के लिए भिगोकर छोड़ दें.
- इसके बाद संतरे को पानी से निकाले और ऊपर के एक हिस्से को टोपी की तरह काट लें.
- इसके बाद संतरे के ऊपरी हिस्से (गूदे यानी पल्प वाले हिस्से में) में कई सारे छेद करें.
- अब इस छेद में थोड़ा सा नमक डालकर संतरे को काटे हुए हिस्से से ढककर स्टीम कीजिए.
- संतरे को १० से २० मिनट तक स्टीम कीजिए, इसके बाद इसे गर्मा-गर्म खाएं.

स्टीम संतरा खाने से खांसी वाले बैक्टीरिया खत्म हो जाते हैं.संतरे को ज्यादा तापमान पर पकाने से विटामिन सी की मात्रा कम हो जाती है और संतरे में मौजूद एल्बिडो के मौजूद तत्व खांसी को ठीक करने में मदद करते हैं. इस तरह से संतरा पकाने से बायोफ्लैवोनॉइड छिलके से पल्प में घुल जाते हैं और खांसी पैदा करने वाले बैक्टीरिया को खत्म करते हैं. ■

सेहत को चुस्त-दुरुस्त रखती है हरी मिर्च

अमेरिका में हुए अध्ययनों से पता चला है कि हरी मिर्च में कैपसेइसिन नामक तत्व पाया जाता है। यह तत्व दर्द से राहत दिलाता है। यही नहीं यह तत्व जीवाणुनाशक भी होता है। विशेषज्ञों के अनुसार इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स भी पाए जाते हैं। अनेक दस्तावेजों से यह सिद्ध हो चुका है कि हजारों साल पहले भी मिर्च की खेती हुआ करती थी और लोग खानपान में इसका प्रयोग करते थे। कहा जाता है कि नई दुनिया की खोज करने वाले महान कोलंबस फ्रेंच गुएना से इस मिर्च को पुर्तगाल लाए थे। वैज्ञानिकों का कहना है कि हम अपने भोजन में हरी मिर्च का प्रयोग करके कई फायदे उठा सकते हैं। सबसे खास बात यह है कि हरी मिर्च में जीरो कैलोरी होती है। इसमें आयरन और विटामिन K भी पाया जाता है। विटामिन K चोट लगने पर खून को बहने से रोकता है। यह ब्लड शुगर के लेवल को बैलेंस सही रखती है। कैपसेइसिन न केवल शरीर को कूल रखने, बल्कि दिमाग को कूल रखने में भी मदद करती है।

इसके सेवन से मेटाबॉल्जिम तेज होता है। यह दिल के लिए भी लाभकारी होती है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन C और बीटाकैरोटिन भी पाया जाता है। यह आंखों की रोशनी के लिए, स्किन और इम्यून सिस्टम के लिए लाभदायक होता है। हरी मिर्च इंडॉर्फिस नामक हार्मोन का स्राव तेज करती है। यह साइनस इंफेक्शन और कोल्ड से राहत दिलाती है। इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर को फ्री रेडिकल्स से बचाते हैं। इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व हृदय संबंधी समस्याओं से बचाने में सहायक होते हैं। हेल्थ एक्सपर्ट्स का कहना है कि हरी मिर्च का सेवन करने से पानी के द्वारा होने वाले इंफेक्शन से आसानी से बचा जा सकता है। ■

जब बच्चों को हो उल्टी...

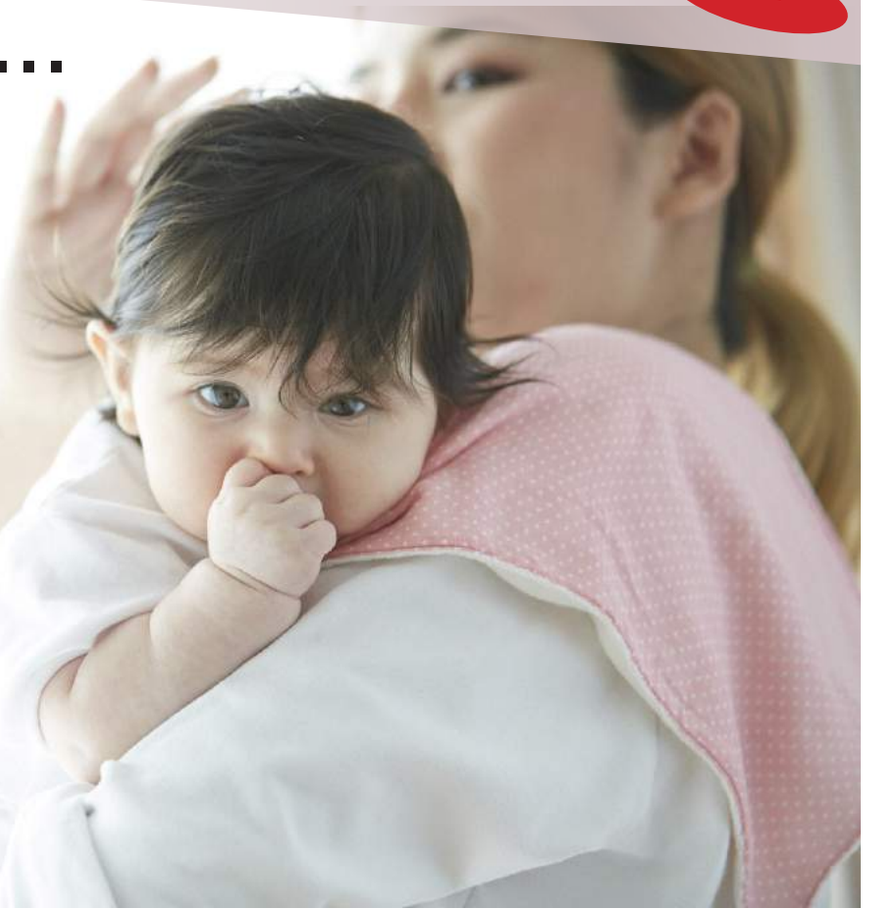

उल्टी आमतौर पर ठीक तरीके से खाना ना पचने की वजह से होती है। लेकिन, छोटे बच्चों को जब उल्टी हो तो क्या उसकी वजह भी अपच या इनडायजेशन ही है? क्या बच्चों का बार-बार या रोज़ उल्टी करना चिंताजनक बात है? अक्सर देखा गया है कि छोटे बच्चों को दूध पिलाने के बाद या कभी-कभी सुबह सोकर उठते ही उल्टियां होने लगती है। लेकिन दिन में एक से दो बार उल्टी करना एकदम नॉर्मल और कॉमन है। अगर, बच्चा बार-बार उल्टी कर रहा है। तो, उसे हाइड्रेटेड रखने की कोशिश करें। शरीर में पानी की कमी के कारण भी उल्टी होती है। तो वहीं बार-बार उल्टी करने से भी शरीर में पानी की कमी या डिहाइड्रेशन की स्थिति होती है। बच्चे को घूंट-घूंट करके पानी पीनें दें। जब बच्चे उल्टी करते हैं तो अक्सर उनका खाना खाने का मन नहीं होता। ऐसे में उन्हें जबरन खाना खिलाने की कोशिश ना करें। अगर, आपका बच्चा बहुत छोटा है। तो वीनिंग फूड के तौर पर फलों का जूस या प्यूरी पिलाएं। इसी तरह, थोड़े बड़े बच्चों को जब उल्टी हो तो, उन्हें चावल का पानी, दाल-चावल या खिचड़ी ही खिलाएं। छोटे बच्चों को भी गैस, एसिडिटी और इनडायजेशन जैसी परेशानियां होती हैं। इसीलिए जब बच्चे उल्टी करें तो उनके सिस्टम को थोड़ा आराम मिलने दें। उन्हें, खुद से खाना मांगने दें। क्योंकि जब उन्हें भूख लगेगी और जब उन्हें खाना खाने की इच्छा होगी तो बच्चे ज़रूर खाना मांगेगे। इस तरह आप फोर्स-फीडिंग से भी बच पाएंगे। ■

चश्मा पहनकर हो गई हैं बोर तो...

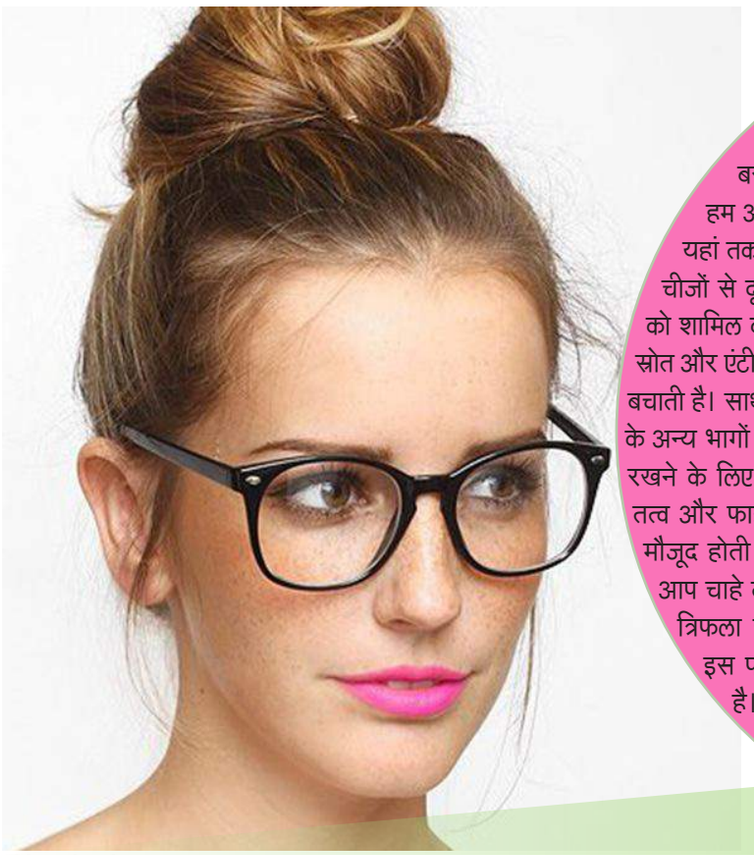

आंखें मनुष्य के लिए प्रकृति की सबसे अनमोल देन है। इन्हीं से हम इस खूबसूरत दुनिया को देखते है। लेकिन फिर भी हम आंखों के प्रति काफी लापरवाही बरतते है। जिसका असर आंखों की रोशनी पर पड़ने लगता है। आजकल हम अपना बहुत सारा समय कम्प्यूटर स्क्रीन, टीवी और सेल फोन पर बिताते है, यहां तक कि सफर करते समय भी हम अपने मोबाइल में ही खोए रहते है। इसलिए इन चीजों से दूरी बनाए रखना बेहद जरूरी है। इसके अलावा आप अपनी डाइट में कुछ चीजों को शामिल करके भी आंखों की रोशनी में सुधार कर सकती है। विटामिन 'ए' का सबसे अच्छा स्रोत और एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होने के कारण गाजर आंखों के सेल और रेडिकल्स को डैमेज से बचाती है। साथ ही गाजर का रस बीटा कैरोटीन का एक अच्छा स्रोत है। इससे रेटिना और आंख के अन्य भागों को असानी से काम करने में हेल्प मिलती है। इसके अलावा आंखों को हेल्दी बनाए रखने के लिए कई विटामिन और मिनरल की जरूरत होती है और गाजर में वह सभी पोषक तत्व और फाइबर पाये जाते हैं जो आंखों के लिए बेहद जरूरी होते हैं। त्रिफला में तीन चीजें मौजूद होती है उसमें से एक आंवला भी है जो आंखों की रोशनी बढ़ाने का काम करता है। आप चाहे तो रोजाना १ ताजा आंवला सर्दियों में रोजाना खाएं। इसके अलावा एक चम्मच त्रिफला चूर्ण रात को एक गिलास पानी में भिगोकर रखें। सुबह कपड़े से छानकर इस पानी से आंखें धो लें। यह इस्तेमाल आंखों के लिए अत्यंत हितकर होता है। हमारी दादी-नानी ड्राई स्किन के लिए क्रीम और लोशन का इस्तेमाल करने की बजाय सरसों के तेल का इस्तेमाल करती थी। क्योंकि इसमें मौजूद पोषक तत्व त्वचा की ड्राईनेस को दूर करके उसमें ग्लो लाते हैं।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-८३

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

१. विक्टोरिया जल प्रपात किस नदी पर है ?

२. वी शताब्दी में भारत में प्रारंभ हुआ प्रथम सुधारबादी आन्दोलन कोनसा था ?

३. ब्लैक हल की घटना किस युद्ध का कारण बनी ?

४. गरीबी उन्नमूलन का नारा सर्वप्रथम किस पंचवर्षीय योजने में दिया गया ?

५. सुभाष चन्द बोस सर्वप्रथम कांग्रेस के अध्यक्ष कब निर्वाचित हुए ?

६. वह कोनसा गवर्नर जनरल है जिसकी म्रत्यु भारत में हुई और यही समाधिस्थ किया गया ?

७. ग्रेट बेरिअर रीफ कहा स्थित है ?

८. वह एक मात्र महादीप जिससे होकर कर्क एवं मकर रेखा गुजरती है ?

९. मराठा और केसरी समाचार पत्रों का संपादन किसने किया था ?

१०. संविधान सभा का गठन किसकी संस्तुति पर किया गया ?

११. संसद के दो अनुक्रमिक सत्रों में कितने माह से अधिक अंतर नहीं हो सकता ?

१२. संसद की कार्यवाही में, बिना संसद का सदस्य हुए कौन भाग ले सकता है ?

१३. योजना आयोग का कौन पदेन अध्यक्ष होता है ?

१४. भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की नियुक्ति किसके द्वारा की जाती है ?

१५. पौधों में बाष्पोत्सर्जन किस उपकरण से नापा जाता है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः.....

पूरा पताः .....

.....

.....

.....

फोन नं.: .....

माचिस का आविष्कार...

देश और दुनिया में माचिस का इस्तेमाल हम सभी बहुत लंबे समय से करते चले आ रहे हैं। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा शख्स होगा जिसने माचिस का उपयोग नहीं किया हो। पहले के समय में जब माचिस का आविष्कार नहीं हुआ था तब दो पत्थरों को आपस में रगड़ कर आग जलाई जाती थी। लेकिन माचिस का आविष्कार हो जाने के बाद आग जलाने की प्रक्रिया बहुत ही आसान हो गई। लेकिन बहुत कम लोगों को जानकारी है कि माचिस का आविष्कार किसने किया था और इसका इतिहास क्या है।

माचिस का आविष्कार ३१ दिसंबर १८२७ को माचिस का आविष्कार ब्रिटिश वैज्ञानिक जॉन वॉकर ने किया था। जॉन वॉकर ने एक ऐसी माचिस की इस्टिक यानी तीली बनाई थी जिसे खुदरी जगह पर रगड़गा गया तो आग जलने लगी थी। उस वक्त के दौर में यह बहुत ही खतरनाक था। क्योंकि इसके इस्तेमाल के दौरान काफी लोग दुर्घटना के शिकार भी हुए थे। रिपोर्ट की मानें तो ब्रिटिश वैज्ञानिक जॉन वॉकर ने इसमें पोटेशियम क्लोरेट, गोंद, स्टार्च, एंटीमनी सल्फाइड को लकड़ी पर लपेटा था। इस लेप को सुखाने के बाद लकड़ी को खुदरी सतह पर रगड़ा गया तो आग जल गई। रिपोर्ट के अनुसार, बाद में

सैमुअल जॉन्स नाम के शख्स ने इसका पेटेंट करवा लिया था। जिसका नाम लूसीफर मैच (माचिस) था। क्या है माचिस का इतिहास वर्ष १६८० में रॉबर्ट नाम के एक आयरिश भौतिक वैज्ञानिक ने माचिस की तीली बनाने का पहला प्रयास किया था।

भौतिक वैज्ञानिक ने आग जलाने के लिए फास्फोरस और सल्फर का इस्तेमाल किया था। लेकिन दुर्भाग्य से उनकी कोशिशों का कोई भी सफल परिणाम नहीं निकल सका। जिसका कारण बताया गया था कि वैज्ञानिक के द्वारा प्रयोग में ल ी गई सामग्री बहुत ही ज्यादा ज्वलनशील थी। हाल ांकि इसी तरह से एक सदी पूरी बीत गई। लेकिन शोधकर्ता अभी भी संरक्षित विधि का विकास नहीं कर पाए थे कि कैसे एक आत्मरोशनी की लो बनाई जा सके जिसका उपयोग आम जनता भी कर सके।

१७वीं शताब्दी के मध्य में केमिस्ट हेनिंग ब्रांट के अलग-अलग संसाधनों के जरिए सेफ्टी मैच बनाने

की कुछ प्रेरणा मिली थी। इन्होंने अपनी पूरी लाइफ अलग-अलग धातुओं से गोल्ड को शुद्ध करने में लगा दी। इन्होंने अपने शोध के दौरान यह जानकारी हासिल की कि शुद्ध फास्फोरस को कैसे निकाला जा सकता है। इसके दहनशील गुणों का परीक्षण कैसे किया जा सकता है। वैज्ञानिक ने अपनी इस बेहतरीन जांच में फास्फोरस को अलग करने की विधि को संशोधित किया था। उनके द्वारा बनाए गए नोट्स भविष्य की संभावित खोजों में एक मील का पत्थर साबित हुए। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि ब्रिटेन के वैज्ञानिक जॉन वॉकर को आधुनिक माचिस की खोज का श्रेय जाता है। उन्होंने ३१ दिसंबर १८२७ को माचिस का आविष्कार किया था। लेकिन वैज्ञानिक जॉन वॉकर के द्वारा बनाई गई माचिस का इस्तेमाल करने में काफी मेहनत लगती थी।■ साभारः हरिभूमि

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

बेटी पढ़ाओ

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

असगर भाई को यह तो पसंद नहीं कि कोई उन्हें 'पाकिस्तानी' कहे किंतु इब्राहीमपुरा में आकर उन्हें वाकई सुकून हासिल हुआ था। यहाँ अपनी हुकूमत है। गैर दब के रहते हैं। इत्मीनान से हरेक मजहबी तीज-त्योहारों का लुत्फ उठाया जाता है। रमजान के महीने में क्या छटा दिखती है यहाँ। पूरे महीने उत्सव का माहौल रहता है। चाँद दिखा नहीं कि हंगामा शुरू हो जाता है। 'तरावीह' की नमाज में भीड़ उमड़ पड़ती है। यहाँ साग-सब्जी कम खाते हैं लोग क्योंकि सस्ते दाम में बड़े का गोश्त जो आसानी से मिल जाता है। फिजा में सुब्हो-शाम अजान और दरूदो-सलात की गूँज उठती रहती है। 'शबे-बरात' के मौके पर स्थानीय मजार शरीफ में गजब की रौनक होती है। मेला, मीनाबाजार लगता है और कव्वाली के शानदार मुकाबले हुआ करते हैं। मुहर्रम के दस दिन शहीदाने-कर्बला के गम में डूब जाता है इब्राहीमपुरा! सिर्फ मियाँओं की तूती बोलती है यहाँ। किसकी मजाल की आँख दिखा सके। आँखें निकाल कर हाथ में धर दी जाएँगी। एक से एक 'हिस्ट्री-शीटर' हैं यहाँ।

गहरी जड़ें

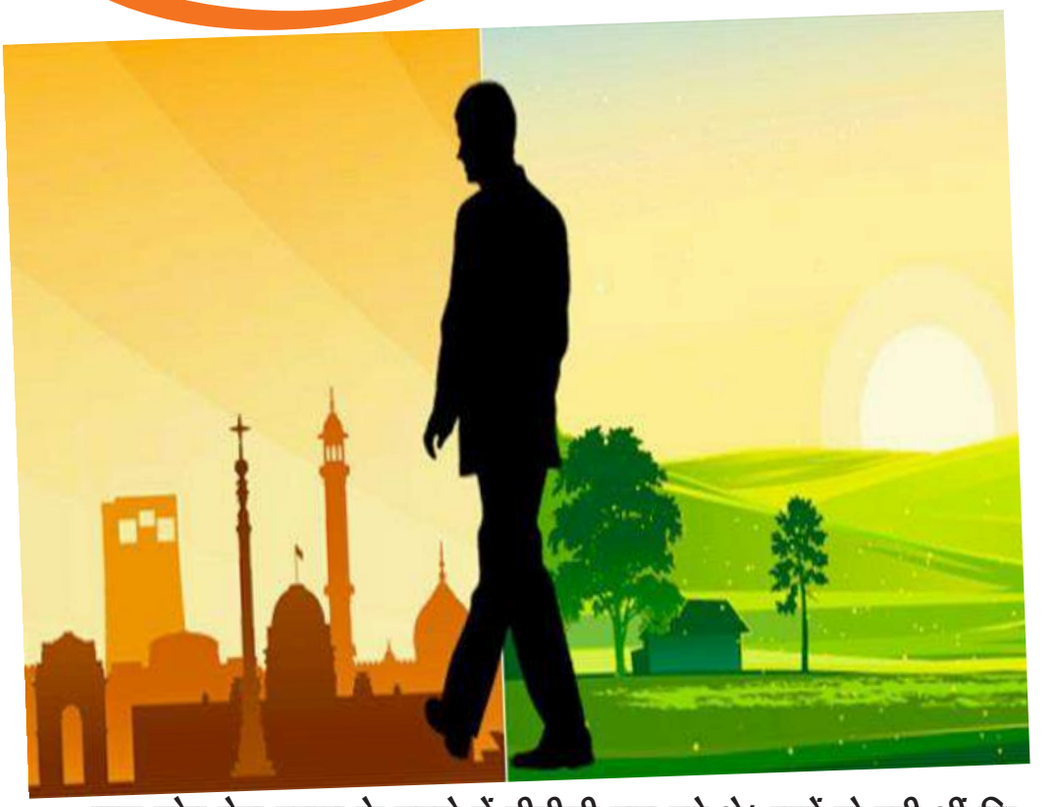

असगर भाई बड़ी बेचैनी से जफर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जफर उनका छोटा भाई है। उन्होंने सोच रखा है कि वह आ जाए तो फिर निर्णय ले ही लिया जाए, ये रोज-रोज की भय-चिंता से छुटकारा तो मिले! इस मामले को ज्यादा दिन टालना अब ठीक नहीं। कल फोन पर जफर से बहुत देर तक बातें तो हुई थीं। उसने कहा था कि - 'भाईजान आप परेशान न हों, मै आ रहा हूँ।' असगर भाई 'हाइपर-टेंशन' और 'डायबिटीज' के मरीज ठहरे। छोटी-छोटी बात से परेशान हो जाते हैं। मन बहलाने के लिए जफर बैठक में आए। मुनीरा टीवी देख रही थी। जब से 'गोधरा-प्रकरण' चालू हुआ, घर में इसी तरह 'आज-तक' और 'स्टार-प्लस' चैनल को बारी-बारी से चैनल बदल कर घंटों से देखा जा रहा था। फिर भी चैन न पड़ता था तो असगर भाई रेडियो-ट्रांजिस्टर पर बीबीसी के समाचारों से देशी मीडिया के समाचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने लगते।

तमाम चैनलों में नंगे-नृशंस यथार्थ को दर्शकों तक पहुँचाने की होड़-सी लगी हुई थी। मुनीरा के हाथों से असगर ने रिमोट लेकर चैनल बदल दिया। 'डिस्कवरी-चैनल' में हिरणों के झुंड का शिकार करते शेर को दिखाया जा रहा था। शेर गुर्राता हुआ हिरणों को दौड़ा रहा था। अपने प्राणों की रक्षा करते हिरण अंधाधुंध भाग रहे थे।

असगर भाई सोचने लगे कि इसी तरह तो आज डरे-सहमे लोग गुजरात में जान बचाने के लिए भाग रहे हैं। उन्होंने फिर चैनल बदल दिया। निजी समाचार-चैनल का एक दृश्य कैमरे का सामना कर रहा था। काँच की बोतलों से पेट्रोल-बम का काम लेते अहमदाबाद के बहुसंख्यक लोग और वीरान

कुछ लोग पेश-इमाम के हुजरे में बीबीसी सुन रहे थे। बातें हो रही थीं कि पाकिस्तान के सदर को इस हत्याकांड की खबर उसी समय मिल गई, जबकि भारत में इस बात का प्रचार कुछ देर बाद हुआ। ये भी चर्चा थी कि फसादात की आँधी शहरों से होती अब गाँव-गली-कूचों तक पहुँचने जा रही है। उन लोगों से जब उन्होंने दरयाफ्त की तो यही सलाह मिली - 'बरखुरदार! अब पढ़ाई और इम्तेहानात सब भूलकर घर की राह पकड़ लो, क्योंकि ये फसादात खुदा जाने जब तक चलें।

हँसी आ गई।

उन्होंने देखा टीवी में वही संवाददाता दिखाई दे रहे थे जो कि कुछ दिनों पूर्व झुलसा देने वाली गर्मी में अफगानिस्तान की पथरीली गुफाओं, पहाड़ों और युद्ध के मैदानों से तालिबानियों को खदेड़ कर आए थे, और बमुश्किल तमाम अपने परिजनों के साथ चार-छह दिन की छुट्टियाँ ही बिता पाए होंगे कि उन्हें पुनः एक नया 'टास्क' मिल गया।

अमेरिका का रक्त-रंजित तमाशा, लाशों के ढेर, राजनीतिक उठापटक, और अपने चैनल के दर्शकों की मानसिकता को 'कैश' करने की व्यवसायिक दक्षता उन संवाददाताओं ने प्राप्त जो कर ली थी।

असगर भाई ने यह विडंबना भी देखी कि किस तरह नेतृत्वविहीन अल्पसंख्यक समाज की विध्वसंक ओसामा बिन लादेन के साथ सहानुभूति बढ़ती जा रही थी।

जबकि 'डबल्यूटीओ' की इमारत सिर्फ अमरीका की बपौती नहीं थी। वह इमारत तो मनुष्य की मेधा और विकास की दशा का जीवंत प्रतीक थी। जिस तरह से बामियान के बुद्ध एक पुरातात्विक धरोहर थे।

'डबल्यूटीओ' की इमारत में काम करने का स्वप्न सिर्फ अमरीकी ही नहीं बल्कि तमाम देशों के नौजवान नागरिक देखा करते हैं। बामियान प्रकरण हो या कि ग्यारह सितंबर की घटना, असगर भाई जानते हैं कि ये सब गैर-इस्लामिक कृत्य हैं, जिसकी दुनिया भर के तमाम अमनपसंद मुसलमानों ने कड़े शब्दों में निंदा की थी।

लेकिन फिर भी इस्लाम के दुश्मनों को संसार में भ्रम फैलाने का अवसर मिल आया कि इस्लाम आतंकवाद का पर्याय है।

असगर भाई को बहुसंख्यक हिंसा का एकतरफा तांडव और शासन-प्रशासन की चुप्पी देख और भी निराशा हुई थी।

ऐसा ही तो हुआ था उस समय जब इंदिरा गांधी का मर्डर हुआ था।

असगर तब बीस-इक्कीस के रहे होंगे।

उस दिन वह जबलपुर में एक लॉज में ठहरे थे।

एक नौकरी के लिए साक्षात्कार के सिलसिले में उन्हें बुलाया गया था।

वह लॉज एक सिख का था।

उन्हें तो खबर न थी कि देश में कुछ भयानक हादसा हुआ है। वह तो प्रतियोगिता और साक्षात्कार से संबंधित किताबों में उलझे हुए थे।

शाम के पाँच बजे उन्हें कमरे में धूम-धड़ाम की आवाजें सुनाई दीं।

वह कमरे से बाहर आए तो देखा कि लॉज के रिसेप्शन काउंटर को लाठी-डंडे से लैस भीड़ ने घेर रखा था। वे सभी लॉज के सिख मैनेजर करनैल सिंह से बोल रहे थे कि वह जल्द से जल्द लॉज को खाली करवाए, वरना अन्जाम ठीक न होगा।

मैनेजर करनैल सिंह घिघिया रहा था कि स्टेशन के पास का यह लॉज मुद्दतों से परदेसियों की मदद करता आ रहा है।

वह बता रहा था कि वह सिख जरूर है किंतु खालिस्तान का समर्थक नहीं। उसने यह भी बताया कि वह एक पुराना कांग्रेसी है। वह एक जिम्मेदार हिंदुस्तानी नागरिक है। उसके पूर्वज जरूर पाकिस्तानी थे, लेकिन इस बात में उन बेचारों का दोष कहाँ था। वे तो धरती के उस भूभाग में रह रहे थे जो कि अखंड भारत का एक अंग था। यदि तत्कालीन आकाओं की राजनीतिक भूख नियंत्रित रहती तो बँटवारा कहाँ होता?

कितनी तकलीफें सहकर उसके पूर्वज हिंदुस्तान आए। कुछ करोलबाग दिल्ली में तथा कुछ जबलपुर में आ बसे। अपने बिखरते वजूद को समेटने का पहाड़-प्रयास किया था उन बुजुर्गों ने। शरणार्थी मर्द-औरतें और बच्चे सभी मिलजुल, तिनका-तिनका जोड़कर आशियाना बना रहे थे।

करनैल सिंह रो-रोकर बता रहा था कि उसका तो जन्म भी इसी जबलपुर की धरती में हुआ है।

भीड़ में से कई चिल्लाए - 'मारो साले को... झूट बोल रहा है। ये तो पक्का आतंकवादी है।'

उसकी पगड़ी उछाल दी गई।

उसे काउंटर से बाहर खींचा गया।

जबलपुर वैसे भी मार-धाड़, लूट-पाट जैसे 'मार्शल-आर्ट' के लिए कुख्यात है।

असगर की समझ में न आ रहा था कि सरदारजी को काहे इस तरह से सताया जा रहा है।

तभी वहाँ एक नारा गूँजा -

'पकड़ो मारों सालों को

इंदिरा मैया के हत्यारों को!'

असगर भाई का माथा ठनका।

अर्थात प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या हो गई!

उसे तो फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथ के अलावा और कोई सुध न थी।

यानी कि लॉज का नौकर जो कि नाश्ता-चाय देने आया था सच कह रहा था।

देर करना उचित न समझ, लॉज से अपना सामान लेकर वह तत्काल बाहर निकल आए।

नीचे अनियंत्रित भीड़ सक्रिय थी।

सिखों की दुकानों के शीशे तोड़े जा रहे थे। सामानों को लूटा जा रहा था। उनकी गाड़ियों में, मकानों में आग लगाई जा रही थी।

असगर भाई ने यह भी देखा कि पुलिस के मुट्ठी भर सिपाही तमाशाई बने निष्क्रिय खड़े थे।

जल्दबाजी में एक रिक्शा पकड़कर वह एक मुस्लिमबहुल इलाके में आ गए।

अब वह सुरक्षित थे।

उसके पास पैसे ज्यादा न थे।

उन्हें परीक्षा में बैठना भी था।

पास की मस्जिद में वह गए तो वहाँ नमाजियों की बातें सुनकर दंग रह गए।

कुछ लोग पेश-इमाम के हुजरे में बीबीसी सुन रहे थे। बातें हो रही थीं कि पाकिस्तान के सदर को इस हत्याकांड की खबर उसी समय मिल गई, जबकि भारत में इस बात का प्रचार कुछ देर बाद हुआ।

ये भी चर्चा थी कि फसादात की आँधी शहरों से होती अब गाँव-गली-कूचों तक पहुँचने जा रही है।

उन लोगों से जब उन्होंने दरयाफ़्त की तो यही सलाह मिली - 'बरखुरदार! अब पढ़ाई और इम्तेहानात सब भूलकर घर की राह पकड़ लो, क्योंकि ये फसादात खुदा जाने जब तक चलें।

बात उनकी समझ में आई।

वह उसी दिन घर के लिए चल दिए। रास्ते भर उन्होंने देखा कि जिस प्लेटफार्म पर गाड़ी रुकी सिखों पर अत्याचार के निशानात साफ नजर आ रहे थे।

उनके अपने नगर में भी हालात कहाँ ठीक थे।

वहाँ भी सिखों के जान-माल को निशाना बनाया जा रहा था।

टीवी और रेडियो से सिर्फ इंदिरा-हत्याकांड और खालिस्तान आंदोलन के आतंकवादियों की ही बातें बताई जा रही थीं।

लोगों की संवेदनाएँ भड़क रही थीं।

खबरें उठतीं कि गुरुद्वारा में सिखों ने इंदिरा हत्याकांड की खबर सुन कर पटाखे फोड़े और मिठाइयाँ बाँटी हैं।

अफवाहों का बाजार गर्म था।

दंगाइयों-बलवाइयों को डेढ़-दो दिन की खुली छूट देने के बाद प्रशासन जागा और फिर उसके बाद नगर

COMPLETE SOLUTION FOR KNEE PAIN BY
Dr. Ortho
M.R.P. : ₹731
OFFER PRICE
₹449

FW16 PACK OF 3
MEN'S SANDAL
MRP ₹ 999/-
SHOP NOW
₹499/-
•COMFORTABLE •STYLISH •DURABLE •ANTI SKID & SLIP RESISTANT •LIGHT WEIGHT •COMFORTABLE

36 PCS
DESIGNER DINNER SET
MRP ₹ 2,500/-
SHOP NOW ₹999/-

NELCON
10 PCS STEEL
PUSH & LOCK BOWL SET
- Transparent Lid
SHOP NOW
MRP ₹ 1,500/- ₹499/-
•Air Tight Containers •Keeps Your Food Fresh
•Multipurpose food storage option
•100 % Food Grade Stainless Steel
•See through transparent Lid •Easy Grip
•Leak Proof •Carry As lunch Box •Fridge Friendly

में कर्फ़्यू लगाया गया।

यदि वह घिनौनी हरकत कहीं मुस्लिम आतंकवादियों ने की होती तो?

उस दफा सिखों को सबक सिखाया गया था।

इस बार...

जफर आ जाएँ तो फैसला कर लिया जाएगा।

जैसे ही असगर भाई कुछ समर्थ हुए, उन्होंने अपना मकान मुस्लिमबहुल इलाके में बनवा लिया था।

जफर तो नौकरी कर रहा है किंतु उसने भी कह रखा है कि भाईजान मेरे लिए भी कोई अच्छा सा सस्ता प्लॉट देख रखिएगा।

अब अब्बा को समझाना है कि वे उस भूत-बंगले का मोह त्याग कर चले आएँ इसी इब्राहीमपुरा में।

इब्राहीमपुरा 'मिनी-पाकिस्तान' कहलाता है।

असगर भाई को यह तो पसंद नहीं कि कोई उन्हें 'पाकिस्तानी' कहे किंतु इब्राहीमपुरा में आकर उन्हें वाकई सुकून हासिल हुआ था। यहाँ अपनी हुकूमत है। गैर दब के रहते हैं। इत्मीनान से हरेक मजहबी तीज-त्योहारों का लुत्फ उठाया जाता है। रमजान के महीने में क्या छटा दिखती है यहाँ। पूरे महीने उत्सव का माहौल रहता है। चाँद दिखा नहीं कि हंगामा शुरू हो जाता है। 'तरावीह' की नमाज में भीड़ उमड़ पड़ती है।

यहाँ साग-सब्जी कम खाते हैं लोग क्योंकि सस्ते दाम में बड़े का गोश्त जो आसानी से मिल जाता है।

फिजा में सुब्हो-शाम अजान और दरूदो-सलात की गूँज उठती रहती है।

'शबे-बरात' के मौके पर स्थानीय मजार शरीफ में गजब की रौनक होती है। मेला, मीनाबाजार लगता है और कव्वाली के शानदार मुकाबले हुआ करते हैं।

मुहर्रम के दस दिन शहीदाने-कर्बला के गम में डूब जाता है इब्राहीमपुरा!

सिर्फ मियाँओं की तूती बोलती है यहाँ।

किसकी मजाल की आँख दिखा सके। आँखें निकाल कर हाथ में धर दी जाएँगी।

एक से एक 'हिस्ट्री-शीटर' हैं यहाँ।

अरे, खालू का जो तीसरा बेटा है यूसुफ वह तो जाफरानी-जर्दा के डिब्बे में बम बना लेता है।

बड़ी-बड़ी राजनीतिक हस्तियाँ भी हैं जिनका संरक्षण इलाके के बेरोजगार नौजवानों को मिला हुआ है।

असगर भाई को चिंता में डूबा देख मुनीरा ने टीवी ऑफ कर दिया।

असगर भाई ने उसे घूरा -

'काहे की चिंता करते हैं आप... अल्लाह ने जिंदगी दी है तो वही पार लगाएगा। आप के इस तरह सोचने से क्या दंगे-फसाद बंद हो जाएँगे?'

असगर भाई ने कहा - 'वो बात नहीं, मैं तो अब्बा के बारे में ही सोचा करता हूँ। कितने जिद्दी हैं वो। छोड़ेंगे नहीं दादा-पुरखों की जगह... भले जान चली जाए।'

'कुछ नहीं होगा उन्हें, आप खामखाँ फिक्र किया करते हैं। सब ठीक हो जाएगा।'

'खाक ठीक हो जाएगा। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ? बुढ़ऊ सठिया गए हैं और कुछ नहीं। सोचते हैं कि जो लोग उन्हें सलाम किया करते हैं मौका आने पर उन्हें बख्श देंगे। ऐसा हुआ है कभी। जब तक अम्मा थीं तब तक ठीक था अब वहाँ क्या रखा है कि उसे अगोरे हुए हैं।'

मुनीरा क्या बोलती। वह चुप ही रही।

असगर भाई स्मृति के सागर में डूब-उतरा रहे थे।

अम्मा बताया करती थीं कि सन इकहत्तर की लड़ाई में ऐसा माहौल बना कि लगा उजाड़ फेंकेंगे लोग। आमने-सामने कहा करते थे कि हमारे मुहल्ले में तो एक ही पाकिस्तानी घर है। चींटी की तरह मसल देंगे।

'चींटी की तरह... हुँह..' असगर भाई बुदबुदाए।

कितना घबरा गई थीं तब वो। चार बच्चों को सीने से चिपकाए रखा करती थीं।

अम्मा घबराती भी क्यों न, अरे इसी सियासत ने तो उनके एक भाई की पार्टीशन के समय जान ले ली थी।

'जानती हो पिछले माह जब मैं घर गया तो वहाँ देखा कि हमारे घर की चारदीवारी पर स्वास्तिक का निशान बनाया गया है। बाबरी मस्जिद के बाद उन लोगों का मन बढ़ गया है। मैंने जब अब्बा से इस बारे में बात की तो वह जोर से हँसे और कहे कि ये सब लड़कों की शैतानी है। ऐसी-वैसी कोई बात नहीं। अब तुम्हीं बताओ कि मैं चिंता क्यों न करूँ?'

'अब्बा तो हँसते-हँसते ये भी बताए कि जब 'एंथ्रेक्स' का हल्ला मचा था तब चंद स्कूली बच्चों ने चाक मिट्टी को लिफाफे में भरकर प्रिंसिपल के पास भेज दिया था। बड़ा बवाला मचा था। अब्बा हर बात को 'नार्मल' समझते हैं।'

'अब्बा तो वहाँ के सबसे पुराने वाशिंदों में से हैं। सुबह-शाम अपने बच्चों को 'दम-करवाने' सेठाइनें आया करती हैं। अबा के साथ कहीं जाओ तो उन्हें कितने गैर लोग सलाम-आदाब किया करते हैं। उन्हें तो सभी जानते-मानते हैं।' मुनीरा ने अब्बा का पक्ष लिया।

'खाक जानते-मानते हैं। आज नौजवान तो उन्हें जानते भी नहीं और पुराने लोगों की आजकल चलती कहाँ है? तुम भी अच्छा बताती हो। सन चौरासी के दंगे में कहाँ थे पुराने लोग? सब मन का बहकावा है। भीड़ के हाथ में जब हुकूमत आ जाती है तब कानून गूँगा-बहरा हो जाता है।'

मुनीरा को लगा कि वह बहस में टिक नहीं पाएगी इसलिए उसने विषय-परिवर्तन करना चाहा -

'छोटू की 'मैथ्स' में ट्यूशन लगानी होगी। आप उसे लेकर बैठते नहीं और 'मैथ्स' मेरे बस का नहीं।'

'वह सब तुम सोचो। जिससे पढ़वाना हो पढ़वाओ। मेरा दिमाग ठीक नहीं। जफर आ जाए तो अब्बा से आर-पार की बात कर ही लेनी है।'

तभी फोन की घंटी घनघनाई।

मुनीरा फोन की तरफ झपटी। वह फोन घनघनाने पर इसी तरह हड़बड़ा जाती है।

फोन जफर का था, मुनीरा ने रिसीवर असगर भाई की तरफ बढ़ा दिया।

असगर भाई रिसीवर ले लिया -

'वा अलैकुम अस्स्लाम! जफर...! कहाँ से? यहाँ मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।'

'अब्बा पास में ही है क्या? जरा बात तो कराओ।'

मुनीरा की तरफ मुखातिब होकर बोले - 'जफर भाई का फोन है। यहाँ न आकर वह सीधे अब्बा के पास से चला गया है।'

'सलाम वालैकुम अब्बा... मैं आप की एक न सुनूँगा। आप छोड़िए वह सब और जफर को लेकर सीधे मेरे पास चले आइए।'

पता नहीं उधर से क्या जवाब मिला कि असगर भाई ने रिसीवर पटक दिया।

मुनीरा चिड़चिड़ा उठी -

'इसीलिए कहती हूँ कि आप से ज्यादा होशियार तो जफर भाई हैं। आप खामखाँ 'टेंशन' में आ जाते है। डॉक्टर ने वैसे भी आपको फालतू की चिंता से मना किया है।'

बस इतना सुनना था कि असगर भाई हत्थे से उखड़ गए।

'तुम्हारी इसी सोच पर मेरी सुलग जाती है। मेरे वालिद तुम्हारे लिए 'फालतू की चिंता' बन गए। अपने अब्बा के बारे मैं चिंता नहीं करूँगा तो क्या तुम्हारा भाई करेगा?'

ऐसे मौकों पर मुनीरा चुप मार ले तो बात बढ़े। अपने एकमात्र भाई के बारे में अपशब्द वह बर्दाश्त नहीं कर पाती है, किंतु जाने क्यों मुनीरा ने आज जवाब न दिया।

असगर भाई ने छेड़ा तो था किंतु मुनीरा को चुप पाकर उनका माथा ठनका, इसलिए सुलहकुन आवाज में वह बोल -

'लगता है कि अब्बा नहीं मानेंगे, वहीं रहेंगे...!' ■

बेनाम रिश्ता

चित्राजी निमंत्रण-पत्र के साथ हाथ से लिखे मनुहार पत्र के हर अक्षर को अपनी नजरों से आँकती उनमें अंतर्निहित भावों को सहलाने लगीं। कई बार पढ़े पत्र। सोचा विवाह में इकट्ठे लोग पूछेंगे–मैं कौन हूँ? क्या रिश्ता है शालिग्रामजी से मेरा? क्या जवाब दूँगी मैं? क्या जवाब देंगे शालिग्रामजी? दोनों के बीच बने संबंध को मैंने कभी मानस पर उतारा भी नहीं। नाम देना तो दूर की बात थी। बार-बार फटकारने के बाद भी वह अनजान, अबोल और बेनाम रिश्ता चित्राजी को जाना-पहचाना और बेहद आत्मीय लगने लगा था। कभी-कभी उसके बड़े भोलेपन से भयभीत अवश्य हो जाती थीं और तब उस रिश्ते के नामकरण के लिए मानो अपने शब्द भंडार में इकट्ठे हजारों शब्दों को खंगाल जातीं। नहीं मिला था नाम। और जब नाम ही नहीं मिला तो पुकारें कैसे?

इसलिए सच तो यही था कि उन्होंने कभी उस रिश्ते को आवाज नहीं दी। रिश्ते के जन्म और अपनी जिंदगी के रुक जाने के समय पर भी नहीं। जिंदगी के पुनःचालित होकर उसकी भाग-दौड़ में भी नहीं। शालिग्रामजी को कभी स्मरण नहीं किया। शालिग्रामजी ने ही बेनाम रिश्ते को याद रखने की पहल की थी।

बहुत सोच-विचार करने के बाद चित्राजी ने भोपाल जाना तय कर लिया। बहुत दूर जाना था। बस, और फिर ट्रेन की यात्रा। वह भी गरमी में। शालिग्रामजी ने दूरभाष पर ही विश्वास दिलाया था–'आपको कोई दिक्कत नहीं होगी। मेहमानों को ठहराने की व्यवस्था करते समय भी हमने मौसम का ध्यान रखा है। मैं समझता हूँ, हमारे मेहमानों को कोई कष्ट नहीं होगा। और आप तो खास मेहमान है।'

चित्राजी कुछ नहीं बोलीं। उन्होंने जब जाने का

शालिग्रामजी को चित्राजी को लेकर नाश्ते के स्थान पर पहुँचने में दो मिनट भी नहीं लगे होंगे, पर वहाँ उपस्थित नाश्ता कर रहे मेहमानों के प्लेट में पडे स्वादिष्ट व्यंजनों में मानो एक विशेष व्यंजन आ टपका। ''ये कौन हैं?'' प्रश्न पसरा। ''इन्हें तो पहले कभी नहीं देखा।'' स्वाद लेने लगे लोग। आपस में प्रश्नों का आदान-प्रदान हो रहा था। उत्तर किसी के पास नहीं था। शालिग्रामजी की पत्नी माला भी आ गई। रिश्तेदारों से नाश्ते का स्वाद पूछतीं, कुछ और लेने का आग्रह करतीं, आगे बढ़ रही थीं। किसी ने पूछ ही लिया–''वे कौन हैं? कोटा की साड़ी में वे सुंदर सी महिला?'' माला ने इधर-उधर आँखें दौड़ाईं। दूसरी ने स्वर दाबकर ही कहा, ''वही, जो शालिग्रामजी के साथ हैं। उन्हें शालिग्रामजी ने स्वयं अपने हाथों से प्लेट लगाकर दी है। देखिए!'' ठीक ही तो कहा था सबने। माला ने भी यही देखा। चाय का प्याला लिये खड़े थे शालिग्रामजी। सौम्य आकृति, लगभग उसकी ही हम-उम्र, बड़े सलीके से नाश्ता कर रही, कौन है यह महिला? शालिग्रामजी ने तो कभी इसका जिक्र नहीं किया। आमंत्रण भेजनेवाली सूची भी माला ने पढ़ी थी। किसी अनजान महिला का नाम नहीं था। फिर कौन है यह? प्रश्न तो अनेक थे। पर वह अवसर नहीं था पति से प्रश्न पूछने का। जबकि अधिकांश मेहमानों के बीच यही प्रश्न बॉल की भाँति दिन भर उछलता उसकी पाली में भी आता रहा। रीति-रिवाज और रस्म अदाएगी में सब एक-दूसरे से पूछते रहे।

निश्चय ही कर लिया था तो कष्ट और आराम का क्या? शिमला बस स्टैंड पर वॉल्वो बस में बैठ गई थीं। मोबाइल की घंटी बजी। शालिग्रामजी का फोन था। उन्होंने कहा, "आपकी बस के दिल्ली बस अड्डे पर रुकते ही हमारा एक आदमी मिलेगा। उसका नाम राकेश है। उसके पास आपकी रेल टिकट होगी।"

चित्राजी ने कुछ नहीं कहा। इतना भी नहीं कि मैंने टिकट ले रखी है। और वैसा ही हुआ। उनकी बस के रुकते ही एक व्यक्ति अंदर घुसा। उसकी खोजी नजर ने चित्राजी को पहचान लिया। उनकी अटैची नीचे उतारकर बोला, "आपके पास यदि कोई टिकट है तो मुझे दे दीजिए। मैं उसे कैंसिल करवा दूँ। ए.सी. द्वितीय श्रेणी की यह टिकट रख लीजिए। ट्रेन शाम को निजामुद्दीन स्टेशन से जाती है। मैं आपको लेने आ जाऊँगा। मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ।"

चित्राजी ने उस व्यक्ति को स्लीपर क़्लास की टिकट निकालकर दे दी। वे थ्री-व्हीलर में बैठकर गोल मार्केट स्थित अपनी एक सहेली के क्वार्टर में चली गईं। शाम को सबकुछ वैसे ही घटा जैसा राकेश ने बताया था।

सुबह-सुबह गाड़ी के भोपाल जंक्शन पर रुकते ही एक नौजवान उनकी सीट तक आ गया। उनके पैर छूकर बोला, "मैं दीपक हूँ। मेरे पिता का नाम शालिग्राम कश्यप है।"

चित्राजी ने 'खुश रहने' का आशीष दिया और उसके पीछे चल पड़ीं। गाड़ी आगे बढ़ रही थी। रोड पर भीड़ के कारण कभी-कभी उसका हॉर्न बजता। अंदर पूरी शांति बनी रही। कोई कुछ नहीं बोला। चित्राजी उस नौजवान से बातें करना चाहती थीं, पर शुरुआत कैसे करें।

उस घर की चौहद्दी, आबादी, संस्कार और स्थितियाँ, कुछ भी तो नहीं जानती थीं। भोपाल शहर के बारे में पूछने ही जा रही थीं कि दीपक बोल पड़ा–"मैं आपको आंटी कहूँ ?"

"हुँ" "तो आंटी! बारात आज शाम को आ रही है, लोकल बारात है, इसलिए समय से ही आ जाएगी। मैंने सुना कि आप कल ही लौट रही हैं। आपके पास समय बहुत कम है। पिताजी ने कहा है कि आप भोपाल शहर पहली बार आ रही हैं। इसलिए भोपाल भी तो देखना चाहेंगी। बड़ा सुंदर शहर है हमारा। आप जल्दी से तैयार हो जाएँ। आपको मेरा मौसेरा भाई घुमाने ले जाएगा।"

"ठीक है।" इतना ही बोल पाईं चित्राजी। मन तो उस व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करने को बन आया था। उनकी इतनी चिंता करनेवाले नौजवान को शाबासी भी दी जा सकती थी। पर वे कुछ नहीं बोलीं। दीपक बोला, "मेरे पिताजी आपकी बहुत प्रशंसा करते हैं। कहते हैं, आप साक्षात् देवी की अवतार हैं। पर पता नहीं क्यों, न आप कभी भोपाल आईं, न हमें शिमला बुलाया। कुछ देर पहले ही आपके बारे में बताया। आपसे मिलने की चाहत पनप आई। इसलिए कई काम छोड़कर स्वयं स्टेशन आ गया।"

चित्राजी कुछ बोलने के लिए जिह्वा पर शब्द सजाने लगीं कि ड्राइवर ने गाड़ी में ब्रेक लगा दिया था। गाड़ी किसी गेस्ट हाउस के सामने रुकी। गाड़ी से उनका सामान निकालकर दीपक आगे बढ़ा। वे पीछे-पीछे। उन्हें अंदर तक पहुँचाकर बोला, "आंटी! आप यहाँ नहा-धो लें। नाश्ता घर पर ही करना है। फिर आप भोपाल दर्शन के लिए निकलेंगी। दोपहर का भोजन भी घर पर ही है। भोजन के बाद फिर यहाँ आराम करिएगा। शाम को तो शादी ही है।"

चित्राजी कुछ नहीं बोलीं। दीपक के कमरे से निकल ने पर अवश्य उसके पीछे गईं। आँखों की पहुँच से उसकी काया ओझल हो जाने पर पीछे लौट कमरे की सिटकिनी बंद कर बिस्तर पर बैठ गईं। सोचने लगीं–दीपक कितना लायक लड़का है। उन्नीस-बीस वर्ष का होगा। इतना जिम्मेदार और पितृभक्त! समाज नाहक परेशान है कि युवा पीढ़ी बिगड़ गई। मेरे साथ थोड़ी देर गुजारकर इस युवा ने मेरे मन में जगह बना ली। पर श्रेय तो इसके पिता को ही जाता है, शालिग्रामजी को। उनका ध्यान आते ही चित्राजी उठ बैठीं। अपना ध्यान बँटाने के लिए तैयार होने लगीं। चित्राजी के नहा-धोकर तैयार होते ही नरेश आ गया था। उन्हें नाश्ते के लिए ले जाते हुए पूछा, "आप दीपक की बुआजी हैं? उसकी दो बुआओं से मिल चुका हूँ। आपसे पहली बार मिला। दीपक का मैं मित्र हूँ।"

शालिग्रामजी शीघ्रता से गेट पर पहुँचे। उन्होंने चित्राजी का अभिवादन किया। नरेश ने कहा, "घुमा लाया आंटी को भोपाल। इन्हें तीनों ताल अच्छे लगे।"

नरेश इतना नहीं कहता तो शायद चित्राजी सामने खड़े व्यक्ति को पहचान भी नहीं पातीं। कुछ दरक गया था चित्राजी के अंदर। उन्होंने अपने को सँभाला। हाथ जोड़कर उनके अभिवादन का उत्तर देते हुए चेहरे पर भी मुसकान थी। नाश्ते का इंतजाम फ्लैट के बाहरवाले हिस्से में ही किया गया था। कुछ लोग नाश्ता समाप्त कर चुके थे, कुछ का जारी था, कुछ आनेवाले थे। शालिग्रामजी को चित्राजी को लेकर नाश्ते के स्थान पर पहुँचने में दो मिनट भी नहीं लगे होंगे, पर वहाँ उपस्थित नाश्ता कर रहे मेहमानों के प्लेट में पडे स्वादिष्ट व्यंजनों में मानो एक विशेष व्यंजन आ टपका।

"ये कौन हैं?" प्रश्न पसरा।

"इन्हें तो पहले कभी नहीं देखा।" स्वाद लेने लगे लोग। आपस में प्रश्नों का आदान-प्रदान हो रहा था। उत्तर किसी के पास नहीं था। शालिग्रामजी की पत्नी माला भी आ गईं। रिश्तेदारों से नाश्ते का स्वाद पूछतीं, कुछ और लेने का आग्रह करतीं, आगे बढ़ रही थीं। किसी ने पूछ ही लिया–"वे कौन हैं? कोटा की साड़ी में वे सुंदर सी महिला?"

माला ने इधर-उधर आँखें दौड़ाईं। दूसरी ने स्वर दाबकर ही कहा, "वही, जो शालिग्रामजी के साथ हैं। उन्हें शालिग्रामजी ने स्वयं अपने हाथों से प्लेट लगाकर दी है। देखिए!" ठीक ही तो कहा था सबने। माला ने भी यही देखा। चाय का प्याला लिये खड़े थे शालिग्रामजी। सौम्य आकृति, लगभग उसकी ही हम-उम्र, बड़े सलीके से नाश्ता कर रही, कौन है यह महिला? शालिग्रामजी ने तो कभी इसका जिक्र नहीं किया। आमंत्रण भेजनेवाली सूची भी माला ने पढ़ी थी। किसी अनजान महिला का नाम नहीं था। फिर कौन है यह?

प्रश्न तो अनेक थे। पर वह अवसर नहीं था पति से प्रश्न पूछने का। जबकि अधिकांश मेहमानों के

बीच यही प्रश्न बॉल की भाँति दिन भर उछलता उसकी पाली में भी आता रहा। रीति-रिवाज और रस्म अदाएगी में सब एक-दूसरे से पूछते रहे। दोपहर के लंच के समय भी चित्राजी आ गईं थीं।

शालिग्रामजी की एक साली उनके पास गई। पूछा, "आप कहाँ से आई हैं?"

दूसरा प्रश्न पूछने ही वाली थी–"आप मेरे जीजाजी को कैसे जानती हैं?"

इस बीच स्वयं जीजाजी उपस्थित हो गए थे। उन्होंने अपनी साली को किसी और विशेष मेहमान की खातिरदारी में लगा दिया था।

गेस्ट हाउस में आराम करते हुए चित्राजी का मन कई मसलों में उलझ गया था। बहुत दिनों बाद पच्चीस वर्ष पूर्व घटी घटना का संपूर्ण दृश्य नजरों के सामने रूढ़ हो गया। शिमला से गाड़ी में पति-पत्नी और दोनों बच्चों का कुल्लु-मनाली के लिए प्रस्थान। थोड़ी दूरी पर जाते ही गाड़ी का खड्डे में गिरना। पति के सिर में चोट आना। उनका होश नहीं लौटना। डॉक्टर से बातचीत। बेहाल-बेहोश चित्राजी के सामने डॉक्टर की एक माँग। माँग पर शीघ्रता से विचार करने का आग्रह। अकेली खड़ी चित्राजी। दो नन्हे बच्चे माँ से चिपके। अपना-पराया कोई साथ न था। निर्णय लेना था चित्राजी को। सबकुछ चला गया था। जो बचा था, उसकी माँग थी। चित्राजी ने वह वस्तु देना स्वीकार कर लिया, जो उनकी थी। डॉक्टर का सुझाव। और फिर मृत्यु के करीब गया व्यक्ति जीवित हो गया।

स्मृतियों में जीवित था सब दृश्य। कभी-कभी जीवंत हो जाता। पर चित्राजी ने दृढ़ निश्चय कर उन यादों को नजर के सामने से हटा दिया था। शुभ-शुभ का अवसर था। 'जो बीत गई, वह बात गई' कविता वे क्लास में पढ़ाती आई हैं। जिस लड़की का विवाह है, उसके लिए शुभ सोचना है। अवसर और समय की वही माँग थी।

बारात दरवाजे लगी। स्वागत में खड़े स्त्री-पुरुष तिरछी नजरों से चित्राजी की ओर अवश्य देखते रहे। प्रश्न वही–"कौन है यह?", "क्या रिश्ता है शालिग्रामजी से?"

शालिग्रामजी ने द्वार पर ही अपने समधी से चित्राजी का परिचय कराया था। उनकी दो सालियाँ अपने पतियों के साथ वहीं खड़ी थीं। उनका परिचय नहीं करवाया। और यह खबर उस भीड़ भरे स्थल पर भी आसानी से यात्रा कर गई। सबको मिल आई।

बराती और घराती के भोजनापरांत विवाह के रस्म पूरे किए जाने लगे। शालिग्रामजी को पंडितजी द्वारा मंडप पर कन्यादान के लिए बुलाया गया। मंडप पर बैठने के पूर्व उन्होंने चारों ओर निगाहें घुमाईं। उनकी दृष्टि के सम्मुख वह चेहरा नहीं आया, जिसकी उन्हें खोज थी। उनके आस-पास मंडप पर बैठी उनकी बहनों और सालियों ने भाँप लिया था। दो-तीन एक साथ बोल पड़ीं–"वहाँ है आपकी मेहमान।"

देखा माला ने भी। मानो खीझकर बोली, "अब बैठ जाइए। मनचित्त लगाकर कन्यादान करिए। इसी काम के लिए मेहमान और सारा इंतजाम है। बैठिए!"

शालिग्रामजी ने ऊँची आवाज में कहा, "चित्राजी! आप इधर आइए। मंडप पर बैठिए। मेरी बेटी को आपका विशेष आशीर्वाद चाहिए।"

चित्राजी अंदर से हिल गईं। ऊपर से उपस्थित जनों की निगाहों के तीरों से बिंध गईं। वे परेशान तो थी हीं। अपने स्थान पर खड़ी होकर बोलीं, "आप लोग शुभ कार्य के लिए वहाँ उपस्थित हुए हैं। बेटी का कन्यादान करिए। मुझे यहीं बैठना है। मैं विधवा हूँ। मेरा सुहाग नहीं है। समाज ऐसी महिला को किसी सौभाग्याकांक्षिणी को सुहाग देने की मनाही करता है। मैं दिल से आपकी बेटी का शुभ चाहती हूँ। इसलिए दूर बैठी हूँ। आप अपना पुनीत काम पूरा करें। मेरी चिंता छोड़ दें।" वे बैठ गईं।

"मैं नहीं मानता ऐसे समाज के विधान को। मेरे परिवार के लिए, मेरी बेटी के लिए आपसे बढ़कर कोई शुभ नहीं हो सकता। आपकी कृपा के बिना तो न मैं होता न मेरी बेटी। आइए! आप मेरी प्रार्थना मानकर मेरी बेटी का कन्यादान करिए।" फिर तो पंडितजी भी परेशान हो गए। बोले, "शालिग्रामजी! आपकी मेहमान महिला ठीक कह रही हैं। आप कन्यादान करिए। अपनी पत्नी को साथ बैठाइए। मंडप पर बैठी सभी महिलाएँ सुहागन ही हैं।"

शालिग्रामजी बिफर पड़े–"आप सब आज सुबह से चित्राजी का परिचय जानने के लिए परेशान हैं। आपके बीच तरह-तरह की अटकलें लग रही हैं। कार्य व्यस्तता में भी मैं आपके प्रश्नों के बाणों से बिंधता रहा। जब तक मैं उनका परिचय न दे दूँ, आप सबों का ध्यान भी विवाह के रस्म-रिवाजों पर केंद्रित नहीं होगा। तो सुनिए!" और जो कुछ शालिग्रामजी ने सुनाया, सुनकर वहाँ बैठे उपस्थित लोगों के प्रश्न तो चुके ही, वे सब चित्राजी के प्रति नतमस्तक हो गए। वे अवाक् रह गए। "पच्चीस वर्ष पूर्व एक दुर्घटना में चित्राजी के पति घायल हो गए। उनके मस्तिष्क ने काम करना बंद कर दिया था। जिस अस्पताल में उन्हें लाया गया, उसी के एक कमरे में मैं ऑपरेशन बेड पर लेटा था। मेरे दिल ने काम करना बंद कर दिया था। चिकित्सकों ने निर्णय लिया था–किसी का धड़कता दिल मिलने पर प्रत्यारोपण हो सकता है। आँख दान, किडनी दान जैसे अंग दान की बात तो सुनी गई थी। देहदान भी होने लगा था। पर हृदय दान तो तभी हो जब वह धड़कता हो, और जब तक दिल धड़कता है, आदमी जिंदा है। भला जीवित का हृदय कोई क्यों दान करे।

चित्राजी के पति का दिल धड़क रहा था। मस्तिष्क ने कार्य करना बंद कर दिया था। डॉक्टर शर्मा ने इनसे अनुरोध किया–"आपके पति को अब हम नहीं बचा सकते। पर आपकी सहमति हो तो इनका दिल किसी और के शरीर में प्रत्यारोपित किया जा सकता है। वह जिंदा हो सकता है।

"सुझाव सुनकर चित्राजी पर क्या बीती, मुझे नहीं मालूम। और किसी ने जानने की कोशिश भी की कि नहीं, मालूम नहीं। चित्राजी ने अनुमति दे दी थी। मेरा दिल पिछले पच्चीस वर्षों से धड़क रहा है, यह मेरा नहीं, इनके पति का दिल है। पर पिछले पच्चीस वर्षों में इन्होंने एक बार भी एहसान नहीं जताया। इन्होंने तो मुझे तब भी नहीं जाना, न देखा था। मैंने भी नहीं। इन्होंने कभी मुझे ढूँढ़ने की कोशिश भी नहीं की। पर मैं बहुत बेचैन था। जीवन देनेवाली के प्रति आभार भी नहीं प्रगट कर सका। दो वर्ष पूर्व इनके शहर में गया। डॉ. शर्मा मिल गए। मेरा दुर्भाग्य कि इनसे तब भी भेंट नहीं हो सकी। डॉ. शर्मा से इनका मोबाइल नंबर मिल गया। फोन पर ही मैंने इन्हें अपना परिचय दिया। मनुहार पत्र भेजा। फिर निमंत्रण। बहुत आग्रह करने पर ये मेरी बेटी के विवाह पर आई हैं। मैंने भी इनको आज सुबह ही पहली बार देखा। अब आप ही सोचिए पंडितजी! हमारे परिवार के लिए इनसे बढ़कर शुभ और कौन होगा। मेरे विवाह और मेरे बच्चे होने के पीछे भी यही तो हैं। मैं हूँ, तभी तो सब है।"

कन्यादान के रस्म के समय तो सबकी आँखें भरती हैं। शालिग्रामजी ने तो कन्यादान के पूर्व ही उपस्थित सभी आँखों में पानी भर दिया।

माला मंडप पर से उठी। सीधे चित्राजी के पास पहुँची। पैर छूकर आशीष लिये और हाथ पकड़कर मंडप पर ले आई। महिलाओं के झुंड ने आँसू पोंछकर गाना प्रारंभ किया –'शुभ हो शुभ, आज मंगल का दिन है, शुभ हो शुभ। शुभ बोलू अम्मा, शुभ बोलू पापा, शुभ नगरी के लोग सब, शुभ हो शुभ!"

रिश्ते को नामकरण की आवश्यकता नहीं पड़ी। अनेक रिश्तों से भरा था प्रांगण। पर सबसे ऊँचा हो गया था शालिग्रामजी और चित्राजी का रिश्ता। बेनाम था तो क्या? ■

– मृदुला गर्ग

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOURUOS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

रेल की रात

इलाचंद्र जोशी

गाड़ी आने के समय से बहुत पहले ही महेंद्र स्टेशन पर जा पहुँचा था। गाड़ी के पहुँचने का ठीक समय मालूम न हो, यह बात नहीं कही जा सकती। जिस छोटे शहर में वह आया हुआ था, वहाँ से जल्दी भागने के लिए वह ऐसा उत्सुक हो उठा था कि जान-बूझ कर भी अज्ञात मन से शायद किसी अबोध बालक की तरह वह समझा था कि उसके जल्दी स्टेशन पर पहुँचने से संभवतः गाड़ी भी नियत समय से पहले ही आ जाएगी।

होल्डाल में बँधे हुए बिस्तरे और चमड़े के एक पुराने सूटकेस को प्लेटफ़ार्म के एक कोने पर रखवा कर वह चिंतित तथा अस्थिर-सा अन्यमनस्क भाव से टहलते हुए टिकट-घर की खिड़की के खुलने का इंतिज़ार करने लगा।

महेंद्र की आयु बत्तीस-तैंतीस वर्ष के लगभग होगी। उसके क़द की ऊँचाई साढ़े पाँच फ़ीट से कम नहीं मालूम होती थी। उसके शरीर का गठन देखने से उसे दुबला तो नहीं कहा जा सकता, तथापि मोटा वह नाम का भी न था। रंग उसका गेहुँआ था, कपोल कुछ चौड़ा, भौंहें कुछ मोटी किंतु तनी हुई, आँखें छोटी पर लंबी, काली मूँछें घनी पर पतली और दोनों सिरों पर कुछ ऊपर को उठी थीं। वह खद्दर का एक लंबा कुरता और खद्दर की धोती पहने था। सर पर टोपी नहीं थी। पाँवों में घड़ियाल के चमड़े के बने हुए चप्पल थे। उसके व्यक्तित्व में आकर्षण अवश्य था, पर वह आकर्षण सब समय सब व्यक्तियों की दृष्टि को अपनी ओर नहीं खींचता था।

सूरज बहुत पहले डूब चुका था और शुक्ल पक्ष का अपूर्ण गोलाकार चंद्रमा अपने किरण-जाल से दिग्-दिगंत को स्निग्ध आलोक-छटा से विभासित करने लगा था। स्टेशन पर अधिक भीड़ न थी। प्लेटफ़ार्म पर टहलते-टहलते पूर्व की ओर क़दम निकल जाने पर ऐसा मालूम होने लगता था कि चाँदनी दीर्घ-विस्तृत समतल भूमि पर अलस क्लांति की तरह पड़ी हुई है। झिल्ली-झनकार का एकांतिक मर्मर स्वर इस अलसता की वेदना को निर्मम भाव से जगा रहा था, जिससे महेंद्र के हृदय की सुप्त व्याकुलता तिलमिला उठती थी।

सिगनल डाउन हो गया था। टिकट-घर खुल गया था। थर्ड क्लास का टिकट खरीद कर महेंद्र गाड़ी का इंतिज़ार करने लगा। थोड़ी देर में दूर ही से सर्चलाइट के प्रखर प्रकाश से तिमिर-विदारण करती हुई गाड़ी दिखाई दी और झक-झक करती हुई स्टेशन पर आ खड़ी हुई।

सामने के कंपार्टमेंट में केवल दो व्यक्ति बैठे थे और वे भी उतरने की तैयारी कर रहे थे। महेंद्र एक हाथ में बिस्तर की गठरी और दूसरे हाथ से सूटकेस पकड़ कर उसी में जा घुसा। जो दो व्यक्ति कंपार्टमेंट में थे, उनके उतरते ही एक चश्माधारी सज्जन ने दो महिलाओं के साथ भीतर प्रवेश किया। कुली ने आ कर नवागंतुक महाशय का सामान भीतर रख दिया और मजूरी के संबंध में काफ़ी हुज्जत करने के बाद पैसे ले कर चला गया। चश्माधारी सज्जन महिलाओं के साथ महेंद्र के सामने वाले बेंच पर बड़े आराम से बैठ गए। मालूम होता था कि वह बड़ी हड़बड़ी के साथ गाड़ी के आने के कुछ ही समय पहले स्टेशन पहुँचे थे और घबराहट में थे, कि महिलाओं को साथ ले कर यदि किसी कंपार्टमेंट में जगह न मिली, तो क्या हाल होगा। वह अभी तक हाँफ रहे थे, जिससे उनकी अब तक की परेशानी स्पष्ट व्यक्त होती थी। अब जब आराम से बैठने को खाली जगह मिल गई, तो एक लंबी साँस ले कर चश्मा उतार कर रूमाल से मुँह का पसीना पोंछने लगे। पसीना पोंछते-पोंछते महेंद्र की ओर देख कर उन्होंने प्रश्न किया, 'शिकोहाबाद कै बजे गाड़ी पहुँचेगी, आप बता सकते हैं?'

महेंद्र ने उत्तर दिया, 'जहाँ तक मेरा खयाल है, बारह बजे के क़रीब पहुँचेगी।'

महेंद्र कनखियों से महिलाओं की ओर देख रहा था। महिलाएँ उसके एकदम सामने बैठी थीं और यदि दृष्टि सीधी करके स्वाभाविक रूप से उन्हें देखता रहता, तो भी शायद न तो चश्माधारी सज्जन को और न महिलाओं को कोई आपत्ति होती, पर उसे अपनी स्वाभाविक संकोचशीलता के कारण उनकी ओर स्थिर दृष्टि से देखने का साहस नहीं होता था। दोनों महिलाएँ बेपर्दा बैठी थीं। उनमें एक की अवस्था प्रायः पैंतीस वर्ष की होगी, वह एक सफ़ेद चादर ओढ़े खड़ी थी, दूसरी बाईस-तेईस वर्ष की जान पड़ती थी, वह एक गुलाबी रंग की सुंदर, सुरुचिपूर्ण साड़ी पहने थी। दोनों यथेष्ट सभ्य और सुशील जान पड़ती थीं। ज्येष्ठा के देखने से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता था कि किसी समय वह सुंदर रही होगी, पर अब अस्वस्थता के कारण उसका मुखमंडल बिलकुल निस्तेज जान पड़ता था। कनिष्ठा यद्यपि सौंदर्य-कला की दृष्टि से सुंदरी नहीं थी, तथापि उसके मुख की व्यंजना में एक ऐसी सरल मधुरिमा वर्तमान थी, जो बरबस आँखों को आकर्षित कर लेती थी।

आज कई कारणों से महेंद्र का जी दिन भर अच्छा नहीं रहा। गाड़ी में बैठने तक वह चिंतित, अन्यमनस्क तथा उदास था। पर गाड़ी में बैठते ही शिष्ट, सुशील तथा सुंदरी महिलाओं के साहचर्य से उसके खिन्न मन में एक सुखद सरलता छा गई। यद्यपि वह संकोच के कारण कुछ कम घबराया हुआ न था, तथापि चश्माधारी सज्जन की भोली आकृति तथा सरल भाव-भंगिमाओं से और महिलाओं की शालीनता से उसे इस बात पर धीरे-धीरे विश्वास होने लगा था कि उनके बीच किसी प्रकार का संकोच अनावश्यक ही नहीं बल्कि अशोभन भी है।

चश्माधारी सज्जन ने चश्मा उतार कर एक रूमाल से उसे पोंछते हुए पूछा, 'आप क्या शिकोहाबाद जा रहे हैं?'

'जी नहीं, मैं दिल्ली जा रहा हूँ। क्या आप शिकोहाबाद में ही रहते हैं?'

'जी नहीं, मुझे टुँडला जाना है। मैं वहाँ कोर्ट में प्रैक्टिस करता हूँ। इधर कुछ दिनों के लिए घर आया हुआ था। अब अपनी 'वाइफ़' को और 'सिस्टर' को ले कर वापस जा रहा हूँ। 'सिस्टर' की तबीअत ठीक नहीं रहती, इसलिए उसे हवा-बदली के लिए ल जा रहा हूँ।'

एक साधारण-से प्रश्न के उत्तर में इतनी बातों से परिचित होने पर महेंद्र को नवपरिचित सज्जन की बेतकल्लुफ़ी पर आश्चर्य हुआ और वह मन ही मन मुस्कराने लगा। उसने अनुमान लगाया कि ज्येष्ठा महिला 'सिस्टर' होगी और कनिष्ठा 'वाइफ़'।

थोड़ी देर में गाड़ी चलने लगी। कोई दूसरा यात्री उस डिब्बे में न आया।

चश्माधारी महाशय गाड़ी चलने के कुछ देर बाद ऊँघने लगे। वे रह न सके और बँधे हुए बिस्तर को तकिया बना कर एक दूसरे बेंच पर लेट गए और लेटते ही खर्राटे लेने लगे। न जाने क्यों, महेंद्र के मन में यह विश्वास जम गया कि इन नवपरिचित महाशय का जीवन बड़ा सुखी है। उनकी बे-तकल्लुफ़ी तथा उनके मुख का आत्म-संतोषपूर्ण भाव देख कर उनके मन में यह विश्वास जमने लगा था और जब उसने उन्हें निश्चिंत सोते हुए तथा खर्राटे भरते देखा, तो उसकी यह धारणा दृढ़ हो गई।

ज्येष्ठा महिला ने भी थोड़ी देर में ऊँघना शुरू कर दिया। वह ऊँघती जाती थी और बीच-बीच में जब ज़बर्दस्त हिचकोला खाती थी तो जाग पड़ती थी। केवल कनिष्ठा महिला पूर्णतः सजग थी। वह कभी खिड़की के बाहर झाँक कर चाँदनी के उज्ज्वल आलोक में शायद 'पल-पल परिवर्तित' प्राकृतिक

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोनः ०२५१-२७०९९६२

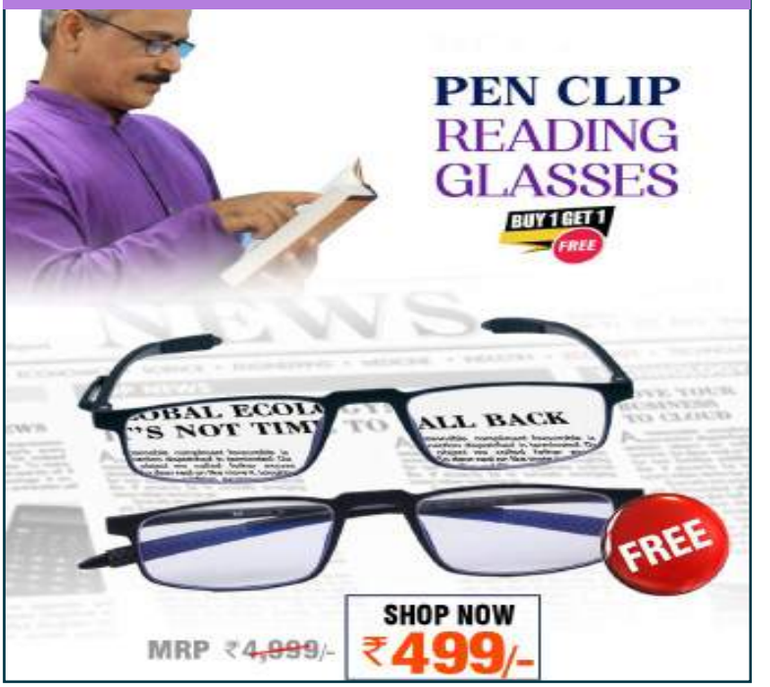

दृश्यों का आनंद लेती थी, कभी ऊँघनेवाली महिला की ओर देखती थी, कभी खर्राटे भरनेवाले महाशय, शायद अपने पति को एक बार सरसरी निगाह से देख लेती थी और कभी महेंद्र को स्निग्ध किंतु विस्मय की उत्सुकता से पूर्ण आँखों से देखने लगती थी। उन आँखों की स्थिर दृष्टि जब महेंद्र पर आ कर पड़ती थी तो, उसे ऐसा मालूम होने लगता कि मोहाविष्ट हुआ जा रहा है और उसकी सारी आत्मा, यहाँ तक कि सारा शरीर भी अपना रूप बदल रहा है और यह किसी अव्यक्त तथा अतींद्रिय मायावी स्पर्श से कुछ का कुछ हुआ जा रहा है। वह उस स्थिर दृष्टि का तेज़ सहन न कर सकने के कारण आँखें फिरा लेता था।

गाड़ी टटर-टट्ट-टटर-टट्ट शब्द से चली जा रही थी। जाग्रत महिला की गुलाबी साड़ी का आँचल हवा के झोंके से नीचे खिसक कर उसके लहराते हुए घनकुंचित काले केशों की बहार दिखा रहा था। गुलाबी साड़ी भी हवा के ज़ोर से फ़र-फ़र फ़हरा रही थी। महेंद्र पूर्ण जाग्रत अवस्था में स्वप्न देखने लगा। उसे यह भी भ्रम होने लगा कि यह महिला, जो इसके पहले उसके लिए एकदम अज्ञात थी और निश्चय ही सदा अज्ञात रहेगी, न जाने किस चिदानंदमय लोक से अकस्मात आविर्भूत हो कर उसके पास आ बैठी है और गुलाबी रंग की पताका फ़हरा कर विश्व-विजय को निकली है और वह उसका सारथी बन कर उस अनंतगामी रेल रूपी रथ पर चला जा रहा है। सारा विश्व, समस्त मानवी तथा मानसी सृष्टि उसके लिए उस कंपार्टमेंट के भीतर समा गई थी, जिसमें ऊँघनेवाली महिला तथा सोए हुए सज्जन का कोई अस्तित्व नहीं था, और उसके बाहर क्षण-क्षण में परिवर्तित होनेवाले अस्थिर माया जगत का चिर चंचल रूप एकदम असत्य सत्ताहीन-सा लगता था।

महेंद्र सोचने लगा कि उसने जीवन में कितनी ही स्त्रियों को विभिन्न रूपों तथा विचित्र परिस्थितियों में देखा है, पर आज का यह बिलकुल साधारण-सा अनुभव उसे क्यों ऐसा अपूर्व तथा अनुपम लग रहा है। वह सोच ही रहा था कि फिर उस विश्व-विजयिनी ने अपनी सुंदर विस्मित आँखों की रहस्यमयी उत्सुकता से भरी स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखा। वह मन ही मन संबोधित करते हुए कहने लगा, चिर अज्ञाता, चिर अपरिचिता देवी! तुम मुझसे क्या चाहती हो। तुम्हारी इस मर्मभेदिनी दृष्टि का क्या अर्थ है? दैवयोग से महाकाल के इस नगण्यतम क्षण में, जिसकी सत्ता महासागर में एक क्षुद्रतम बुदबुदे के बराबर भी नहीं है, हम दोनों का आकस्मिक मिलन घटित हुआ है, और महासागर में बुदबुदे की तरह यह क्षण सदा के लिए विलीन हो जाएगा। तथापि इतने ही अर्से में क्या तुम हम दोनों के जन्मांतर के संबंध से परिचित हो गई अथवा यह सब कुछ नहीं है? तुम्हारी आँखों की उत्सुकता का कोई मूल्य नहीं है, मेरी विह्वल भावुकता का कोई महत्व नहीं है! महत्वपूर्ण जो कुछ है, वह है तुम्हारे पास लेटे हुए व्यक्ति का खर्राटे भरना।

शिकोहाबाद पहुँचने पर चश्माधारी सज्जन की नींद न टूटी और ज्येष्ठा महिला ऊँघती रही। पर महेंद्र की विश्व-विजयिनी की आँखों में एक क्षण के लिए भी निद्रा-रसावेश का लेश नहीं दिखाई दिया। वह बीच-बीच में अपनी मर्म-भेदिनी दृष्टि की प्रखर उत्सुकता से उसके हृदय को अकारण निर्मम रूप से बिद्ध करती चली जाती थी। फलस्वरूप महेंद्र की गुलाबी मोहकता भी शिकोहाबाद पहुँचने तक अखंड बनी रही।

शिकोहाबाद पहुँचने पर विश्व-विजयिनी ने चश्माधारी सज्जन के किंचित स्थूल शरीर को हाथ से हिलाते हुए जगाया। ऊँघती हुई महिला भी सँभल कर बैठ गई। कुलियों से सामान उतरवा कर चारों व्यक्ति उतर पड़े। दिल्लीवाली गाड़ी जिस प्लेटफ़ार्म पर लगनेवाली थी, वहाँ को जाने के लिए पुल पार करना पड़ा। पुल पार करके वे लोग जिस प्लेटफ़ार्म पर आए, वहाँ कहीं एक भी बत्ती जली हुई नहीं थी। पर चूँकि सर्वत्र निर्मल चाँदनी छिटक रही थी, इसलिए बत्ती की कोई आवश्यकता न जान पड़ी। गाड़ी के आने में अभी डेढ़ घंटे की देर थी। चश्माधारी महाशय एक बेंच पर बिस्तर फैला कर लेट गए। दोनों महिलाएँ भी नीचे रखे हुए सामान के ऊपर बैठ गईं।

चश्माधारी सज्जन ने महेंद्र से कहा, 'आप भी किसी बेंच पर बिस्तर बिछा कर लेट जाइए।'

पर कोई बेंच खाली नहीं थी और न महेंद्र सोने के लिए ही उत्सुक था। आज की रेलवे यात्रा की चंद्रोज्ज्वल रात्रि उसे चिरजाग्रत तथा चिरजीवित स्वप्न-लोक में विचरण का अवसर दे रही थी। वह प्लेटफ़ार्म पर टहलते हुए अपने अंतर्मन में नवोद्घाटित जीवन-वैचित्र्य की चहल-पहल देख कर विस्मित हो रहा था। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि वह जीवन की मधुरिमा से आज प्रथम बार परिचित हो रहा था। रेलवे लाइन के उस पार दिगंत विस्तृत ज्योत्स्ना-राशि अपने आवेश में स्वयं पुलकित हो रही थी और सामने काफ़ी दूर पर दो रक्तरंजित गोलाकार प्रकाश-चिह्न आकाश-दीप की तरह मानो आनंदोज्ज्वल रंगीन जीवन का मार्ग उसके लिए इंगित कर रहे थे। रेलगाड़ी में हो कर वह अनेक बार आया था और गया था और कितनी ही बार उसे रात के समय स्टेशनों पर गाड़ी के इंतिज़ार में ठहरना पड़ा था, पर आज की ऐंद्रजालिक उल्लासपूर्ण अनुभूति उसके लिए एकदम नई थी। इस बार इंद्रजाल के उद्घाटन का श्रेय जिसको था, वह मायाविनी इस समय टीन की छत के नीचे की छाया में बैठी हुई थी और अंधकार में उसकी आँखों के जादू का चलना बंद हो गया था। पर वहाँ पर मात्र उसका अस्तित्व ही महेंद्र की आत्मा में मायालोक की मोहकता का सृजन करने के लिए पर्याप्त था।

वह टहलते-टहलते न मालूम किन निरुद्देश्य स्वप्नों की माया के फेर में पड़ा हुआ था कि अचानक चश्माधारी महाशय ने बेंच पर से पुकारते हुए कहा, 'अरे जनाब, कब तक टहलिएगा। अगर लेटना नहीं चाहते, तो यहाँ पर बैठ तो जाइए। नींद तो अब आवेगी नहीं। इसलिए गाड़ी के आने तक गप-शप ही रहे।' महाशयजी पहले ही काफ़ी सो चुके थे इसलिए अब नींद नहीं आ रही थी। महेंद्र मुस्कराता हुआ उनके पास अपने सूटकेस के ऊपर बैठ गया।

महाशयजी ने कहा, 'आप दिल्ली में कहीं मुलाज़िम हैं?'

'जी नहीं।'

'तब आप क्या करते हैं, आप खद्दर पहने हैं, क्या आप राजनीतिज्ञ हैं?'

'पहले था, अब नहीं के बराबर हूँ।'

'वह कैसे?'

इस प्रश्न के उत्तर में महेंद्र ने परम क्लांति का भाव दिखाते हुए कहा, 'अरे साहब, सुन के क्या कीजिएगा। व्यर्थ में आपके संस्कारों को आघात पहुँचेगा। इस चर्चा को हटाइए और किसी अच्छे विषय की चर्चा चलाइए।'

स्वभावतः चश्माधारी का कौतूहल बढ़ा। उन्होंने आग्रह के साथ कहा, 'फिर भी ज़रा सुनें तो सही।

आखरि कौन-सी ऐसी बात हो गई।'

महेंद्र की सुप्त स्मृतियाँ तिलमिला उठीं थीं। कनखियों से उसने देखा, प्रायः अंधकार में बैठी हुई मायाविनी महिला का ध्यान उसी की ओर था। पल में उसके मानसिक चक्षुओं के आगे उसके सारे विगत जीवन के व्यर्थता के दुःखद संस्मरणों की झाँकी चित्रपट पर क्रम से परिवर्तित होनेवाले चित्रों की तरह भासमान होने लगी। भाव के आवेश में आ कर उसने कहा, 'अच्छा तो सुनिए। ग्यारह वर्ष से ले कर तीस वर्ष तक की अवस्था तक गाँधी के सिद्धांतों के पीछे पागल हो कर, भूखों रह कर, पग-पग ठोकरें खा कर, समाज तथा परिवार की फटकारें सह कर, जीवन के सब सुखों को अपने ध्येय के लिए तिलांजलि दे कर, राष्ट्रीय आदर्श को ब्रह्मतत्व से भी अधिक महत्व दे कर सच्ची लगन से अपनी सारी आत्मा को निमज्जित करके देश का काम किया। तीन बार काफ़ी अवधि के लिए जेल में सड़ता रहा, बार-बार पुलिस के डंडे सर पर पड़ते रहे। ज़मीन-जायदाद कुर्क हो गई, माता-पिता अपनी कपूत संतान के कारण तबाह हो कर मानसिक और शारीरिक पीड़ा की पराकाष्ठा भोग कर चल बसे, पत्नी तड़प-तड़प कर अपने भाग्य को कोसती हुई मर गई। फिर भी मैं राष्ट्र से कल्याण के परम ध्येय को स्त्री, परिवार, आत्मा और परमात्मा से बहुत ऊँचा मानता हुआ सच्ची लगन से काम करता रहा। जब अंतिम बार जेलखाने में बंदी मियाद पूरी करने के बाद थका-माँदा मन तथा शरीर से क्लिष्ट और क्लांत हो कर मैं बाहर आया, तब एक-एक करके उन स्नेही जनों की स्मृतियाँ मेरे मन में उदित हो-हो कर व्यक्त होने लगीं, जिनकी मैं सदा अवज्ञा करता आया था। अपनी पत्नी से मैंने जीवन में शायद दो दिन भी घनिष्ठता से बातें न की होंगी। जब मैं बाहर रहता था, तो उसके पत्र बराबर मेरे पास आते रहते थे और मैं सरसरी दृष्टि से पढ़ कर अवज्ञा से फाड़ कर फेंक देता था। एक या दो बार से अधिक मैंने उसके पत्रों का उत्तर नहीं दिया और दो बार जो उत्तर दिया था, वह भी चार पंक्तियों में बिल्कुल रूखे-सूखे ढंग से। अब जब मैं अपने को सारे संसार में अकेला, स्नेह तथा संवेदना से वंचित, असहाय तथा निरुपाय अनुभव करने लगा तो उसकी भोली-भाली, सकरुण, स्नेह की वेदना से भरी सहज सलोनी मूर्ति प्रतिपल मेरी आँखों के आगे भासित होने लगी। उसके पत्रों में सरल शब्दों में वर्णित कातर व्याकुलता के हाहाकार की पुकार मानो मेरी स्मृति के अतुल गह्वर में दीर्घ सुप्ति की घोर जड़ता के बाद अकस्मात जागरित हो कर मेरे हृदय पर जलते हुए अंगारों के गोलों से आघात करने लगी। अपने जीवन में कभी किसी बात पर नहीं रोया था। माता-पिता तथा पत्नी, किसी की मृत्यु पर आँसू की एक बूँद मेरी आँखों से न निकली थी। अब रह-रह कर उन लोगों की याद में बिलख-बिलख कर मैं बार-बार रो पड़ता। मेरी स्नेहशील पतिपरायण पत्नी की करुण पुण्यछवि उज्ज्वल नक्षत्र की तरह मेरी आँखों के आगे स्पष्ट भासमान होने लगी। रह-रह कर मेरा जी विकल हो उठता था और मुझे ऐसा प्रतीत होने लगता, जैसे मेरे हृदय में किसी के निष्कलंक सुकुमार प्राणों की पैशाचिक हत्या का अपराध पाषाण-भार की तरह पड़ा हो। बहुत दिनों तक इस नृशंस अपराध की भयंकर अनुभूति का भूत मेरी आत्मा को अत्यंत निष्ठुरता से दबाता रहा। अब भी यह भौतिक आतंक कभी-कभी मेरे मन में जागरित हो उठता है। फिर भी अब मैंने अपने मन को बहुत समझा लिया है और जीवन को एक नई दृष्टि से नए रूप में देखने लगा हूँ और साधारण से साधारण घटना भी कभी-कभी मेरे मन में एक अलौकिक आनंद का आश्चर्य उत्पन्न करने लगती है। किसी स्त्री को देखते ही अब मेरे हृदय में एक श्रद्धा-पूर्ण उत्सुकता का भाव जाग पड़ता है। ऐसा मालूम होने लगता है, जैसे अपने जीवन में पहले स्त्री को देखा भी न हो, अब पहली बार इस आनंददायिनी रहस्यमयी जाति के अस्तित्व का अनुभव मुझे हुआ हो।'

महेंद्र का लंबा लेक्चर समाप्त होते ही चश्माधारी सज्जन 'हा हा' करके ठठा कर हँसते हुए बोले, 'आप भी बड़े मज़े के आदमी हैं। खूब!' यह कह कर वह बेंच पर आराम से लेट गए और उन्होंने आँखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद वह ज़ोरों से खर्राटे लेने लगे।

एक लंबी साँस लेते हुए महेंद्र ने प्रायः अंधकार में अस्पष्ट झलकती हुई गुलाबी साड़ी की ओर देखा। दो आँखों की मार्मिक दृष्टि से तीव्र मोहकता उस अर्द्ध अंधकार में भी विस्मित वेदना की उत्सुक उज्ज्वल रेखाओं को विकीरित कर रही थी। महेंद्र पुलक-विह्वल हो कर मंत्र-मुग्ध-सा बैठा रहा।

घंटी बजी, दिल्ली को जानेवाली गाड़ी के आने की सूचना देते हुए सिगनल डाउन हुआ। सामने रक्त आकाश-द्वीप के बदले हरे रंग का प्रकाश जल उठा। यह हरित आलोक महेंद्र के मानस-पट में साड़ी के गुलाबी रंग के साथ मिल कर एक स्निग्ध-शुचि सौंदर्य-लोक का सृजन करने लगा।

थोड़ी देर में दूर ही से गाड़ी का सर्चलाइट दिखाई दिया। चश्माधारी महाशय महेंद्र के जगाने पर फड़फड़ाते हुए उठे। कुलियों ने सामान सँभाल लिया। भक-भक करती हुई गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर आ लगी। बड़ी भीड़ थी। चश्माधारी सज्जन को महिलाओं के साथ कुली लोग इंजन के उल्टी ओर बहुत दूर तक ले गए। कहीं स्थान न पा कर अंत में एक डिब्बे में ज़बर्दस्ती घुस गए। महेंद्र भी उन लोगों के साथ-साथ जा रहा था पर जिस डिब्बे में वे लोग घुसे, उस डिब्बे में स्थान का निपट अभाव देख कर वह विवश हो कर एक दूसरे डिब्बे में चला गया। वहाँ भी काफ़ी भीड़ थी। किसी प्रकार उसने अपने बैठने के लिए थोड़ा-सा स्थान बनाया।

गार्ड ने सीटी दी। गाड़ी चल पड़ी। महेंद्र के मस्तिष्क में नाना अस्पष्ट भावनाएँ चक्कर काटने लगीं। दो दिन से उसे नींद नहीं आई थी। आज भी वह अभी तक सो नहीं पाया। इसलिए सोचते-सोचते वह ऊँघने लगा। ऊँघते हुए उसने देखा कि गुलाबी रंग की साड़ी द्रौपदी के चीर की तरह फैलती हुई अकारण सारे आकाश में छा गई है। सहसा दो स्थानों पर वह गगनव्यापी साड़ी फटी और उन दो छिद्रों से हो कर दो वेदनाशील, तीक्ष्ण, उज्ज्वल आँखें तीर की तरह प्रखर वेग से उसकी ओर धावित हो कर एक रूप में मिल कर एक बड़ी आँख के आकार में परिणत हो गईं। वह बड़ी आँखें उसके शरीर को छेद कर उसके हृत्पिंड को छू कर फिर ऊपर आकाश की ओर तीर की तरह छूटीं और आकाश में फैली हुई गुलाबी साड़ी में जा लगीं और फट कर फिर से दो सुंदर, किंतु करुणा-विकल आँखों के आकार में विभक्त हो गईं।

टुँडला स्टेशन पर गाड़ी ठहरने पर महेंद्र पूर्णतः सचेत हो कर बैठ गया। चश्माधारी महाशय दोनों महिलाओं को साथ ले कर कंपार्टमेंट से बाहर उतरे और सामान को कुलियों के हवाले करके उनके साथ बाहर फाटक की ओर चले। महेंद्र ने अपने कंपार्टमेंट से अपनी विश्वविजयिनी को देखा। वह इस उत्सुकता में था कि एक बार अंतिम समय के लिए दोनों की आँखें चार हो जावें, पर न हुईं और गुलाबी साड़ी से आवृत सजीव प्रतिमा व्यस्त विह्वल-सी आगे को निकल गई।

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

3 Austrian Diamond
Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,999
Only At
₹499

Adviteeyamina
Akshayadrutiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

SCOTTISH CLUB
PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P. ₹2,495/-
OFFER PRICE ₹599

NIRLON
12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-

10 BEDSHEET SETS
+15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
SHOP NOW
₹1,999/-

Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
SHOP NOW
₹1,499/-

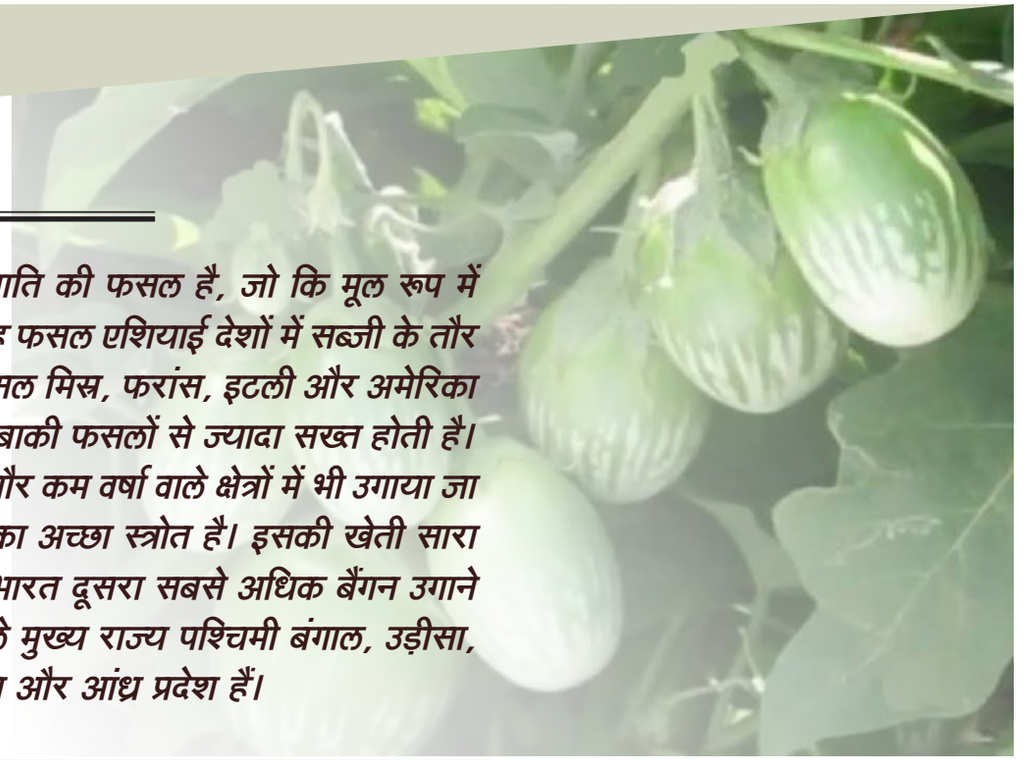

बैंगन (सोलेनम मैलोंजेना) सोलेनैसी जाति की फसल है, जो कि मूल रूप में भारत की फसल मानी जाती है और यह फसल एशियाई देशों में सब्जी के तौर पर उगाई जाती है। इसके बिना यह फसल मिस्र, फरांस, इटली और अमेरिका में भी उगाई जाती है। बैंगन की फसल बाकी फसलों से ज्यादा सख्त होती है। इसके सख्त होने के कारण इसे शुष्क और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता हैं यह विटामिन और खनिजों का अच्छा स्त्रोत है। इसकी खेती सारा साल की जा सकती है। चीन के बाद भारत दूसरा सबसे अधिक बैंगन उगाने वाला देश है। भारत में बैंगन उगाने वाले मुख्य राज्य पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, कर्नाटक, बिहार, महांराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश हैं।

बैंगन की खेती...

भारत में बैंगन की खेती अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों के अलावा लगभग सभी जगहों पर की जाती है. यह एक सब्जी फसल है, जिसका उत्पादन चीन के बाद सबसे ज्यादा भारत में किया जाता है. बैंगन के पौधे दो से ढाई फ़ीट लम्बे पाए जाते है, इसके पौधों में ढेर सारी शाखाएँ निकलती है, और इन्हीं शाखाओं में इसके फलो की उपज होती है. बैंगन के फल लम्बे, गोल, और अंडाकार आकार में होते है. बैंगन में कई तरह के पोषक तत्व भी मौजूद होते है, तथा इसकी पत्तियों में भी विटामिन 'सी' की मात्रा अधिक पाई जाती है.

बैंगन की खेती के लिए किसी खास तरह की भूमि की आवश्यकता नहीं होती है, इसे किसी भी उपजाऊ भूमि में उगाया जा सकता है. किन्तु भूमि उचित जल निकासी वाली अवश्य हो. इसकी फसल के लिए भूमि का P.H. मान ५ से ७ के मध्य होना चाहिए. इसके पौधों को अच्छे से विकास करने के लिए गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है.

सर्दियो के मौसम में गिरने वाला पाला इसके पौधों को हानि पहुँचाता है, तथा इन्हे अधिक वर्षा की भी जरूरत नहीं होती है. बैंगन के पौधों २५ से ३० डिग्री के तापमान पर अच्छे से विकास करते है, तथा यह अधिकतम ३५ डिग्री और न्यूनतम १३ डिग्री तापमान को ही सहन कर सकते है.

बैंगन के पौधों की रोपाई बीज के रूप में न करके पौध के रूप में की जाती है. इसके लिए पौधों को किसी सरकारी रजिस्टर्ड नर्सरी से खरीद लेना चाहिए. पौधों ऐसे खरीदे जो बिल्कुल स्वस्थ हो. इन पौधों की रोपाई को समतल और मेड दोनों पर ही कर सकते है. समतल भूमि में पौधों की रोपाई के लिए खेत में ३ मीटर की क्यारियों को तैयार कर लिया जाता है. इन क्यारियों में प्रत्येक पौधों के बीच में २ फ़ीट की दूरी रखी जाती है.

यदि पौधों की रोपाई मेड़ पर करनी हो तो उसके लिए दो से ढाई फ़ीट की दूरी रखते हुए मेड़ को तैयार कर लिया जाता है. इसके बाद पौध रोपाई में प्रत्येक पौध के मध्य दो फ़ीट तक दूरी अवश्य रखे. इन पौधों की जड़ो को ५ से ६ ण्श की गहराई में ही लगाए, इससे पौधे अच्छे से विकास करते है. पौधों को लगाने के लिए शाम का समय अधिक उचित माना जाता है.

किस्मों के आधार पर बैंगन के पौधे रोपाई के तक़रीबन ५० से ७० दिन बाद पैदावार देना आरम्भ कर देते है. जब इसके पौधों में लगने वाले

फलो का रंग आकर्षक दिखाई देने लगे तब उनकी तुड़ाई कर लेनी चाहिये. फलो की तुड़ाई शाम के समय करना उपयुक्त माना जाता है.

बैंगन की उन्नत किस्मों के आधार पर २०० से ६०० क्विंटल की पैदावार प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्राप्त हो जाती है. बैंगन का बाज़ारी भाव १० रूपए प्रति किलो होता है, जिससे किसान भाई बैंगन की एक बार की फसल से २ लाख तक की कमाई कर सकते है.

बैंगन के ज्यादातर व्यावसायिक किसान फसल को आंतरिक सुरक्षित परिवेश में बीजों (हाइब्रिड) से शुरू करते हैं। पौधे उगने का इंतज़ार करते हुए और उनकी रोपाई की तैयारी करते हुए (सामान्य तौर पर ४-६ हफ्ते), वो खेत तैयार करते हैं। वे खेत की जुताई करके क्यारियां बना देते हैं और पंक्तियों में काली प्लास्टिक की फिल्म बिछा देते हैं। काला प्लास्टिक न केवल मिट्टी की गर्म रहने में सहायता करता है, बल्कि जंगली घास भी नियंत्रित करता है। वो ड्रिप सिंचाई प्रणाली डिज़ाइन करके, उसे भी लगा देते हैं। रोपाई के लिए तैयार होने पर, वो प्लास्टिक की फिल्म में छोटे-छोटे छेद कर देते हैं, जहाँ वो छोटे गड्ढे बनाकर पौधों की रोपाई करते हैं। ज्यादातर मामलों में उर्वरीकरण, ड्रिप सिंचाई और जंगली घास के प्रबंधन का प्रयोग किया जाता है। जब पौधा ४० सेमी (१६ इंच) का हो जाता है तो ज्यादातर किसान पौधों को सहारा देने के लिए, वायु संचार बेहतर बनाने के लिए

बैंगन का अगर ज्यादा उत्पादन चाहिए, तो दो पौधों के बीच की दूरी का खास ध्यान रखा होता है। दो पौधों और दो कतार के बीच की दूरी ६० सेंटीमीटर होनी ही चाहिए। खाद और उर्वरक खाद व उर्वरक की मात्रा मिट्टी की जांच के हिसाब से ही करनी चाहिए। जहां मिट्टी की जांच न की हो खेत तैयार करते समय २५-३० टन गोबर की सड़ी खाद मिट्टी में अच्छी तरह मिला देनी चाहिए। इसके साथ-साथ २०० किलो ग्राम यूरिया, ३७० किलो ग्राम सुपर फ़ॉस्फ़ेट और १०० किलो ग्राम पोटेशियम सल्फ़ेट का इस्तेमाल करना चाहिए। यूरिया की एक तिहाई मात्रा और सुपरफ़ॉस्फ़ेट तथा पौटेशियम सल्फ़ेट की पूरी मात्रा खेत में आखिरी बार तैयारी करते समय इस्तेमाल की जानी चाहिए। बची यूरिया की मात्रा को दो बराबर खुराकों में देना चाहिए। पहली खुराक पौधे की रोपाई के तीन सप्ताह बाद दी जाती है जबकि दूसरी मात्रा पहली मात्रा देने के चार सप्ताह बाद दी जानी चाहिए। रोपाई के दो सप्ताह बाद मोनोक्रोटोफास ०.०४ प्रतिशत घोल, १५ मि०ली० प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें। पौध संरक्षण प्ररोह बेधक से प्रभावित फलों और प्ररोहों को जहां से तना मुरझाया हो उसके आधे इंच नीचे से काट दें और उन्हें ज़मीन में गाड़ दें। खेतों को बेधकों से मुक्त रखने के लिए यह काम प्रति दिन करते रहे। मोनोक्रोटोफोस के छिड़काव के ३ सप्ताह बाद डेसिस ०.००५ प्रतिशत घोल या १ मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें। डेसिस के छिड़काव के ३ सप्ताह बाद ब्लिटाकस प्रति कैप्टान-२ ग्राम प्रति लीटर पानी और मिथाइल पेराथियोन -२ मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करे। अगर जैसिड की समस्या हो तो मिथाइल पेराथियोन का छिड़काव फिर से करें ल किन मिथाइल पेराथियोन छिड़कने से पहले फलों को तोड़ लें। प्ररोह बेधक से प्रभावित फलों और प्ररोहों को जहां से तना मुरझाया हो उसके आधे इंच नीचे से काट दें और उन्हें जमीन में गाड़ दें। खेतों को बेधकों से मुक्त रखने के लिए यह काम प्रतिदिन करते रहें। मोनोक्रोटोफोस के छिड़काव के तीन सप्ताह बाद डेसिस ०.००५ प्रतिशत घोल या १ मिली प्रति लीटर पानी का छिडकाव करें। डेसिस के छिड़काव के तीन सप्ताह बाद ब्लिटाकस प्रति कैप्टान - २ ग्राम प्रति लीटर पानी और मिथाइल परथिओन-२ मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करे। यदि जैसिड की समस्या हो तो मिथाइल पेराथियोन का छिड़काव फिर से करें लेकिन मिथाइल पेराथियोन छिड़कने से पहले फलों को तोड लें।

और कुछ हफ्ते बाद फसल की कटाई में सुविधा के लिए पौधों में डंडिया लगा देते हैं। पौधों को पतला करने की प्रक्रिया भी प्रयोग की जाती है। व्यावसायिक बैंगन उत्पादक खराब या अविकसित फलों को हटा देते हैं ताकि पौधे अपने संसाधनों को बड़े और ज्यादा स्वादिष्ट फल उगाने के लिए प्रयोग कर सकें। बैंगन की अधिकांश व्यावसायिक किस्मों को रोपाई के ६०-१०० दिनों के बाद काटा जा सकता है। रोपाई से लेकर कटाई तक का समय पौधे की किस्म, जल वायु की स्थितियों और लगाए गए पौधों की आयु पर निर्भर करता है। कटाई केवल कैंची या चाकू के माध्यम से की जा सकती है और आमतौर पर एक से ज्यादा सत्रों में की जाती है। कटाई के बाद, बैंगन उगाने वाले किसान खेत में हल चलाकर, फसल के अवशेष को नष्ट कर देते हैं। बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए या मिट्टी को क्षय से बचाने के लिए, वो फसल चक्र (पत्तागोभी, मक्का, दाल आदि) का प्रयोग भी कर सकते हैं।

बैंगन का परागण

बैंगन स्व-परागण वाला पौधा है। लेकिन, ऐसा बताया गया है कि मधुमक्खियां परागण को बेहतर बना सकती हैं, और इससे फल लगने और प्रति हेक्टेयर कुछ उपज में भी सुधार होता है।

बैंगन की खाद

कोई भी खाद डालने की विधि प्रयोग करने से पहले, सबसे पहले, आपको अपने खेत की मिट्टी के अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षण से प्राप्त डेटा के आधार पर मिट्टी की स्थिति को ध्यान में रखना चाहिए। कोई भी दो खेत समान नहीं होते, और न ही कोई आपकी मिट्टी के परीक्षण डेटा, ऊतक विश्लेषण और आपके खेत के फसल इतिहास को ध्यान में रखे बिना उर्वरीकरण विधियों की सलाह दे सकता है। हालाँकि, हम काफी सारे किसानों द्वारा प्रयोग की जाने वाली, सामान्य उर्वरीकरण योजनाओं को यहाँ सूचीबद्ध करेंगे।

सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली उर्वरीकरण विधि है 'फर्टिगेशन'। किसान ड्रिप सिंचाई प्रणाली में पानी में घुलनशील उर्वरकों को मिला देते हैं। इस तरह, वो धीरे-धीरे पोषक तत्व प्रदान कर सकते हैं और पौधों को उन्हें अवशोषित करने का उचित समय देते हैं।

आजकल किसान २ से ३ महीने की संपूर्ण बैंगन उगाने की अवधि के दौरान रोपाई से फसल काटने तक ० से १० बार खाद डालते हैं। कई किसान रोपाई से दो महीने पहले पंक्तियों में सड़ी हुई गोबर की खाद जैसे पूर्व-रोपाई खाद डालते हैं। वे रोपाई से लगभग एक हफ्ते पहले फॉस्फोरस की ज्यादा मात्रा वाला पूर्व-रोपाई उर्वरक भी डालते हैं और रोपाई के १० दिन बाद फर्टिगेशन शुरू करते हैं। उस समय, वे सूक्ष्म तत्वों से भरपूर, नाइट्रोजन-फॉस्फोरस-पोटैशियम १३-४०-१३ उर्वरक डालते है। शुरूआती चरणों में फॉस्फोरस का उच्च स्तर पौधों की मजबूत जड़ प्रणाली विकसित करने में मदद करेगा। इसके अतिरिक्त, कई मामलों में सूक्ष्म पोषक तत्व पौधों के लिए प्रत्यारोपण के कारण उत्पन्न होने वाली किसी भी नुकसानदायक स्थिति का सामना करना आसान बनाते हैं। ३ दिन बाद, वो दोबारा १३-४०-१३ डालते हैं।

बैंगन की बीमारियां

वर्टिसिलियम डहेलिया एक गंभीर फफूंदी रोगाणु है जो बैंगन पर हमला करता है, और उसकी वजह से पौधा मर जाता है। पत्तियों का धीरे-धीरे सूखना, और इसके बाद भूरा होना इसका पहला लक्षण है। संक्रमित पौधों में स्वस्थ पौधों की तुलना में धीमा विकास हो सकता है। बीमारी पर नियंत्रण उचित निवारक उपायों से शुरू होता है। इसमें शामिल हैंः अच्छे वायु संचार के लि ए उचित छंटाई सहित, जंगली घास पर नियंत्रण और पौधों के बीच उचित दूरियां। पौधों के लिए उचित स्थिति (पोषक तत्व, पानी का स्तर, और धूप) भी उनकी प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ा सकती है। समस्या ज्यादा गंभीर होने पर, हमेशा किसी लाइसेंस प्राप्त कृषि विज्ञानी की देखरेख में अक्सर रासायनिक उपचार प्रयोग किया जाता है।

फाइटोफ्थोरा (फाइटोफ्थोरा इन्फेस्टांस) एक गंभीर फफूंदी रोगाणु है जो बैंगन पर हमला करता है। विशेष रूप से ठंडी रातों के बाद गर्म दिन होने पर, उच्च आर्द्रता वाले दिनों के दौरान, मुख्य रूप से पत्तियों पर इसके लक्षण दिखाई देते हैं। जब हमारा पौधा फाइटोफ्थोरा से संक्रमित होता है तो हमें सफेद, पीले या ग्रे धब्बे दिखाई दे सकते हैं जो समय के साथ भूरे रंग के हो जाते हैं।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल एवं वॉटसअप *(whatsup)* द्वारा भेज सकते हैं।
स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: (W) 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

॥ अक्षय तृतीया ॥